श्रीगणेशायनमः

श्रीराधाकृष्णरासलीला

परमानन्दसंग्रहीत

प्रथमखण्ड पूर्वार्द्धभाग

जिसमें

श्रीमत्परब्रह्मपरमेश्वर जनमनानन्दकन्द श्रीकृष्ण चन्द्र व श्रीजगज्जननि श्रीवृषभानुनन्दनीका बिमल रासविलास श्रीसूरदास, कृष्णदास, नन्ददास, छीतस्वामी हितहरिवंश, जयदेवस्वामी, परमानन्द, नारायणस्वामी इत्यादि महात्माओंके बनायेहुये पदोंमें जैसा कि वर्त्तमानकाल में रासधारीलोग करते हैं उसीप्रकार वर्णित है ॥

जिसको

श्रीवल्लभकुलसेवक वैश्यकुलोत्पन्न बङ्गालीलाल सुहानेके पुत्र परमानन्द सुहानेने अपने सबमित्रों की आज्ञानुसार, सर्वभगवद्भक्तजनों के कीर्त्तन निमित्त अतिपरिश्रमसे संग्रहकी ॥

वाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से
प्रथमबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
जनवरी सन् १८९३ ई० ॥

भूमिका ॥

पहिले इसेपढ़के हृदय आनंद कीजिये ॥

बिदितहो कि इसपुस्तकके रचनेका यह कारणहै कि एक समय मैं अपने सब मित्रोंके साथ रहसलीला देखनेगयाथा, तहां अति मनोहर आनंददायक पदोंको सुनकर मुझे अतिही हर्षप्राप्तहुआ वा मनमें यहीआया कि जिसतरह बने ये सब लीला वा पदोंको प्राप्तकरना चाहिये, यह बिचार मेरे हृदय में दृढ़ होगया तभीसे निज मित्रोंके साथजाके रासलीलाके होतेहीमें पद लिखे क्योंकि उससमय कोई पुस्तक इसविषयकी नहीं छपीथी और जो छपीं भी थीं वे बड़ी मुश्किलमें मिलतीथीं इसके परचात् मैंनेरासधारी लोगोंसे मित्रता की वा उनलोगोंको कुछ द्रव्यदेकर उनके पासकी हस्तलिखित पुस्तकैंलीं वा उनमेंसे उत्तम उत्तम पद वा लीला लिखी तब एकदिन मैंने निज मित्रोंको ये सब लीला वा पद दिखाये, वे देखकर बहुतही आनन्दितहुये वा मुझसे कहनेलगे कि अब इनसब लीलाओंको तुमछपवादो जिसमें सबमित्रोंके देखने का सुभीताहोजावै क्योंकि आजतक ऐसी पुस्तक कोईनहीं छपीहै कि जिसमें समस्त लीला पूरी पूरी होवैं और जो दो चार छपी भीहैं उनमें इतनेपद नहीं हैं वा ना वार्तिक्र वार्ता है । हे प्रियपाठकगणो मैंने अपने मित्रों की इसआज्ञा को मानकर यह संग्रह तय्यारकीहै जिसको भी दोखंडमें विभाग कियाहै यह प्रथमखंड पूर्वार्द्धभागहै और इसमें १७ लीलाहैं वा दूसराखंड उत्तरार्द्धभाग जिसमें इससे ज्यादहलीला वा फुटकरपदहैं वहभी जल्द छपजायगा, हे प्रिय पाठकगणो आप इस मेरी संग्रहको आनन्दमनसे अवलोकनकीजिये क्योंकि इस असार संसारमें बिना श्रीकृष्णचंद्र आनन्दकन्दके शरणागतभये जीवको मोक्षकी प्राप्ती नहींहै क्योंकि सर्व वेद शास्त्र वा पुराणोंसे प्रकटहोताहै कि इस कलियुगमें मनुष्य केवल ईश्वरके नाम स्मरणहीसे मोक्षको प्राप्तहोगा अन्य कोई दूसरा उपाय नहींहै , इसीसे मैंभी श्रीकृष्णचंद्रके शरणागत होगयाहूं वा आपलोगोंसे भी कहताहूं कि शीघ्र शरणागत हूजिये ऐसा समय फिर नहीं मिलैगा क्योंकि यह घोर कलिकाल शिरपै बिराजमानहै । मैं उनमित्रों से प्रार्थना करताहूं कि जिन्होंने इसपुस्तकमें सहायतादीहै वा छपवानेको कहा है उनके नाम दूसरे खंडमें मैं प्रकाशित करूंगा ॥ सब सज्जनोंसे प्रार्थना है कि जो इसमें कहीं अशुद्धहोवे उसे क्षमाकरना क्योंकि मैं अल्प बुद्धिवालाहूं ॥

(आपका शुभचिन्तक श्रीवल्लभकुलसेवक)
परमानन्दसुहाने, मिरजापुरनिवासी
वर्तमानकालमेंदीसेन्ट्रलप्राविन्सेजमिल्सलिमिटेडकेसेक्रेटरी वा ऐजन्ट पंडित गदाधरशुकुलकेआश्रितराजनांदगांवज़िलारायपुरता०२५जुलाईसन् १८९२ई०

श्रीराधाकृष्णरासलीला, परमानन्द संग्रहीत प्रथम खण्ड पूर्वार्द्धभागके लीलाओंका सूचीपत्र ॥

इतिश्रीराधाकृष्णरासलीला, परमानन्दसंग्रहीत, प्रथमखण्डपूर्वार्द्धभागके लीलाओंकासूचीपत्रसम्पूर्ण ॥

इश्तिहार ॥

बिदितहो कि यहपुस्तक आपलोगोंके अवलोकनार्थ संग्रहकी गईहै वा इसका कुल हक़ मैंने इस पुस्तकके प्रकाशकको दिया है इससे मेरी आज्ञाके बिना कोई छापनेका अधिकारी नहीं है वा इंसपुस्तकमें कहीं कहीं एक पद दो लीलाओंमें शामिलहोगये हैं सो यह कसूर मेरा माफ करना क्योंकि मैं अल्पबुद्धिहूं मैंने तो जैसी लीला वा पद रहसधारियोंसे सुने हैं उसी माफिक लिखेहैं वा और पद इन लीलोंके जो मुझे प्राप्त होवेंगे वे दूसरे खंडमें मैं शामिल कर दूंगा, वह खंडभी इसी छापेखानेमें छपैगा वा मैंने औरभी कई पुस्तकें मुंबई, बनारस, मथुरा, जबलपुर, लखनऊ इत्यादि जगहोंमें छपाईहैं उनकेनाम नीचे लिखे हुये हैं जिन महाशयोंको देखनेकी इच्छाहो नीचे लिखे पतेपै पत्र भेजें उनके पास बेल्यूपेबल करके भेजदीजावैगी वा क़ीमत ठीक ठीक लीज़ावैगी ॥

पुस्तकोंके नाम ॥

राजादुष्यन्त वा शकुन्तला चरित्र भाषा । पतिब्रता माहात्म्य वा कौशिक ब्राह्मक धर्मव्याध सम्बाद भाषा । श्रीराधाकृष्ण हिंडोला, प्रभातीभक्तरत्नाकर । होलिकादहन फागोत्सव । पावस कवित्त रत्नाकर । किस्सा नलदमयन्ती । चन्द्रहासचरित्र चिन्तामणि । उद्धवनिर्गुण ज्ञानखंडन । परमानन्द संग्रहीत कवित्त हजारा । परमानन्दकृत सर्बसार संग्रह प्रथम भाग । इत्यादि वा कई ग्रंथ अभी औरभी तय्यार होरहे हैं ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना ॥

परमानन्द सुहाने

दीसेन्ट्रलप्राविन्सेजमिल्सलिमिटेडबलदेवबागके पासपुतलीघर

राज नांदगांव ज़िला रायपुर

छत्तीस गढ़ सी. पी



श्रीराधाकृष्णरासलीला ॥

परमानन्दसंग्रहीत ॥

प्रथमखंड पूर्बार्द्धभाग ॥

बन्दना-छप्पै ॥

एक रदन करि बदन सदन सुखके दुख नाशक । ईश तनय गण ईश शीश रजनीश प्रकाशक ॥ ऋद्धि सिद्धि बुधिदेत देत हरि कुमति न जागत । जो सुमिरै मनलाय विघ्न ताजनके भागत ॥ जय जय गणेश गिरिजासुवन भुवन विदित यश अघहरण । परमानन्द बन्दन करत बार बार गणपति चरण १ बिघन हरण सुख करण दरण दुख छरण ताप अरि । बन्दौं श्रीगणनाथ जोरि युग हाथ माथ धरि ॥ बन्दौं सरस्वति सुमति देनि कुल कुमति बिनाशनि । जगतजननि जन कृपाकरणि परब्रह्म प्रकाशनि ॥ अब बन्दों बारम्बार मैं पदपंकज शुकदेवके । जेहि मुख निर्तत हरि चरित सब दुख काट्यो नरदेवके २ ॥ दोहा ॥ दुखित जगतके जननलखि प्रकट्यो करन उधार । श्रीमुकुन्द हरि गुरु चरण बन्दौं बारहिबार ३ जोजगप्रगटपुराण बहु रच्यो करणजन पूत । व्यासरूप हरिको सदा बंदनकरौं अकूत ४ सुमिरि कृष्णकें जलजपद विधि बन्दौं कर जोरि । दरिघपक्ष तुम्हारप्रभु अल्प

बुद्धि अति मोरि ५ ॥ सोरठा ॥ हरणहेत भुवभार प्रगटे हरि वसुदेवगृह । कीन्हों चरित अपार गाय गाय जेहि जन तरत ६ ॥ अथप्रथमनृत्यकृतगानलिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री गुरुचरण सुमिरण करूं जिनसे पायो ज्ञान । प्रिय पीतमकी भक्तिमें निशि दिन रह मम ध्यान १ ॥ समाजीवचन ॥ श्लोक ॥ मेघैर्मेदुरमम्बरं बनभुव श्श्यामास्तमालद्रुमै र्नक्तम्भीरुरयन्त्वमेवतदिमंराधेगृहंप्रापय ॥ इत्थन्नन्दनिदेशतश्चलितयोःप्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्जय न्तियमुनाकूलेरहःकेलयः २ ॥ दोहा ॥ गोपीगोपीजगतमें जिन की उलटीरीति । तिनकेपद बन्दनकरूं जिनकरी कृष्णसों प्रीति ३ नंदगांवनँदनन्दभे बरसाने वृषभान । दोनों कुल दीपकभये गावत वेंद पुरान ४ ब्रजसमुद्र मथुरा कमल वृन्दाबन मकरन्द । ब्रज बनिता सबपुष्पहैं मधुकर गोकुलचन्द ५ क्रीटमुकुट कटि काछनी पीताम्बर बनमाल । यह मूरति मेरे मनबसी सदाबिहारीलाल ६ बंशीबट यमुना तटहि जहँ खिले कदम द्रुमफूल । भक्तन के प्रिय नाथ हरि प्रगटे जीवन मूल ७ नवरसमें कवियन कह्यो सरस अधिक श्रृंगार । ताहूमें अतिसरस पुनि सो यह रासबिहार ८ नव ही अंग श्रृंगारके होरी चोरी दान । छलहिकरन बन ऋतु गमन बिरहमिलन अरु मान ९ नागरिया नव नागरी खेलन रास बिलास । पलपल वारों हेसखी नित नवनागरि दास १० चन्द मिटै दिनकर मिटै मिटै त्रिगुण । विस्तार दृढ़व्रत श्री हरिबंशको मिटैन नित्त बिहार ११ काहूके बल भजनको काहूके आचार । व्यासभरोसे कुंवरके सोवत पांवपसार १२ मुरली मदनगुपाल की बाजत गहिर गँभीर । कृष्णदास बाजत सुनी कालिन्दीकेतीर १३ सुख मन रूप अनूपहै कह बरणे कविनन्द । अबवृन्दाबन वरणि हौं जहँ वृन्दावन चन्द १४ वृन्दाबन आनन्दघन कछुछबि बरणिन जाय । कृष्णललित लीलाके कारण धाररह्यो जड़ताय १५ ब्रज की रजको परशिके मिलत पदारथ चार । जाको ब्रजवाला बधू डारत नित्त बुहार १६ श्रीनारायण अति सुभट जिनको ब्रजसों

हेत। ठौर ठौर लीला रची निकट जान संकेत १७॥ गोपालाष्टक॥ विहरति स्वच्छंदं आनंदकंदं श्रीब्रजचंदं ब्रह्मपरं। पूरण शशि बदनं शोभासदनं जितछबिमदनं रूपवरं॥हलधर बलबीरं श्याम शरीरं गुणगंभीरं धीरधरं। भजश्रीगोपालंदीनदयालं बचनरसालं तापहरं १ राजत बनमाला रूपविशाला बालमराला सुरतहरं। कुंडलवृतकरणं गिरिवरधरणं निजजन शरणंकृपाकरं॥ गोपनकृत संगं ललित त्रिभंगं लजित अनंगं निरखपरं। भज श्रीगोपालं दीनदयालं बचनरसालं तापहरं २ जलधरवर श्यामं पूरणकामं अतिसुख धामं दुःखहरं। वृन्दाबनक्रीड़ित असुरन पीड़ित ब्रज तिय व्रीड़ित रसिकबरं॥ नूपुर ध्वनि चरणं मुनि मन हरणं तारण तरणं तुष्टतरं। भज श्रीगोपालं दीनदयालं बचनरसालं तापहरं ३ राधा उरहारं रूप अपारं नीर बिहारं चीरहरं। कुंचितवर केशं मुकुट बिशेषं गोपसुवेषं निगमबरं॥ कोमल अति चरणं वेद विवरणं जगदुखहरणं मृदुलतरं। भज श्रीगोपालं दीनदयालं वचनरसालं तापहरं ४ अलकनमुख राजत मन्मथ लाजत किंकिनि बाजत मधुरवरं। बंशीकृत नादं हरतिविषादं युगवरपादं तिमिरहरं॥ भक्तनआधीनं चरितनवीनं परमप्रवीनं प्रेमपरं। भज श्रीगोपालं दीनदयालं बचनरसालं तापहरं ५ अति नृत्य प्रवीरेधीरसमीरे यमुनातीरे रासकरं। कलगानअनूपं श्याम स्वरूपं त्रिभुंवनभूपं मोदभरं॥ राधागुणगायक ब्रज सुखदायक सुरवर नायक बेणुधरं। भज श्रीगोपालं दीनदयालं बचनरसालं तापहरं ६ सुन्दर मृदुहासं विपिन बिलासं कुंजनिवासं केलि करं। युवती दृगअंजन जन मनरंजन केशीभंजन भारहरं॥ भूषण निज भवनं गजगति गमनं कालिय दमनं नृत्यकरं। भज श्रीगोपालंदीनदयालं वचनरसालं तापहरं ७ गोरजमुखशोभित सुरनरलोभित मन्मथक्षोभितदृश्यपरं। गोपनसहभुंजेविपिनानिकुंजे बरसनपुंजेद्रुहिणहरं॥ यहछवि तारायणलखि नारायणभयेपरायण अखिलतरं। भजश्रीगोपालंदीनदयालं बचन

रसालंतापहरं ८।१८॥ छप्पै॥ आचारजललितासखीरसिकहमा-
रीछाप।नित्यकिशोरिउपासना युगलमंत्रकोजाप॥ युगलमंत्रको
जाप वेदरसिकनकीबानी। श्रीवृंदाबनधामइष्टश्यामामहरानी॥
प्रेम देवतामिलेबिनां सिधिहोतनकारज़। भगवतसबसुखदेन प्र-
गटभयेरसकाचारज १९॥ पद॥ सुमिरोनटनागरवर सुन्दरगो-
पाललाल। सबहीदुखमिटिजैहै चिंतनलोचनबिशाल॥ अलक
नकीझलकनलखि पलकनगतिभूलिजात भ्रूबिलासमन्दहास
रदनछदनअतिरसाल। निंदितरविकुंडलछबि गंडमुकुरझलमला-
त पिच्छगुच्छकृतवतंस इंदुबिमलविन्दुभाल॥ अंगअंगजित
अनंग माधुरतिरंगरंग बिमदमदगयंदहोत देखतलटकीलीचाल।
रतन रसनपतिवसन चारुहारवरश्रृंगार तुलसिकुसुमखचितपीन
उरनवीनवीनमाल॥ ब्रजनरेशबंशदीप वृन्दाबनबदमहीप श्रीवृ-
षभानमान्यपात्र सहजदीनजनदयाल। रसिकरूपरूपराशि गुण
निधानजानराय गदाधरप्रभुयुततीजन मुनिमानसमनमराल॥
२०॥ छप्पै॥ सांचेश्रीराधारमण झूठोसबसंसार। बाजीगरको
पेखनो मिटतनलागैबार॥मिटतनलागैबार भूतकीसम्पतिजैसे।
मेहरीनातीपूत धुआंकेबादरतैसे॥ भगवततेनरअधम लोभबिच
घरघरनाचे। झूंठगढ़तसुनार मैनकेबोलतसांचे २१॥ कुंडलिया॥
हरियाहरिसोंहेतकर निशिदिनआठौयाम। भवसागरकेभभरमें
यहैएकबिश्राम॥ यहैएकविश्राम कामजबयमसोंपरिहै। मात
पितासुतबंधु पीरकोऊनहिंहरिहै॥हरिबल्लभयहकहत देखुराह-
टकीघरिया। निशिदिनआठौयाम हेतुहरिसोंकरुहरिया २२॥
छप्पै॥ जहांरसस्वादीमिलै तहांसनमाननहोई। जहांहोयसनमा-
न तहांमनमिलैनकोई॥ मनमिलापजहँहोय तहांइष्टतानशावै।
जहांइष्टताहोय तहांदाग्द्रिसतावै॥ जेतेहरिकेधामहैं कामक्रोध
क्रीडाकरै।भगवतयहिकलिकालमें कहोरसिकक्योंनिस्तरै २३॥
पद॥ राधानामअधारपरमधन राधानामअधार। जाहिपियामुर-
लीमेंटेरत सुमिरतबारम्बार॥ यंत्रमंत्रअरुवेदतंत्रमें किनहुन

पायोपार। श्रीमुख प्रगटकियोनायासों जानि सारकोसार २४॥
छप्पै॥ दुखियाद्विज विद्याबिना राजा दलबिनसोय। रूपबिनाग-
णिकादुखी योगीयोगनहोय॥ योगीयोगनहोय साधुहरिभजनन
जानै। भाट कलावत भांड़सभानटलज्जामानै॥ भगवतरसिक
अनन्यबिना नाहींकोइसुखिया। धनसम्पति परिवारपुत्रबिनसब
जग दुखिया २५॥ कवित्त॥ वृंदाबनधामनीको ब्रजकोबिश्राम
नीको श्यामाश्याम नामनीको मन्दिरअनन्दको। कालीदहन्हान
नीको यमुनापयपाननीको रेणुकाकोखाननीको स्वादनीकोक-
न्दको॥ राधाकृष्ण नामनीको संतनको संगनीको गौरश्यामरंग
नीको अंगयुगचंगको। नीलपीतपटनीको बंशीवटतटनीको ल-
लितकिशोरीनीको नटनीकोनंदको २६॥ पद॥ गोपीप्रेमकीधु-
जा। जिनगोपाल कियेबशअपने करधरश्यामभुजा॥ शुकमुनि
ब्यास प्रशंसाकीन्ही ऊधोसंतसराहीं। भूरिभागगोकुलकी बनि-
ता अतिपुनीतजगमाहीं॥ कहाभयोजो विप्रकुलजन्म्यो जोहरि
सेवानाहीं। सोइपुनीतदास परमानन्द जोहरिसन्मुखजाहीं २७॥
कवित्त॥ लाजकोजहाजडूबो शीलकोसमुद्रसूख्यो दयाकेख-
जानेकी तारीकोई लेगयो। संतहूकी कोठीलूटी धर्महूकीध्वजा
टूटी पाप घरघरअरु घटघटमें छायगयो॥ संतनको कहादोषहोत
कोऊदेतनाहिं नाहींकोनकीत्रसब घरघरबिचकहगयो। संतकहें
चेततू अचेतनरलाजपुनि दयाधर्म कर्मबीच अंशकहूंरहगयो
२८॥छप्पै॥ चतुराननसम बुद्धिविदित जोहोहिंकोटिधर। एकए
कधरपतिन शीशजोहोहिंकोटिवर॥ शीशशीशप्रतिवदन कोटिक-
रतारबनावहि। एकएकमुखमाहँ रसनफिरिकोटिलगावहि॥
रसनरसनप्रतिशारदा कोटिबैठिबानीबकहि। नहिंजन अनाथके
नाथकी महिमातबहुंन कहिसकहि २९॥ कवित्त॥ गायोना
गोपालमनलायकेनिवारिलाज पायोनप्रसादसाधुमंडलीनिजा-
यके। धायोनधमकि वृंदाविपिनके कुंजनमें रह्योंनशरणजाइ बि-
ट्ठलेशरायके। नाथजूनदेखिछक्यों छिनहूंछबीलीछबि सिंहपौरि

परयोनाहिं शशिहूनवायके । कहैहरिदास सोहिंलाजहूंनआवै जिय जनमगँवायो नकमायोकछुआयके ३० ॥ वार्त्ता ॥ इतना कीर्त्तन जब रहसकेसमाजीलोग करलेते हैं तबफिर आरतीकी-जातीहै वा सबखडेहोकरगातेहैं ३१ ॥.

श्रीयुगलआरती ॥

दोहा ॥ पागबनो पटकाबनो बनोलालकोभेख ॥ श्रीराधाबल्लभ लालकी चलहुआरतीदेख ३२ ॥ रागमल्हार ॥ आरति युगलकरत ब्रजनारी । श्री नंदनंदन वृषभानदुलारी ॥ टेक ॥ उतमेघबरण सांवरी मूरति इतचन्द्रबदन शारद उजियारी । उतभक्तनको अमृत बरसावत इतपालन हित शरदकुहारी १ उतमोरमुकुट चीरा रँगबांधे इतशशिफूल चूनरिरंगकारी । उततिलकभाल मधुआकि रेख इत माँगकाढ़िसेंदूर सँवारी २ उतभृकुटि कुटिल धनुलसत रेख इतभोरीहोमन हरतमुरारी । उत कमलनयन अतिचपल डोल इतमृगनयनीकी चितवनिन्यारी ३ उतगोलकपोल मनोहर अतिइतचपलासी दामिनिदमकारी । उतहिबुलाकनाक बिचसोहत इतनकबेसर लटकनप्यारी ४ उतमुरली मुखअधर बिराजै इतमुसक्यान हँसनिकिलकारी । उतगलमाल बनमाल सुहावै इतचम्पा दुलरी गलहारी ५ उतनटवर पीताम्बर शोभा इतलहँगामें जरदकिनारी । उतनारायण युगल छबिनिरखत इत श्यामहरषिदेतहै तारी ६ । ३३ ॥ दोहा ॥ सुखमनरूप अनूपहो कहवरणोंकविनंद । अबवृंदाबनबरणिहों जहँवृंदाबनचंद ३४ वृंदाबन आनन्दघन कछु छबिबरणिनजाय । कृष्णललितलीला के कारण धाररह्योजड़ताय ३५ ॥ सोरठा ॥ श्रीब्रजराजकुंवरबर गाइयेभक्तनकोमन भावतो गाइये । आनंदके कन्द निधिवरगाइये श्रीलाड़िलीललनवरगाइये ३६ ॥ दोहा ॥ नौरसमें कबियन कह्यो सरस अधिक शृंगार । ताहूमें पुनि अति सरससो यहरास बिहार ३७ नौही अंगशृंगारके होरी चोरीदान । छलहिकरन

वनऋतुगवन बिरह्ममिलन अरुमान ३८ नागरियानवनागरी खेलनरासविलास। पल पल वारों हेसखी नितनवनागरिदास ३९॥ वार्तिक ॥ जबरहस मंडलीके समाजी लोग इतना फिर कीर्त्तनकर चुकतेहैं तिस्से बाद रासगान प्रारम्भ करते हैं अर्थात् श्रीठाकुरजी व श्रीराधिकाजी वा सबसखियां सिंहासनसे उठके नृत्यकरतेहैं ४०॥ श्रीरासगानप्रारम्भ॥ रासबिलास गहेकर पल्लव यकयक भुजग्रीवां मेली। द्वैद्वैगोपी बिच बिच माधो नृत्यत संगसहेली॥ताथेई ताथेई ताथेई ताथेई ४१॥ प्रथमश्रीठाकुरजी ॥ ततत्रांग धुमकिट त्रांग धुमकिट धुमाकिट त्रांग त्रांग तततातात्रांग मुनमुन मुन ततथेई ॥ ततथेई ततथेई ततथेई ४२॥ द्वितिया श्रीप्रियाजी॥ ततोत्रांग थूथूथो ततोत्रांग थूथूथो धितकत्रांग थूथू ततू थूधिकत थूधिकतकथूथू तकदधिगिनथेई॥ ततथेई ततथेई ततथेई ततथेई ४३॥तृतियाललितासखी॥ तकतक झुनझुन कुडझझकत्रांगनुकुंज। तकतक झुनझुन कुडकुडजझिकत्रांग निकुंज। गिडगिडतागिडि ताथूंगागिडतादधिगिन थेई॥ ततथेई ततथेई ततथेई ततथेई ४४॥चतुर्थ बिशाखासखी॥ तेजिक तेजित त्रीतेज तेदाता। तेजिक तेजिक त्रीतेज तेदाता॥ झिझक तकथेई झिझक तकथेई। तेझिक तेझिक त्रीतेततदाथेई॥ ततथेई ततथेई ततथेई तत थेई ४५॥ फिरश्रीठाकुरजी॥ तद्दीतद्दी धिकतकतद्दी त्रांगतो। त्रांगत्रांगदंधिगिनथेई झिझकझिझक॥ तकथेई झिझकतकथेई ताथाथेई। ताथेई झिझकतकथेई थूथूथेई थेई थेई॥ थेथेथेथे तेता त्रियता त्रितेजतीदाताथेई। ततथेई ततथेई ततथेई तत थेई ४६॥ श्रीठाकुरजी बचनपद॥ टूटपरी मोतिनकीमाला ढूंढ़त फिरत सकलग्वारी। मुकुलित कुसुम मालती बिकसत निरखि हँसे गिरिवरधारी॥ शरद बिमलनभचन्द्र बिराजत बिहरतनृत्यत नन्दकिशोर। परमानंदप्रभुबदन सुधानिधि भामिनि नयनचकोर ४७॥समाजीवचन दोहरा॥ भागवानवृषभान सुतासीको त्रियत्रिभुवनमाहीं। जाको पति पति त्रिभुवनपति दियेरहत गलबांहीं॥

ह्वै अधीन सँगही सँगडोलतजहां कुंवरि चलिजाहीं। रसिकलख्यो जो सुख वृंदावन सोत्रिभुवनमें नाहीं ४८॥ सवैया॥ शूकरह्वै कब रासरच्यो अरु बामनह्वै कबगोपनचाई। मीनह्वै कौनके चीरहरे कच्छपह्वै कब बीन बजाई॥ ह्वैके नृसिंह कहो हरजू कौनके छतियन रेखलगाई॥ वृषभानसुता प्रगटी जबते तबतेतुमकेलि कला निधिपाई ४९॥ दोहरा॥ छल्लेदार छबीली जुलफैं मुख ऊपर लटकारी हैं। रतनजड़ित चूड़ा हाथों में दामिनि दमक उजारीहैं॥जरीदार शिरपेंचपागपर तापरकलगीन्यारीहैं॥ ललित किशोरीलाल तुम्हारी लटकचालपै वारी हैं ५०॥ सवैया॥ सोनजुही कि बनी पगिया औ चमेलीके गुच्छा रह्यो भुकन्यारो। द्वो दल फूल कदम्बके कुंडल सेवती को झँगाघूमघुमारो॥ नव तुलसी पटुका घनश्याम गुलाब इजारन बेलिबनारो। देखसखी कैसो चित्र बनो आज कैसो श्रृंगारो है प्यारीने प्यारो ५१॥ रागजैजैवंती॥ आवरी बावरी ऊजरी पागपै मेलके बांध्यो है मंजन चोटा। चंचल लोचन चाल मनोहर अबहीं गहिआन्यो है खंजन जोटा॥देखत रूपठगौरीसी लागत ऐनमैन मानोकमलके मोटा॥ नंददासरसरास कोटिन वारौं आज बन्यो ब्रजराजकोढोटा ५२॥ श्रीठाकुरजीबचन॥ थेई हो थेई तिरतिाता मैंवारी तिरतिाता ताथेई या। नचत लाड़िली नचत लाड़िलीसुलभगतिलेई॥ ताथेई ततथेइ थेईथेइया ५३॥ प्रियाजीवासबसखीवचन॥ थेई हो थेई मैंवारी तिरी ताता मैंवारी तिरी ताता ताथेई॥ नाचत मदन गोपाल सोमेरी आली नाचत मदनगोपाल। ताथेई तत थेईथेई थेइया ५४॥ श्रीठाकुरजीवचन॥ टेक॥ थेई हो थेई तिरी ताता मैं वारीतिरीताता ताथेइया ५५॥ दोहा॥ श्रीराधेमेरी लाड़िलीमेरी ओर तू देख। मैं तोहिं राखौं नयनमें काजरकीसी रेख ५६॥ श्रीप्रियाजीबचन॥ मैं बेटीवृषभानकी राधा मेरो नाँव। तीनलोक में गाइये बरसानों नँदगांव ५७॥ ललितासखीवचन॥ आवो प्यारे मोहना पलक झांपि लेहिंलेउं। ना मैं देखौंऔरको नातोहिं

देखन देउं ५८ ॥ विशाखासखीवचन ॥ ऐरेकठिन अहीर के नेक पीर पहिंचान । तेरे दर्शन कारनै छांड़िदई कुलकान ५९ ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ राधे आधे नयनसों तिरछी चितवन चाय। जो निशानआगे चलै पाछेकोफहराय ६० ॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ करमुरली लकुटी गहे घूंघरवारे केश । हरि हमरे नैननबसैं श्याम मनोहर भेश ६१ ॥ ललितासखीवचन ॥ मोहनि मूरति श्यांम की मोमन रही समाय । ज्यों मेंहदीके पातमें लाली लखियन जाय ६२ ॥ विशाखासखीवचन ॥ हाथ जोरबिनतीकरौं सुनिय गरीब निवाज। आपनहीकर राखिये बांह गहेकी लाज ६३ ॥ श्रीठाकुर जीवचन ॥ लटसम्हार राधा नागरी काह भयो है तोहिं । तेरी लट नागिन भई सोलिपटत आवैं मोहिं ६४ ॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ तू धरनी धरनन्दके मैं बेटी वृषभान । तूतौ सुन्दर सांवरो मैं हूं चतुरसुजान ६५ ॥ ललितासखीबचन ॥ जलसुतके नीचे बसै मोती सुतके बीच । सो मांगतहै राधिका करो श्यामबक शीश ६६ ॥ विशाखासखीवचन ॥ मोर मुकुटकी लटकिपर अटकरहे हगमोर । कान्ह कुंवर सखि यमुनतट नटवर नंदकिशोर ६७ ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ गोरे मुखपै तिल बन्यो ताहि करूं परणाम । मानों चन्द्र बिछायकै पौढ़े शालिकराम ६८ ॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ मनमोहन मनमोहना मनमोहन मन माहिं । या मोहनते सोहना तीनलोकमें नाहिं ६९ ॥ ललितासखीबचन ॥ जिन मोरन के पंख हरि राखत अपने शीस । तिनके भागनकी सखी कौन करसकैरीस ७० ॥ विशाखासखीबचन ॥ मेरे प्यारे मोहना मेरे चितके चोर । तेरो मुख देखेबिना दीखत नहिं कोइ ठौर ७१ श्रीठाकुरजीवचन ॥ राधजूके बदनपै बेंदी अतिछबि देय । मानौ फूली केतकी भ्रमर बासना लेय ७२ ॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ चलौ सखी तहां जाइये जहां बसैं ब्रजराज । गोरस बेचन प्रेम रस एक पंथ द्वैकाज ७३ ॥ ललितासखीबचन ॥ राधाजू बड़ि भागिनी कौन तपस्या कीन । तीन लोक तारण तरण सो तेरे

आधीन ७४ ॥ विशाखासखीवचन ॥ शोभा युगुल किशोरकी को कवि कहै बखान। मन मोहन शशि पावना गोपिनको धनप्रान॥ ७५ ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ प्यारीजूके बदनपै बसत चली सों चोर। दश शारद दश हंसहैं दश चातक दश मोर ७६ ॥ श्री प्रियाजीवचन ॥ मेरे प्यारे मोहना मोमन गयो समाय। तेरे मुख देखें बिना मोहिं न कछू सुहाय ७७ ॥ ललितासखीबचन ॥ मोर मुकुट कटि काछनी पीताम्बर बन माल। यह मूरति मेरे मन बसी सदा बिहारीलाल ७८॥ विशाखासखीवचन॥ वृंदाबनके वृक्ष को मर्म न जाने कोय। डार पात फल फूल में राधे राधेहोय॥ ७९॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ ब्रजबासी बल्लभ सदा मेरे जीवनप्रान। इन्हें न नेक बिसारिहौं मोहिं नंदरायकी आन ८० ॥ श्री प्रियाजीबचन ॥ मेरे प्यारे मोहना बंशी नेक बजाय। तेरी बंशी मेरो मन हर्यो घर अंगना न सुहाय ८१ ॥ ललितासखीबचन ॥ बंशबिट यमुना तट जहां सघन घन छांह । प्यारी मुख बिहसत भई डारिगले पिय बांह ८२ ॥ विशाखासखीवचन ॥ वृन्दा बन बानिक बन्यो भ्रमर करत गुंजार। दुलहिन प्यारी राधिका दूलहि नंदकुमार ८३ ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ लट छूटी त्रियशीश ते रही कपोलन छाय। मानों छौना नागको पीपी अमी अघाय ८४ ॥ श्रीप्रियाजीबचन ॥ लटछूटी मेरे शीश सों कहापड़ो है तोय। मेरी लट नागिन भई लपटत आवत सोय ८५ ॥ ललितासखीबचन ॥ ब्रज चौरासी कोश में चार ग्राम निज धाम । वृन्दाबन अरु मधुपुरी बरसानो नँदग्राम ८६ ॥ विशाखासखीबचन ॥ येरे छलियानन्द के ये तेरे छल छन्द। मन गहिनी के राखियो भुजके बाजूबन्द ८७॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ ब्रज तज अन्त न जाइहौं मेरी है यह टेक। भूतल भार उतारिहौं धरिहौं भेष अनेक ८८ ॥ श्रीप्रियाजीबचन ॥ प्रीतम मेरे दृग बसौ ज्यों मेंहदी में रंग। जैसेछाया जीव की तजत न नेकौसंग ८९॥ ललितासखीबचन ॥ मान सरोवर प्रेमकी भरी रहै दिन रैन। जहँ

पिय प्यारी पग धरैं लाल धरत दोउ नैन ९० ॥ विशाखासखी बचन ॥ बृन्दावन से बन नहीं नन्दग्राम सों ग्राम। बंशी वट सों वट नहीं कृष्णनाम सों नाम ९१ ॥ वार्त्ता ॥ इतनारास गान होजानेके पीछे श्रीठाकुरजी वा श्री जी और सब सखी सिंहासन पै बिराजमानहोजाते हैं इस्से हमने भी इतनाही लिखा है लेकिन और कई ग्रंथोंमें मृदंगोंके स्वर वा बोल लिखेहुये हैं लेकिन वे पढ़ने में अच्छे नहीं मालूम पड़ते वे सुननेहीते अच्छे मालूम पडतेहैं यही समझके मैंने इहांउनको नहीं लिखे यह मेराकुसूर महाशय जन क्षमा करेंगे ९२ (नृत्य होजानेके बाद यह पद कहतेहैं) सखिनसंगनचत कृष्णगोपी ॥ टेक ॥ छुमछुम छुमछुम छननन तमूरा मँजीरा बीना झांझमुहचंगबाजै अबीरा उड़ावैं गावैं रागरंग मृदंगा ढुकतठुम ठननन। सारङ्गीसरस अरु खंजरी रबावबाजै मधुर मधुररविनंदिनीका नीरबाजै चलतपवन सुम सररररर भौंरा उड़त भुम भननन ॥ पनघट अंगनाकी सुरति बिसरगई आगे सब पक्षी पवन चकृतभये बाँसुरी बजाय ब्रजनारी सब मोहिलई घुंघुरू करत घुम घननन। राधा देती तारीताल मोंगरा चमेलीकी गुलाब सेवतीकीमाल कहत बसेली वालो लालदास कृष्णपद पायल बजत छुम छननन ॥ नचत कृष्ण गोपी सखिन संग नचत कृष्णगोपी ९३ ॥

इतिश्रीनृत्यकृतगानसम्पूर्णम् ॥

अथ श्रीबंशीलीला ॥

वार्त्तिक ॥ सबसे प्रथम रहसधारी लोग बंशीलीलाही करतेहैं इससे पहिले वही लीला लिखीहै जब श्रीठाकुरजी की झांकी बनाते हैं कि श्रीठाकुरजी एक चरणसे खड़ेहैं वा एक तरफ छड़ी एक हाथमें लियेहैं वा बाँसुरी बजारहे हैं वही बंशीको सुनके सब सखियां आपसमें कहतीहैं कि अरी बीर देख श्रीठाकुरजीकी कैसी मधुर बाँसुरी बाजरही है तब एक सखी कहती है कि अरी यंह बंशीनाँयहै यह हमारी सौतहैयहहमारे ब्रजकाबासहू छुड़ावैगी १॥

रागझँझौटी—सखीबचन ॥ बंशी यमुनापै बाजरही रे लाल छबि निरखन कैसे जाऊंरी आज। बंशीकी टेर सुनी मेरे श्रवणन तन मन सुध बिसरी रे लाल ॥ मोरमुकुट पीताम्बर सोहै चन्दनखौर लगी रे भाल। चन्द्रसखी भजु बालकृष्ण छबि चरणन चेरी भई रे लाल २ ॥ रागगौरी—सखीबचन॥ (सुनबीर या बंशीके गुणकहूं हूं तोते)भाईबिधिहूंते पर्म प्रवीण जिन जगतकियो आधीनलाल की बांसुरिया ॥ चार बदन उपदेश बिधाता थापी थिर चरनीत। आठबदन गरजत गरवीली क्यों चलिहै यहरीत ॥ लालकी बांसुरिया०॥ एकबेर श्रीपतिके सिखये पायो विधि उरज्ञान। याके तो ब्रजराज लाड़िलो लगोईरहत नितकान ॥ लालकी बांसुरिया० ॥ अतुल बिभूतिरची चतुरानन एककमलपर ठाम। हरिकर कमल युगलपर राजत क्यों न बढ़े अभिमान ॥ लालकी बांसुरिया० ॥ एक मराल बैठ आरोहन बिधिभयो महा प्रशंस। इन तो सकल बिमान किये गोपीजन मानसहंस ॥ लालकी बांसुरिया० ॥ श्री बैकुंठनाथ पुरवासिन सेवत जापद रैन। याके तो मुख सुख सिंहासनकरबैठी निज ऐन ॥ लालकी बांसुरिया०॥ अधरसुधा लग कुल ब्रतटारे नहिं शिखा नहीं ताग। तदपि नारायण नन्दनंदन को याहीते अनुराग॥ लालकी बांसुरिया भाई बिधिहूते पर्मप्रवीन जिन जगत कियो आधीन लालकी बांसुरिया ३ ॥ रागइकताला—सखीबचन ॥ (और सुनबीर--कहबीर) बाजै बाजै मधुर ध्वनि बंशी री बाजै। जो सुनि हाल हियेमें बीतै सो कहत जु आवै लाजै ॥ लगी पिय मुख सौति मुरलिया निशि दिन शिरपर गाजै। नागरीदास कहांलगनकहै इनबातन गृहकाजै १३ ॥ रागपूर्वी—सखीबचन॥ श्याममुख मुरली अनुपम राजत। सुभग शिखंड पीड़ शिर सोहत श्रवणन कुण्डल भ्राजत॥नीलजलद तन सुभगचापसुर मन्दमन्दरव गाजत।पीताम्बर कटि तड़ित भावजनु नारि बिबश मनलाजत॥ठाढ़े तरुतमाल तर सुंदर नँदनंदन बन माली। सूरनिरखि ब्रजनारि चकितभईं लगतमदनकीभाली१४॥

रागविहागरो-सखीबचन॥ अधरधरि मुरली श्याम बजावत। शारंग गौर नाटनटकरिकै गौरी राग सुनावत॥ आपुभये रसवश ताहीके अवरनि बश्य करावत। ऐसोको त्रिभुवनके जल थलमें जो शिर नहीं धुनावत॥ सुभग मुकुट कुण्डल मणि श्रवणनि देखत नारि न भावत। सूरदास प्रभु गिरिधर नागर मुरली धरन कहावत॥ १५॥ रागगौरी-सखीबचन॥ (अरीसखी जामुरली तोपटरानीहोय रहीहै अम्बै बीरसांचीकहै है) सखी मुरलीभई पटरानी। अधर सुधा मुखपरत श्यामेकसोपीवति इतरानी॥ मोहेपशुपक्षी द्रुम बेली यमुना उलटिबहानी। सुरनरमुनि बशभये नादके सबै बश्यमनध्यानी॥ तिहूंभुवनमें चलतिबड़ाई अस्तुति मुखमुख गानी। सूरश्यामकी अबअर्धङ्गिनिरहीरिझै लपटानी १६॥ राग गौरी-सखीवचन॥ श्यामनृपति मुरलभिईरानी। बनतेल्याय सुहागिनिकीन्ही और नारि उनको न सुहानी॥ कबहुँ अधर आलिङ्गन कबहूँबचनसुनत तनुदशाभुलानी। सूरदासप्रभु बनभीतरतेतब अपनेघरआनी १७॥ रागमल्हार-सखीबचन॥ (अरीबीरया बंशीको सुनकैमोहिंअबकलऊनाहिंपरै)नन्दनंदनवनबंशीबजाईरी। श्रवण सुनतसुधिरही न वदनकी एकसाथमोमति बैराईरी॥ नैनचकोर चहतनिरखनको शरदचन्दमुखकुँवरकन्हाईरी।नारायणनहिंभवन सुहावत कहाकरूं अबएरीमाईरी॥ १८ रागतिताला-सखीबचन॥ मुरलिया कौनेख्यालपरी। काजकरत सुनिथकीद्वारपै इतउत पगनधरी॥मातपिता पितुबन्धु सबनिमें प्रीतिहिप्रगटकरी। नागरी दासब्रजजनसब प्रेमजाल जकरी १९॥ युगलगीत-सखीबचन॥ (अरीसखी और कहूंहूंसुनकहबीर) वामबाहुधरि बामकपोलैं नचति भृकुटि अधरनधर बंशी। अंगुरिनमुंदत बेधअमोलै जबहरि टेरत वेणुप्रशंशी॥ तबसुरयुतसुरतियथितजानेबिसामितलज्जित उरधुनि धारे। बेधित कठिनमदनकेबाणै मोहिं रहीनींबीनसंभारे॥ सुनहुसखी यहकौतुकवाको हासछटाथिर क्षणछबिसम उर। दुखित सुखदसुतनन्दबबाको जबटेरत मुरली सुरमाधुर॥ तब

ब्रजके गोवृषमृगमोहें दूरहिते स्रनधरि मुखकोरै। श्रुतिउठाय आलसतेपोहे चित्रलिखेसेतजहिंनठोरै॥ शिखिपखगैरिक मृदुल पलासै तिनतन रचिललिमाल्यनिशीमें। बलगोपनयुत सहित हुलासैं जबगाइनटेरत मुरलीमें॥ तबयमुनागतिथिर करिलीन्हे मारुत प्रेरित पदरज परसति। रतिकम्पित भुजलहरनिकीन्हे हमसबललनमिलनकहँ तरसति॥ गोपिनसों भलवरणितहै बल जेहिउरवरबासि श्री श्री पावे। गौवैंबिचरिचरहिंजेवनथल टेरत जबहरिबेणु बजावे॥ तबधुनि सुनिहरि उरनिदेखावत फूलतफलतहोतनतभारा। प्रेमहिते हियहरषबढ़ावत कलित तरुहितज हि मधुधारा॥ ललित तिलक तुलसी बनमालै सौरभलहिगुंजें अलिमाते। तिनसुर आदर करतगोपालै बेणुबजावत जबरंगराते॥ तबसरिलिरसारस अरुहंसे मृदुरवसुनिमोहित ढिगआई। मीलित दृगह्वै मौन प्रशंसै चितदै हरि सेवत सुख छाई॥ बंधु सहित शुभभूषणधारे गिरिवरवर शृङ्गनपर गिरिधर। हरषितबिचरहि मोदपसारे सखि जबमुरलीरव पूरतवर॥ तब अति मोरन होयसशंकै मिलि मिलि मन्दर घनगरजें। बरषि सुमन हरि शिर भुज अंकै आपपत्रह्वै आतपबरजें॥ गोप बिशालनमें अतिनागर बेणु वाद्य बिनु सिखे सुजानै। जब यशुमति तवसुत गुणआगर अधर बेणु सुर जातिन ठानै॥ तबसुर सुरपति विधि कवि वर सुनि मुरली सुर बन्धनवाये। चकित चित्त नहिं ज्ञान भेदकर मोहितभये महासुखपाये॥ अंबुज अंकुश अवनिपताकै चिह्नन युत हरिपद कंचन अति। गोखुर पीरहरत वसुधाके जब टेरत बंशी चलि गजगति॥ तब सबिशाल तकनि भवमनमथ तासु बेगयुत हम तरु गति लहि। मोहि जाहि मनरहत न समरथ केश बसनकी रहति खबरि नहिं॥ कहुं सुरभी नगणत मणिधारे तुलसी स्रग सुगंध मनहर युत। प्रिय सबके गल निजभुज डारे बंशीमहँ जब गावत कलरुत॥ तब बंशीध्वनि मनहरिगोजिन ऐसी कृष्ण धरणि हरि नीतहिं। गुण जलनिधि हरि ढिग सम

गोपिन आय आशु गृहको तजि सेवहिं ॥ कुन्ददामवरवेष बनाये गोपन गोधनयुत हे यशुमति। देत सबनसुख तब नँदजाये जब जब यमुनातट विहरत अति॥ तब मलयज अस परम ताहिते मानकरत अनुकूल वायुचल। वन्दी गंधरव गणहु चाहिये वाद्य गान शुभ झरिसेवहि भल ॥ ब्रज गाइन बत्सल गिरिधारी मग विधिहर वन्दतपद भावत। सांझसमय ढिगऊ छबिवारी सखयुत जब हरि बेणु बजावत ॥ तब श्रम द्युतिहु सो दृगनि छकावत खुर रज मण्डितहै जेढ़िमाला। देवकि जठरजनित विधुआवत सुहृदन अभिमद देत उताला॥ दरमद घूमित नयन अतोलनि सुहृदन अति आनँद बनमाली। बदरी पाण्डु बदन सुकपोलनि मण्डे कुण्डल शोभबिशाली ॥ गजपति सरिस बिहारी यदुपति रजनी पति इव यहिदिन अन्तै। मुदित बदन ब्रजमैयाँ हमप्रति आवत दिन दुख हरत दुरन्तै २०॥ राग बरवै—सखीवचन ॥ दृगवारेनको यह फल सखी न और। जो निरखतनित हरिमुख नवबन ठौर॥ नवरसाल दल अम्बुज माल सुहाय। गावै नित नटनागर बेणु बजाय॥ कौन कियोतप बंशी सखि बनजाय। पानकरति नित अधरन अमी लुभाय ॥ वंशीधुनि सुनि सजनी यहगतिहोय। नचत मोर लखि मोहतब्रज सबकोय ॥ धन्य धन्य ब्रजहरिणी जे ढिगजाय। मोहनको मुख निरखै नयन लगाय ॥ नटवर वेष सुहाये नन्दकिशोर। बिहरैबृन्दाबन सुर तिय चित चोर ॥ बनमाली मुरलीकी सुनि सखिटेर। तृण बछरनतजिगौवें बिच-रहिंनेर॥ बंशी मनफंसी सुर करत उदोत। बंशीबटके खग मृग मुनिसम होत॥ सुनत बेणु सुर मोहति भुजनितरङ्ग। भेंट देत जनु अम्बुज बिबश अनङ्ग॥ लखिआतपहरि बिहरत बेणुबजाय। आत पत्रसम होवै घनहरपाय॥ निरखि मोहिं तृणलग हरि पग अंगराग। लेपहिं अंग पुलिन्दोते बड़भाग ॥ सरससबै हरिदासन महँ यह शैल। फल फूलनसों पूजत जो ब्रजछैल॥ मुरली में यह अचरज अधिक लखाय। चेतन जड़ जड़ चेतनकरति बना-

य २१॥ टेक ॥ बँसुरिया बिषभरीवाजीरे बँसुरिया बिषभरी बाजी॥ दोहा--श्रीप्रियाजीबचन ॥ बृन्दाबन बंशीबजी मोहे तीनोंलोक। वे तीनों मोहे नहीं सो रहे कौनकी ओट॥ बँसुरिया बिषभरी बाजी रे मुरलिया बिषभरी बाजी २२ ॥ ललितासखीवचन ॥ अहो बांस की बँसुरिया तैं तपकीन्हों कौन । अधरसुधा पियको पिवै हम तलफत बिच भौन ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिष भरी बाजी २३ ॥ बिशाखासखीबचन ॥ अरी क्षमाकर मुरलिया परत तिहारे पांय। औरसुखी सुनिहोत सब महादुखीहम हाय॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी २४ ॥ श्री प्रियाजीबचन ॥ हरिचित लियो चुरायकै रह्योपरत नहिं भौन। तापर बंशीराज मतिदेत कटेपरलौन॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरीबाजी २५॥ ललितासखीबचन॥ तोकारण गृहसुख तज्यों सह्योंजगतकोघैरु। हमसों तुमसों मुरलिया कौन जन्मको बैरु॥ बँसुरिया बिष भरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी २६॥ बिशाखासखीबचन॥ मुख मूंदेरहु मुरलिया कहाकरत उतपात। तेरे हांसी घरबशी औरनके घर जात॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरीबाजी २७॥ श्रीप्रियाजीबचन॥ मतिमारैशरतानिकै नातोइतोबिचारि। तीनिलोक संगगाइये बंशी अरु ब्रजनारि॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी २८॥ ललितासखी बचन॥ कह्योन करिहै क्यों नहीं पिय सुहागको राज। अहे बावरी बँसुरिया मुंहलागी मतिगाज॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी २९ ॥ बिशाखासखीबचन ॥ ऐ अभिमानी मुरलियाकरी सुहागिल श्याम। अरी चलाये सबनपै भलेचामके दाम॥बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ३०॥ श्रीप्रियाजीबचन ॥ सबकोमनलैहाथमें पकरिनचाईहाथ। एकहाथ की मुरलिया लगिपिय अधरन साथ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजी रे मुरलिया बिषभरी बाजी ३१ ॥ ललितासखीबचन ॥ तूहै ब्रजकी मुरलिया हमहूं ब्रजकी नारि। एकबाँसकी कानिकरि पढ़ि पढ़ि

मैत्रन मारि। बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ३२ ॥ विशाखासखीवचन ॥ शबदसुनावत हमहिंतू देतनहीं छिन चैन। अनबोलीरह तनकतौ हे बकवादिन बैन ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलियाबिषभरीबाजी ३३ ॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ अहेमुरलिया मोहनी तोसों नहींबसाय। अधरसुधारसपायकै प्रीतम लियो छिनाय ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ३४ ॥ ललितासखीवचन ॥ बाजैमतिमति बांसुरी मतिपिय अधरनलागि। अरीघरबसी देत क्यों रोमरोममें आगि ॥ बँसुरिया बिषभरीबाजीरे मुरलियाबिषभरीबाजी ३५ ॥ बिशाखासखी वचन ॥ हाहा अबरहि मौनगहि मुरली करत अधीर। मोसी है जो तू सुनै तब कछु पावैपीर ॥ बसुरिया बिषभरी बाजी रे मुरलिया बिषभरी बाजी ३६ ॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ अमल चलायो आपनो मुरली गरजिगुमान। हियसूनेकर तियनके प्राणबसाये कान ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ३७ ॥ ललितासखी वचन ॥ पीय हमारेको लियो अधरसुधाते छीन। हम तलफत सुनु बावरी ज्यों बिन जलकी मीन ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ३८ ॥ बिशाखासखीवचन ॥ बोल चलावत मुरलिया कहा सुहागको तोहि। तोसों पिय टेढ़ेरहैं न हम सों सूधेहोहि ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलियाबिषभरी बाजी ३९॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ हमहींकी तू दूतिका मुरली सबजग साखि। हमहींपर गाजत भली झूंठि हमारी चाखि ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरीबाजी ४० ॥ ललितासखीवचन ॥ फूंकन के चलि तीर तन लगे परत नहिं चैन। अंग अंग आपु बिंधायकै हमहूं बेधति बैन ॥ बँसुरियाबिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरीबाजी४१ ॥ बिशाखासखीवचन ॥ आपु खुदी तू करतरीभई मुतसहीमैन। गुंदीपर क्यों चढ़तिहै मुंदीहैकरबैन ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ४२ ॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ कहजानै तू बँसुरिया [illegible] तूके हीयकी अन

बोलीरघुबीर ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ४३ ॥ ललितासखीबचन ॥ गांठगठीले बंशकी महा द्रोह की खान। मति मारैरी मुरलिया तानन बिषकीबान ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ४४ ॥ विशाखासखी बचन ॥ हमहारीं गारीजुदै जड़सों कहा बसाय। मौनगहत नहिं मुरलिया हायहाय फिरि हाय ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ४५ ॥ श्रीप्रियाजीबचन ॥ बड़ेकढ़े गुण बांसुरी बावनसी लघुवेश। भले नचाये नाचतैं तोको है आदेश ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ४६ ॥ ललिता सखीबचन ॥ बंशीबंशी नाम यह काहूधरयो प्रवीन। तान तानकी डोरिसों बेधतिहै मनमीन ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ४७ ॥ विशाखासखीबचन ॥ पीयलियो पिय मन लियो लियो अधररस भूमि। इतोलियो तैं कह दियो बैरिन बंशी सूमि ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरेमुरलिया बिषभरी बाजी ४८ ॥ श्रीप्रियाजीबचन ॥ घूमै भूमै झुकिरहै तुव बंशीसुरलाग। कहर जहर लहरै चढ़ी डसी भुवंगमराग। बँसुरिया बिष भरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ४९। ललितासखीबचन ॥ जिमि मोहीं सबब्रजबधू मोहन मृदुमुसकाय। सोमोह्योतैं मुरलिया बन बनमें लैजाय ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ५० ॥ बिशाखासखीबचन ॥ अरी बांसकी बँसुरिया निकसी पर्वत फोर। जो मैं ऐसी जानती डारती तोर मरोर ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरीबाजी ५१ ॥ श्रीप्रियाजीबचन ॥ नयननकेचलतीर तनरहथोपरत नहिंभौन। तापर बंशीबाजमत देत कटेपर लौन ॥ बँसुरियाबिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ५२ ॥ ललितासखीबचन ॥ मुरली सुनि तनमय भई आंशू दृगनबिशाल। मुखआवै सोई कहै प्रेम बिवश ब्रजबाल ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ५३ ॥ बिशाखा सखीबचन ॥ नागरि हियहरिकै लगी दारूभरी दवाइ। आँगिराग

बंशी लपट पहुंचउठी भभकाइ ॥ बँसुरिया बिषभरी बाजीरे मुरलिया बिषभरी बाजी ५४ ॥ रागदेश–सखीवचन ॥ श्याम तिहारी मदन मुरलियानेकसीने मनमोह्यो । जय सब जीव जन्तु जल थलके नाद स्वाद सुरपोह्यो ॥ जो तीरथ ब्रतकियो ऋषिन सब श्रमकन पीठन दीन्हीं । वा तीरथके ब्रतके फलते श्याम सुहागिन कीन्हीं ॥ धरनीते गोबर्द्धन धारयो कोमल प्राणअधार । अबहरि लटकिरहतहैं टेढ़े तनक मुरलिया भार ॥ हमैं छुड़ाय अधररस पीवें करें न रंचक कान । सूरदास प्रभु अब निकस कुंजते चेरी सौतिभई आन ५५ ॥ रागसोरठ–सखीवचन ॥ (अरी सखी श्यामने बंशी कहांपाई देखतौ नेक अधरनते न्यारहूनाहिं करै) मुरलिया श्याम कहां धौं पाई । करत नहीं अधरनते न्यारी कहा ठगौरी लाई ॥ ऐसी ढीठ मिलतही ह्वैगई उनहींके मन भाई । हम देखत वह पियै सुधारस देखौरी अधिकाई ॥ कहाभयो मुंहलागी हरिके बचननलियो रिझाई । सूरश्यामको बिवशकरावत देखौरी अधिकाई ५६ ॥ रागसोरठ–सखीवचन ॥ (अरी बीर या बंशी नाइँ है यातौ सौतहै अम्बै बीर सांची कहै है यानेतो हमारे गृहकाजहू छुड़ायदिये) बंशी नहीं यह सौति है द्वारी। याहीने गृहकाज भुलाये सुधिबुधि सबहरिलई हमारी॥ जे कुलवन्त प्रवीण नारिजग धीरज धर्म पतिब्रत वारी। तिनहूं की इन लाज बिगोई बन बन फिरतहैं बदन उघारी ॥ कैतो यही रहैगी ब्रजमें कै ब्रजमें बसिहैं ब्रजनारी । नारायण हम तो नित तरसैं यह भई अधरनकी अधिकारी ५७ ॥ राग–देशसखीवचन ॥ बंशीरी तू कवन गुमानभरी॥ सोनेकीनाहीं रूपेकी नाहीं नाहीं रत्नजड़ी। जातपांत तेरीसबजानें मधुबनकीलकड़ी ॥ कहा भयो जब हरिमुख लागी बाजत बिरहभरी। सूरश्यामप्रभु अब क्या करिये अधरनलागतरी ५८ ॥ रागभूपकल्याण—सखीवचन ॥ (अरीसखी याने ऐसो कौनसो तपकीन्हो है जो श्रीठाकुरजी के मुखइ लागीरहै है) री बंशी कौनतप तैंने कियो। रहत गिरिधर

मुखहिलागी अधरनको रस पियो ॥ श्यामसुन्दर कमललोचन तोहिं तन मनदियो। सूर श्रीगोपाल बशभये जगतमें यशलियो ५९ ॥ रागदेश—सखीवचन ॥ सखी याकीबंशी लीजै चोर ॥ जिन न गोपाल किये अपनेबश प्रीति सबनसों तोर। अधरनको रस लेत मुरलिया हमदरशत निशिभोर ॥ छिनएक घरभीतर निशि बासर धरत न कबहूं छोर। कबहुंककर कबहूं अधरनपर कबहूं कटि उर मोर ॥ नाजानूं कछुमेल मोहनी राखीसिव अँग कोर। सूरदास प्रभुकोमन सजनी बँध्योहै नादकी डोर ६० ॥ वार्तिक॥ अरी सखी याकी बंशी चोरलेव, अम्बै बीर कोई दूत सुनत न होय ॥मनसुखा॥ अम्बैं भाभी सब सुनूंहूं का श्रीठाकुरजीकी खोटी बतराय रहीहो में श्रीठाकुरजीते सब कहौंगो ॥ सखी ॥ चल दारीके कहदियो ॥ मनसुखा ॥ अजी श्रीठाकुरजी महाराज, कहा कहै मेरे प्यारे मनके मनसुखा, अजी महाराज आज एक बड़ी भारी बात सुन आयोहूं, कह सारे, अजी महाराज कछू कहिबेई में नाहिं आवे, अरे सारे कहतो सही, अजी महाराज आज ललिताविशाखा सखी आपसमें यों बतराय रहीहैं कि श्रीठाकुरजी कीबंशी चुरायलेव,तो अरेसारेअबकैसीकरैं, दादा करोगेकैसी मोंय देदेव, अरे सारे तू तो छोटोहै, दादा छोटो नाँय हूं बड़ो खोटोहूं अरेसारे तू तो मूरखहै सखीतोंय दोदो गुलचा मारेंगी और बंशी छुड़ालेंगी, अरेदादा मूरखनांयहूं बड़ो चतुर हूंतो अपनी कछु चतुराईबताय, अरेदादा बंशीको लेके गौवनपैचल्योजावँगो वहां जो सखीआवैगीतो दोदो लट्ठमारोंगो तो मुहड़ो टेढ़ोपरजायगो,लै सारेएकजायगी तो दोलेवँगो। अरेदादा एकजाय तो चारदेवँगो, अरेदादायामें येऊेदकैसेहैं. अरेसारे येसातसुर तीनग्रामहैं। सारे सुस्वरनके तीनग्राम। नासारे सातसुरतीनग्रामहैं। तोदादा याब जैकैसे। देसारेमैंबतायदेवँ। नादादा मैं बजालेवँगो। अरीसखी काकहै, सखी,देखबीर अब श्रीठाकुरजीकीबंशी लालामनसुखापै आयगईहै, याय कछूलोभदैकै लेलेव, ॥ मनसुखा ॥ हांभाभी ल।

लामनसुखा ऐसोभोरोहै जो तिहारीबातनमें आजायगो ॥ ललितासखी ॥ अरे लालामनसुखा ॥ मनसुखा ॥ सखीतोंयबोलवोई नाँयआवै अरे लालामनसुखा ऐसेबोलै ॥ ललितासखी ॥ तोला-लाकैसेबोलै, सुनसखी ऐसेबोल्योकरै अजी लालामनसुखाजी, अजी छैलजी, नेकइहांआव माखनमिसरी खाजाव, सुनसखी ऐसेबोलै ॥ ललितासखी ॥ अजी लालामनसुखाजी अजीछैलजी नेकइहांआव माखनमिसरी खाजाव । कहाकहैसखी । आवतोंयएकमीठीसी बातसुनाऊंगी, सखी मैं नाँयसुनूं तेरीबात फात मेरे कच्चेकान फूटजायँगे ॥ विसाखासखी । अरे लालामनसुखा। मनसुखा॥ अरेलालामनसुखा, भंभोतोयबोलवोई लायआवै, तो कैसेबोलै, सुनसखी ऐसेबोल्योकर, अजी लालामनसुखाजी अ-जीछैलजी नेकइहांआव माखनमिसरी खाजाव, सुनभंभो ऐसे बोलै ॥ विशाखासखी ॥ अजी लालामनसुखाजी अजी छैलजी नेकयहांआव माखनमिसरीखाजाव काकहैसखी, आव तोंयखि-लौननतेखिलावँगी सखी मैं बालकपनमें बहुतखेल्यों अबबूढ़ेन का खिलायगी तेंईखेललै सखी ॥ ललितासखी ॥ अरेलालामन सुखा, काकहैसखी, आतोंय श्रीगोवर्द्धननाथजीके गोदकोलडुआ देवँगी, सखी मोंयनांयचहिये तेरे लडुआ फडुआ मैं श्रीठाकुर जीकेसंगमें बहुतखाये हैं ॥ विसाखासखी॥ अरे लालामनसुखा आतोंय श्रीठाकुरजीकी रासलीला दिखावेंगी, होसखी मैं रास लीलाकोतो बड़ोप्रेमीहों मोते जभीतें कायनाकही, चलदारीके जबनाकही तोअबतोंकही लालातोंय सखीबनावैगी, सखी मैं सखी फकीतो नांयबनूं मैंतो सखाईरहूंगो, अरेलालारासमें पुरु-षको अधिकारनहींहै, तो सखी कैसेबनावैगी, लहँगापहिरायगी, सारीउढ़ायगी कजरालगायगी तों सखीसुन लहंगापहिरइयोतो सारी नउढ़इयो और सारीउढ़इयो तोकजरान लगाइयो॥ सब सखियोंने मनसुखाको सारीउढ़ाके बीचमें करलियो ॥ ६१ ॥ रागदादरा-अत्रसखियोंकाबचन ॥ चोरोसखीवंशी आजदांवभल्योपा-

योहै। यहउपकार प्यारी सदाहममानैंगी गौरीगायराग रसिक सांवरो रिझायोहै ॥ बहुतअधरामृतचबायो श्याम मुरलीबिच आज दिनदिनको कसरकाढपायो है। रसिकप्रीतम जोपैबिनती करैहजारबार तौहू याबांसुरीकोभेद नाबतायो है ६२ ॥ वार्तिक॥ इसपदके पूरेहोजानेपै मनसुखा प्रेममेंआयके गिरपरयो तबएक सखीने बंशीछीनलीन्हीं और दोचारघूसामारके कह्यो उठदारी के सबेरोह्वैगयो तब मनसुखाउठके यौंकहनलग्यो रामरामजप नो परायोमालअपनो लइये पैंदाबेटा काठकीमाल। मारभजन के ढेरकरूं और फिर बंशी ढूंढ़नेलग्यो जबकहींनामिली तब ल-लितासखीपै जाकेकह्यो,अरीसखी तैंने बंशीदेखीहोय तोबतादे, अरेदारीके तैं बंशी कहांतेल्यायो, श्रीठाकुरजीपैते, अरेदारीके तो सेमुहड़ियनको श्रीठाकुरजी बंशीदेयँगे, जादारीके यहां नाँय है बंशी अरीसखी मैं तिहारे हाहाखाऊं पाउंनपरूं कहूंदेखीहोयतो बतायदे,जादारीके हाहा,खाय तो अपनेघरनकेखाय और पाउंन परैतो अपनेघरवालेनके पर इहां नाँयहै बंशी ॥ मनसुखा ॥ क्यों सखी नादेयगी, नादेवँगी जासखी देखलूंगो जब यमुनाजलभर बेआयगी उहां दोदोलट्ठ दूंगो तो मुंहड़ो टेढ़ोहोजायगो,जादा-रीके देखलीजो (इसीमाफिक विशाखासखीपैगयो और उहांभी ऐसोही जवाबपायो) ललिता वा बिशाखासखीने मनसुखाको दोदोघूसामारे तब मनसुखा रोवत श्रीठाकुरजीके पास आयो तब श्रीठाकुरजीनेकह्यो अरेसारे कैसेरोवतआयो अरेदादा बड़ी चूकपरी अरेसारेकहतोसही,अरेदादामारोनाँयतोकहूं नामारूंगो, महाराज आपकीबंशी ललिता बिशाखासखियोंने चोरलई जा सारे मैंने तोते जभी कहीही कि तोते सखी बंशी छीनलेयँगी, जासारेमैंनेनाँयकही किमोय बंशीमतदेव मोतेसखी छीनलेइँगी तोसारे कैसेछीनलीनी सुनोमहाराज एकसखीने मोतेकही कि आव लालामनसुखा तोय एकमीठीसीबात सुनाऊंगी मैं दादा तभीनाँयगयो तब एकनेकही आलाला तोय खिलौननते खिला-

वँगी मैं दादा तभू नांय गयो तब एक सखी ने कही आवलाला तोंय श्री ठाकुरजा की रासलीला दिखाऊँगी सो दादा मैं रास लीलाको बड़ा प्रेमीहों सो प्रेम में आयगयो सखीन ने आपकी बंशी चुराय लीन्ही, जासारे तैं अब मोंय हैरान करैगो दादा मैंका हैरान करूंगो आगे आगे सखी हैरान करैंगी ॥ तो सारे चल बताता, कौनसी सखी ने लईहै, चल दादा, बता सारे, देख दादा जिव वो कोनसी जिव वो बतासारे कौन सी देख, दादा वही गोबर चोट्टी, उतारने याकी नथुनिया। बता सारे चुराके इन ने कहां धरीहै, दादा चोलीमें। क्यों सारे चोलीमें कैसे समायगी, अरे दादा बंशीकी कहाचखी चोली में तो बांसके बांस समायजाय। कैसे। तोर मरोर कै, सुनदादा मैं तो अपने घरजाऊं। उरझाय मैं ने दियोहै सुरझाय तुम लीजो। जासारे। अब श्रीठाकुरजी सखियोंके पासजाके उनसेपूछैहैं ॥ श्रीठाकुरजी ॥ अरी ललितासखी, का कहो श्रीठाकुरजी महाराज। हमारीबंशी देखीहोय तो बताय दे। का आपकी बंशी खोयगई। अम्बैसखी। तौ हमको बड़े आनन्द भये। कैसे सखी हमारी तौ बंशी खोय गई और तोकूं कैसे आनन्द भये। सुनो महाराज जब आपकी बंशी बाजती तब हम अपने काम काज छोड़ के आप के पास दौड़ीजाती तब हमारी सास नन्द गारी देती, ना अब आपकी बंशी बजैगी ना हम दौड़जायँगी ना हमारी सास ननँद लड़ेगी हमको तो ऐसे आनन्द भयो। सखी देखी होय तो बतायदे, ना महाराज मैं ने तो नांय देखी और कोई दूसरी सखी पै पूछदेखो, (इसी माफिक विशाखासखीसे भी पूंछी वा उसनेभी यही उत्तर दिया) अरी सखी देखीहोय तो बतादे ना महाराज मैंने तो नांय देखी आप श्री प्रियाजीकी बिनती करोगे तो मिलजायगी। सखी फिर तेरो का अयसान। सीधी रस्ता मैंने बतादी ६३ ॥ राग खम्माच—श्रीठाकुरजीवचन ॥ किन लई देहु बताय मुरलिया राधा॥ प्राणनहू ते प्यारी तिहारी सौंह मोहिं जीवतहों गुणगाय ॥ संस

सुरन सुर नर मुनि मोहे बांसुरी नेक बजाय। यह बिनती बलिहार सुनो क्यों ना प्यारी जी होत सहाय ६४ ॥ रागदेश–श्रीठाकुर जी वचन ॥ कौन बसत या वृन्दावन में मो मुरली को चोर। जानी नहीं लई काहू कर में कट में उरसी जोर। चोरी नहीं बरजोरी सखी री मो मुरलीको चोर॥ (अरी सखी या वृन्दावनको राजाकोहै)॥ श्री प्रिया जी ॥ राजाहीको दियेबनैगी यही न्याव कीजेवेगी तोर॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ वृन्दावन हित रूपसुघर पियावाट गंवाई ढूंढो कानन के कछू देहु अकोर ६५ ॥ रागकाफी–श्रीठाकुर जी वचन ॥ मुरलिया जो पाऊं तो मैं तेरोही गुण गाऊं। सुनहो कुंवर किशोरी श्री राधे राधे राधे गाय सुनाऊं ॥ चरण छुवाय कहतहौं तुमसों तेरोहीध्यान लगाऊं। यह बिनती बलिहार बिहारिन तेरही हाथ बिकाऊं ६६ ॥ रागभूपाली–श्रीठाकुरजीवचन ॥ बंशी मेरी प्यारी दीजे प्रान प्रान प्रान। यह ठौर काल्ह भूल्योरी सुख दानं दान दान ॥ नहिं कामकी तिहारी दीजे आन आन आन। जातेकरूं मैं तेरोरी गुण गान गान गान ॥ बिनती सुनौहमारी दे कान कान कान। कृपा रसिकपै कीजे जन जान जान जान ६७ ॥ वार्ता ॥ अरी सखी अबतो करलीन्हि श्री प्रिया जी की बिनती अबतो हमारी बंशी देदेव॥ सखी ॥ बंशीके नांव गूंठा लेव गूंठा सखी मैं जानूं तूं बड़ी नटखटी है। आपहूलाल बड़े नटखटी हैं ६८ ॥ रागभजन–श्रीठाकुरजीवचन ॥ कहूं देखी भैया बंशिचुरावन हारी॥ हम यमुना पै पाट करतहे वे जलभरने आई। सात सखिन के हेलै मेलै उन मेरी बंशी चुराई ॥ गोकुल ढूंढ़ वृन्दावन ढूंढ़ी ढूंढ़ी अटा अटारी। पातपात कुंजन में ढूंढ़ी नहिं पाई राधाप्यारी ॥ साट पाटको लहंगा पहिरे ऊपर लम्बोसारी। राधा उनको नाम जो कहिये विन मेरी बंशी चुरारी॥ सूरश्याम बंशी के कारण ढूंढत फिरत मुरारी। दोई करजोर करतहौंविनती देव बंशी वृषभानदुलारी ६९ ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ हमारीबंशी देव प्यारी सुनो वृषभान दुलारी जू। संगकी सखी सब ठाढ़ीजु

देखैं जिन तुम लई है चुराई जू ७० ॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ हमका जानैं तुम क्यों न देखौ कह भूले कहा डारी जू। चीर हमारे तुम हीं चुराये अब जो बनेहों साह जू ७१ ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ कहां दुराई सांची बतावो मुरली प्राण पियारी जू। वह मुरली अति सुन्दर मेरी प्रिया सौंह तिहारी जू ७२ ॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ हम नहिंलाल बिलोकी मुरली कहँ भूले कहँ बिसारीजू । पूंछतहौ क्यों छैल छबीले को जानै कहाँ डारी जू ७३ ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ वहबंशी मोहिं नेक न बिसरै दीजो वेग बताई जू। अब न छिपावो सांच बतावो बिनती करूं तिहारी जू ७४ ॥ श्रीप्रियाजीवचन ॥ नहिं जानै तुम कहां धरी है बांसुरी श्रीगिरिधारी जू। बारबार क्यों पूं-छतहौ जी मनमोहन बनवारी जू ७५ ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ या वंशी ने त्रिभुवन मोह्यो कहँलगि कहौं बिचारी जू। तुमतौ गुण नहिंजानौ याके सुर नरमुनि हितकारी जू७६॥ श्रीप्रियाजीवचन॥ ह-मनहिं श्यामछिपावैं मुरली तुमसौं कुंजबिहारीजू। सांचिकहैंमु-रली नहिंदेखी तनकउ नैन निहारी जू ७७ ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ या मुरली मेरी ललित मोहनी सो तुम राखी दुराई जू। वन बन मांझ बजावौं याको तुमरेही गुण गाऊं जू ७८ ॥ श्री प्रियाजी वचन॥ सो सब सांची कहौ कुंवरजी हम कह जानैं नारी जू। या गुनियां मुरली के माहीं सुनि मोहीं ब्रजनारी जू ७९ ॥ श्रीठाकुर जीवचन ॥ हँस मुसक्याय देव तुम मुरली प्यारी मोहिं बताई जू। नारायण सखियनसौं मोहनमांगत हा हा खाई जू ८० रागयमन श्रीठाकुरजीवचन ॥ काल्ह सखी यह ठौर बांसुरी भूल बिसारी। ले जो गईं तुमधाम बात हम सुनीहै तिहारी ॥ तिहरेकाम न आ-वहीं सखी बंशी हमारी देहु। हम आतुर होय मांगहीं तुमनाहिं जो नाहिं करो ॥ बासुरीदीजिये ब्रजनार ८१ ॥ श्रीप्रियाजीवासब सखीवचन ॥ बंशी कैसीहोय नहीं हम नयननदेखी। पिता तिहारे साधु लाल तुम कपट बिशेखी ॥ इत उत खेलत तुम फिरो वाहीं भूलरही। सातसस बाबाकी सौं हमनाहिं जू नाहिंलई ॥

रैन ॥ सम्हारे तुमनहिं बोलौ बैन । करो चोरी दिखरावो नैन ॥ दोहा ॥ गुण कीमत जानोनहीं गूजरिजाति गमार । मुरली मेरी देहु नागरी क्यों करती तकरार ॥ बसों बरषाने पहिचानी । बांसुरी दे राधा रानी ९४ ॥ सबसखीबचन ॥ यशोमति भोरी भोरे नंद । ढीठ सुत जिनके गोकुलचंद ॥ भरो हरि बात बातमें फंद । करो छलिया छिन छिन छलछंद ॥ दोहा ॥ तनिक बांसु की बांसुरी क्या ऐसी अनमोल । तापर रार बढ़ावत मोहन बोलत अटपट बोल ॥ निडर नागर नट शैलानी । बांसुरीदे राधा रानी ९५॥ श्रीठाकुरजी वचन॥ बांसुरी सुरपुरतेआई । नन्दबाबाने बनवाई ॥ गढ़ी ब्रह्मा सुनार ताई । बिष्णु शंकरके मनभाई ॥ दोहा ॥ या वंशीमें बसत पट राग रागिनी तीस । सो तुम लई चुराय देहु वृषभान कुंवरि बकशीस ॥ विमल गुण गाऊं मृदु बानी । बांसुरीदे राधा रानी ९६ ॥ सबसखी बचन ॥ सैन श्यामा की लखि ब्रजबाम । बांसुरी लाय दई घनश्याम ॥ बजाई धर अधरन अभिराम । सखी मोहनको मिलीं तमाम ॥ दोहा ॥ मांगैं दासगणेश युगचरन भक्ति बरदान । नन्दनँदन वृषभान नन्दनी सदा करो कल्यान । युगल सुखसम्पतिके दानी । बांसुरीदे राधा रानी ९७ ॥ सखीबचनवार्ता ॥ अरी बीर या बंशी प्रकट कैसे भई और याके मात पिता कैसे हैं याको तू जानै है कि नांय। नांय बीर मैंतौ नांयजानूं ४ ॥ रागगौरी ॥ मुरली प्रगटभई सो कैसी । कहांरहत कैसे यह आई राधेश्याम अनैसी ॥ मातपिता कैसेहैं याके याकीगति प्रतिऐसी । ऐसे निठुर होहिंगे जैसीकी यहतैसी ॥ यहतुम नहीं सुनीहो सजनी याकेकुलको धर्म । सूर सुनहु अबही सुखपैहो करणी उत्तम कर्म ५ ॥ सखीबचन वार्ता ॥ अरीसखी सुन मैं या बंशीकी उत्पत्ति तोतेकहूंहूं । कहबीर ६ ॥ रागनट ॥ सुनरी मुरलीकी उतपत्ति । बनमें रहति बांसकुल याको यहतौ याकीजाति ॥ जलधरपिता धरणिहै माता अवगुण कहौं उघारी । वनहूंते याकोघर न्यारो निपटहि जहां उजारी ॥

एकतेएक गुणनिहैं पूरे मातपिता अरुआप । ना जानिये कौन फल प्रगटयो अतिहिकृपा परताप ॥ बिश्वासी परकाज न जाने याके कुलको धर्म । सुनहुसूर मेघनकी करणी अरु धरणीके कर्म ७ ॥ सखीवचन वार्ता ॥ अरीबीर ऐसी याकी उत्पत्तिहै याकी जाति श्यामने नांयजानी ताते याको बनते लाये हैं अरीसखी याकी करणी या मुखते बखानीहूँ नांयजाय ८ ॥ राग विहागरो ॥ याकीजाति श्यामनहिं जानी । बिनबूझेबिनही अनुमाने करिबैठे पटरानी ॥ बारम्बार लेत आलिंगन सुनि सुनि मधुरीबानी । गांवठांव नहिं बास बंशीको याहि कहांतेआनी ॥ जिनकुल दाहत बिलँब न कीन्हों कौनधर्म ठहरानी । सुनहु सूर वह करणी याहिमुख जाति न कछू बखानी ९ ॥ रागधनाश्रीसखी वचन ॥ यहमुरली जरिगई न तबही । जबअपनो कुलदाह करायो तब कैसे निबही ॥ ऐसी चतुर चतुरईकीन्हीं आपबची सब जारी । कैसेमिली सूरके प्रभुको विधनाकी गतिन्यारी १० ॥ राग गौरी-सखीवचन ॥ मुरलिया हमहिं उपाधिभई । नन्दनँदन हम सबनि भुलाई उपजी कहादई ॥ कैसेवह अब दूरिहोतिहै नोखी मितीसई । देखोरी सम्बन्ध पाछिलो बरबिष बेलिबई ॥ जारे जरै न काटेसूखै ह्वैगई अमृतभई । सूरश्याम भरुहाई याको ब्रज में आनि छई ११ ॥ रागगौरी-सखीवचन ॥ मुरली मोह्यो कुँवर कन्हाई । अँचवत अधरसुधावश कीन्हें अबहम कहाकरैंरीमाई ॥ सरबस हरिलै धरो सबनिको ऐसेनाहिं न देतदिखाई । गाजति बाजति बैठिदुहूँकर अपने कानन सुनत पराई ॥ जेहितनु अग्नि दह्यो अपने कुल तासों कैसेहोत भलाई । अब सुनि सूर कौन विधि कीजै बनकीव्याधि मांझ घरआई १२ ॥

(इतिश्रीवंशीलीला सम्पूर्ण)

अथ श्रीमहादेवलीला ॥

रागधीमाश्री महादेववचन ॥ कृष्णजन्म जबसुन्यो सदा शिव आयेगोकुल नगरी। ब्रजकीरजको दरशनकीन्हों मोदबढ्यो अति

अगरी ॥ मनमें अतिशय प्रेमउमागि है नहिंसूझतहै डगरी। परमानन्द दरशकी आशा पहुंचे नन्द भवनरी १ ॥ रागभैरवश्री यशोदावचन ॥ कौनदिशाते आयोरेबाला कौनदिशाते आयो। कहा काज तिहरो या ब्रजमें घरघर अलख जगायोरे ।बाला कौन दिशाते आयो ॥ मुंडमालकी मालापहिरे अंगभभूत लगायोरे। बालाकौन दिशाते आयो ॥ परमानँद यहरूप अनोखो नागन भुज लिपटायोरे। बालाकौन दिशाते आयो २ श्रीमहादेववचन॥ वार्ता ॥ सुनमैया मैं अतिबूढ़ो योगीहूं। तिहारे इहां प्रभूको जन्म सुनिकेदर्शनकेकारणआयोहूं ३ ॥ रागदेश ॥ मैंअतिबूढ़ोयोगी मैया मैं अतिबूढ़ोयोगी।धाममेरोअभिमुक्तक्षेत्रहै जहँतरजातहै भोगी॥ श्रवण सुनीमें प्रघटभये प्रभु नन्दसदन ग्रहआई । परमानँद प्रभु दर्शन कारणआयोयहां मैंमाई ४ ॥ रागभैरवश्रीमहादेव वचन ॥ मैं योगीयश गायारे बाला मैंयोगी यशगाया । तेरेसुतके दर्शन कारण मैं काशी तजधाया ॥ पारब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जामाया।अलख निरंजन देखन कारण सकललोक फिर आया ॥ धनिधनि तेरोभाग यशोदा रानी जिनऐसा सुतजाया। गुणनबड़े छोटे मतभूलो अलखरूप धरआया ॥ यशोदावचन ॥ जोभावै सो लीजे रावर करो आपनी दाया । देव अशीष मेरे बालककूं अविचल बाढ़ैकाया ॥ श्रीमहादेव वचन ॥ नाचहिये तेरो पाट पटम्बर ना चहिये कंचन माया । मुखदेखूं तेरे बालकको यहमेरे गुरूने लखाया ॥ यशोदावचन ॥ करजोरै बिनवै नंदरानी सुनयोगिनके राया । मुख देखन नहिं देहौंरावर बालक जात डराया ॥ कालापीला गौर रूपहै बाघम्बर ओढ़ाया। कहुंडायन की दृष्टिपरैगी बालकजात दिठाया ॥ श्रीमहादेववचन ॥ जाकी दृष्टिसकल जगउपजै सोक्योंजात दिठाया । तीनलोकका साहेब मेरा सोतेरे भवन छिपाया ५ ॥ वार्ता ॥ अरीमैया तैं अपने लालाके दशन करायदे। नामैं अपने लाला के दर्शननांयकराऊंगी मेरीलाल तुमको देखकै डरप जायगो। अरी माता वे नांय

डरपैं तैंदर्शन करावदे । नाम दर्शन नाकराऊंगी । तोमैया ना करायगी। ना। सुनमैया जोमेरे सांचेप्रभू होंयगे तोमुझेआपही दर्शन देंयगे ६ ॥ रागभैरव-महादेवका ध्यानकरना ॥ दिलदां मेरा श्यामलायार दरशतो दिखायजा । जागिनी काछिनीकटि पीताम्बर श्रवनन कुंडल शशिमुकट घूंघरवाली अलकैं झल-कैं मेरे नैनोंमें समायजा ॥ बंशीबट इत यमुना तट नाचत गावत गोपिन संग नंद के किशोर मेरे हिये में समायजा॥ जानकी दास भये उदास निकसत नाहीं पापी स्वांस सपने हू में आयके मेरेसकलदुख मिटायजा ७॥ रागभूपालीमहादेववचन ॥ बोलता क्यों नहिं रे मिजाजी बोलता क्यों नहिं रे। शिर तेरे क-करेली चीरा गलमोतियनकी माल रे । तेरेहाथमें दुधारा खाडां मारता क्यों नहिं रे॥ इश्क के दरियाव पास खडा मुझे लगी प्यास प्रेमकाप्याला प्यारे तू पिलाताक्यों नहिं रे। इस्ताब में व्या-कुल शरीर दिल को नहिंआती धीर करुणनदी कटाक्षमें डुबाता क्यों नहिं रे ॥ ऐसा दिलगिर सो बेपीर हो चुपरहा दासन के निकट आता क्यों नहिं रे ८॥ रागबिलावल–सखीवचनसखीसे ॥ देखोरी एक बालायोगी द्वारे मेरे आयाहै री। गढ़ कैलाससे चले सदाशिव गोकुल नगरी आयाहै री॥ नंदद्वार योगी पूंछत डोलै घर घर अलख जगायाहै री । अंग भभूत गले मृगछाला शेष नाग लिपटायाहै री॥ माथे वाके तिलक चन्द्रमा योगी जटा बढ़ायाहै री॥ देखतही डर लागत ताको रूप अनोखो आया है री। परमानन्द मगनमन डोलत बोलतअतिहि सुहायाहै री ९॥ रामबिलावल--यशोदावचन ॥ काहू योगिया की लागी नज़र मेरो बारो कन्हैया रोवैरी। मेरी गली जिन आउरे योगिया अलख अलख कर बोलैरी॥ घरघर हाथ दिखावै यशोदा बारबार खल जोवैरी। राई लोन उतारत छिन छिन सूरको प्रभु सुख सोवैरी १०॥ रागधीमा--समाजीवचन ॥ नन्दद्वारे यकयोगी आयो सिंगीनाद बजायो। शशिजटा शशिवदन सुहायो अरुण नयन छवि छायो॥

रोवत खींचत कृष्ण सांवरो रहत नहीं दुलरायो। लियो उठाय गोद नंदरानी द्वारेजाय दिखायो ११ (वार्ता) ॥यशोदावचन॥ अरी ललिता बिशाखा चम्पकलता रंगदेवी सुदेवी सखियो नेक यहां आनके देखो तो सही मेरे लाला को कहा होयगयो जो रोवई करै ॥ सखीबचन ॥ अम्बेंबीर लाला कों कहा होयगयो है अरी मैया जो वो योगी आयोथो वाही ने कछू टोनो सो करगयो है अम्बें बीर सांची कहै वाकोनेक टेर ले। हम्बें बरि जाऊं हूं। अरे योगी चल तोय यशुदा मैया बुलावै है। चल सखी १२ ॥ राग भैरव ॥ सखीवचन ॥ चलरे योगी नन्दभवन में यशुमति तोहिं बुलावै ॥ श्रीशम्भुवचन ॥ लटकत लटकत शंकरआये मनमें मोद बढ़ावै ॥ नंदभवन में आयो योगी राई लोन कर लीन्हों। बार फेर लाला के ऊपर हाथ शीश पै दीन्हों ॥ बिथा गई सब दूर बदन की किलक उठे नंदलाला ॥ यशोदाबचन ॥ खुशभिई नँद जू की रानी दीन्हीं मोतिन माला ॥ रहुरे योगी नन्दभवन में व्रजमें बासो कीजे। जब जब मेरो लाला रोवै तब तब दर्शन दीजे॥तुमतो योगी पर्म मनोहर तुमको बेदबखाने॥ महादेववचन॥ बूढ़ो बाबू नाम हमारो सूरश्याम मोहिं जाने १३ ॥ वार्ता ॥ अरी यशोदा मैया नेक अपने लाला को तौ लैयो सही दर्शनतो कर लेवों फेर कैलास को जाऊं १४ ॥ रागभैरव-यशोदावचन ॥ कृष्ण लाल को ल्याई यशोदा कर अञ्चल मुखछाया ॥ महादेवबचन ॥ कर पसार चरणन रज लीन्हीं सिंगी नाद बजाया ॥ अलख अलख कर पांव छुये हैं हँसि बालक किलकाया। पांचबेर परिकर्मा कर कै अतिआनन्द बढ़ाया ॥ हरिकी लीला हरमन अटक्यो चित नहिं चलत चलाया। अलख ब्रह्मांड के नायक कहिये नंद घरहि प्रगटाया ॥ इन्द्र चन्द्र सूरज सनकादिक शारद पार न पाया। लाग श्रवण मंत्र दीन्हों सुनाई हँसि बालक मुसक्याया ॥ यशोदावचन ॥ कौन देशके योगी हो तुम कौन नाम धरवाया। कहां बास यह कहत यशोदा सुन योगिन के राया ॥

तुमहीं ब्रह्मा तुमहीं बिष्णू तुमहीं ईश कहाया। तुम बिश्वम्भर तुम जग पालक तुमहीं सृष्टि रचाया (महादेवबचन) चिरंजीव हो महरि तिहारों हौं योगी सुखपाया। सूरदास रमिचला राव-रो शंकर नाम बताया १५ ॥

इतिश्रीमहादेवलीलासम्पूर्णम् ॥

अथपांड़ेलीला ॥

रागआसावरी–पांड़ेवचन ॥ आजनन्दजू तुम्हरे घरमैं पुत्र जन्म सुनआयो। लग्नशोध ज्योतिषको गिनके चाहत तुम्हैं सुनायो॥ संवत शर्स भाद्रपदमासे आठै तिथि बुधवार। कृष्णपक्ष रोहिणी अर्ध निशि हर्षण योग उदार ॥ वृषहै लग्न ऊंचके निशिपति तनय बहुतसुख दैहै। चौथे सिंहराशिके दिनपति जीत सकल में ऐहै ॥ पांचे बुध कन्याके जोहै पुत्रन बहुत बढ़ैहै। छठेहै शुक्र तुलाके बलयुत शत्रु रहन नहिंपैहै ॥ ऊंच नीच युवती बहुकरि है सातै राहु परेहै। भाग भवन में मकर महीसुत पूरे ऐश्वर्य करैहै ॥ कर्म भवनमें ईश शनीचर श्यामबर्ण तनहोहै। लाभ भवनमें मीन वृहस्पति नोनिधि घरमेंऐहै ॥ आदि सनातनहरि अविनाशी घट घट अन्तरयामी। सो तुम्हरे गृह आन प्रगटभये सूरदासके स्वामी १ ॥ रागधनाश्री। पांड़ेवचन ॥ महरानेते पांड़े आयो। ब्रजघर घर बूझत नंदरावर पुत्रभयो सुनिके उठधायो॥ (यशोदाबचंन)पहुंच्यो आयनंदके द्वारे यशुमतिदेख अनंद बढ़ा-यो। पांवधोय भीतर बैठारेउ भोजनको निज भवन लिपायो ॥ जो भावै सो भोजन कीजै विप्र मनहिं अति हर्ष बढ़ायो (पांड़े बचन) बड़ी वैस विधिभयो दाहिनो धनयशुदा ऐसोसुत जायो॥ धेनु दुहाय दूधलै आई पांड़े रुचिकर खीर चढ़ायो। घृत मिष्टान्न खीर मिश्रित कर परस कृष्ण हित ध्यान लगायो॥ नयनउघार विप्र जो देखै खात कन्हैया देखत पायो। देखौधाय यशोदासुत कृत सिद्धपाक यह आनिजुठायो (यशोदाबचन) महरिविनयकर दोउ करजोरघो घृत मधुपय फिर बहुत मँगायो। सूरश्यामकत

करत अचगरी बारबार ब्राह्मणहि खिजायो २ ॥ रागरामकली ॥ यशोदावचन ॥ पांड़े भोग न लावन पावै । कर कर पाकज-भी अर्पतहै तभी ताहि छीं आवै ॥ इच्छाकर मैं ब्राह्मण निवत्यो ताको श्याम खिंजावै । वह अपने ठाकुरहि जिमावत तू तबही छी आवै (श्रीठाकुरजी बचन) जननी दोष देतिकत मोको विधि विधानकरि ध्यावै । नयन मूंदि करजोरि नामलै बारम्बार बुलावै ॥ यह अन्तर नाहिंहोत भक्तसौं क्यों मेरेमन भावै । सूर दास बलि बलि बिलासपर जन्म पाय यशगावै३॥ रागबिलावल पांड़ेवचन ॥ सुफल जन्म मेरो आज भयो। धनि गोकुल धनिनंद यशोदा जिनके हरि अवतार लियो ॥ प्रकट भयो अब पुण्य सु-कृतफल दीनबंधु मोहिं दरशदियो । बारम्बार नंदकेआंगन लोट-त द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराधकियो बिनजाने कोजानै किहि भेषजियो । सूरदासप्रभु भक्तहेतवश यशुमतिके अवतारलियो४॥

इतिश्री पांड़ेलीला सम्पूर्णम् ॥

अथ चंद्रखिलौना लीला ॥

राग बिलावल-यशोदा वचन ॥ प्रातसमय दधि मथति यशोदा अतिसुख कमल नयन गुण गावति । नील बसन तनु सजल जलद मनो दामिनि द्युति भुजदंड चलावति ॥ चन्द्रबदन लट लटकि छबीली मनहुं अमृतरस राहु चोरावति । गोरस मथति नाद एक उपजत किंकिणि धुनि सुनि श्रवण रमावति ॥ सूर श्याम अंचराधरि ठाढ़े काम कसौटी कसि दिखरावति १ ॥ राग रामकली-यशोदावचन ॥ अहो दधि मथति गोपकी रानी। दिव्य चीर पहिरे दक्षिणको कटि किंकिणि रुनझुन अति बानी ॥ सुत के कर्म गावति आनँदभरि बालचरित्र जनि जानी । श्रम जल राजैं बदन कमल पर मनहु शरद बरसानी ॥ पुत्रसनेह चुचात पयोधर प्रमुदित अति हरषानी । गोबिंद प्रभु घुटुवन चलि आये पकरि लई मथानी २ ॥ रागरामकली-यशोदावचन ॥ मोहिं दधि मथनिदे बलिगई । जाउँ बलि चलि बदनऊपर छांडु

मथनीरई ॥ लालदेहुं नवनीतलौंदारारि कितमठई। सुतहेतु विलोकि यशुमति प्रेम पुलकित भई ॥ लैउछंग लगाय उरसों प्राण जीवनजई। बालकेलि गोपाल को ब्रज आशकरन नित नई ३॥ रागबिलावल-यशोदावचन ॥ नंदजूके बारे कान्ह छांड़िदे मथनियां। बारम्बार कहतहै माता यशुमति नंदकी रनियां। नेकरहो माखनदेहों मेरे प्राण धनियां। रार जिन करौ लाल गईहों न्योंछनियां॥ सुर नर मुनि जाकोध्यावे पारब्रह्म जनियां। सूरश्याम देखि सब भूलीं गोपधनियां ४ ॥ रागबिलावल-यशोदा वचन ॥ नेक मेरे बारे कान्हा छांड़िदे मथनियां। कंठबघुली सोहै नाकमें नथुनियां॥ नयननते नीर मानों मोतिनकी मनियां॥ नेकरहो देहौ माखन मेरेप्राणधनियां। रारजिनकरौमेरेछगन मंगनियां॥ सुर नर मुनि काहूके ध्यान न आवनियां। सूर सुत देख सुखलेत नन्द रनियां ५ ॥ वार्ता। यशोदावचन ॥ अरे लाला मोहिं दधि मथनिदे देखु वह कैसो चन्दा दिखैहै (श्रीठाकुरजी बचन) हूंहूं अरी मैया मैं चन्दाहिलौंगो हूंहूं ६॥ रागकान्हरो-यशोदा वचन॥ ढाढ़े अजिर यशोदा अपने हरिहिलिये चन्दादिखरावति। रोवत कतबलिजाउँ तुम्हारी देखोधौंभरि नैनजुड़ावत ॥ चितैरहे तब आपुन शशितन अपनेकर लै लै जु बुलावत (श्रीठाकुरजीबचन) मीठो लगत किधौं यहखाटो देखत यह सुन्दर मनभावत। मनहीं मनमें बुद्धि करतहरिमातासों कहि ताहि मँगावत॥ लागी भूख चन्दमें खैहों देहुं देहुं कहि कहि बिरुझावत। यशुमति कहति कहामें कीन्होंकतमोहनइतनोदुखपावत ॥ सूरश्यामकोयशुमति बोधति गगनतरैया उदरदिखावत७॥ रागकान्हरो यशोदावचन ॥ किहिबिधिकरिकान्हहिंसमुझैहौं। मैंभूली चन्दादिखराया ताहिकहतमुहिंदेमैंखैहौं॥ अनहोनी कहुं भई कन्हैया देखी सुनीनबात। यहतोआहि खिलौना सबको खानकहत तिहितात॥ यहै देत नवनीनित मोको क्षण क्षण सांझ सवारे। बार बार तुमताको मांगत देहुं कहांते

प्यारे ॥ देखतरहो खिलौना चन्दा रारिनकरौ कन्हाई। सूरश्याम लिये कहति यशोदा नन्दहि कहाबुझाई ८ ॥ रागकान्हरो-यशोदा वचन ॥ आछो मेरो लालहो ऐसी रारिनकीजै। मधुमेवा पकवान मिठाई जोइभावैसोइ लीजै ॥ सदमाखन साज्योदह्यो घृत अरु पयआछोपीजै। पालागों हठजनिकरो अतिरिसतनु छीजै ॥ आन बतावतआनहींइनबातनकैसेजीजै। सूरश्यामहठिचंदामांगैचन्दा कहांसे दीजै ९ रागबिलावल-यशोदाबचन ॥ बारबार यशुमति सुत बोधति आउचन्द तोहिंलालबुलावै। मधु मेवा पकवानमिठाई आपुखाय पुनितोहिखवावै ॥ हाथहिपरतोहिंलीन्हेखेलैं नेकुनहीं धरणी बैठावै। जलभाजनमैं करसेउठावै याहमिंतूतनधरआवै ॥ जलपुट आनि धरणिपर राखो गहि आन्यों वह चन्द दिखावै। सूरदासप्रभु हँसि मुसक्याने बारम्बार दोऊकरनावै १० ॥ वार्ता॥ श्रीठाकुरजीबचन ॥ हूंहूं मैया मैं तो चन्दई ल्योंगो ॥ रागझझोटी श्रीठाकुरजीबचन ॥ ल्योंगोरी मैया चन्दहिल्योंगो ॥ कहाकरोंजल पुट भीतर को बाहिर लपकि गहोंगो। यह तो झलमलात झकझोरत कैसेकरजू गहोंगो ॥ यहतो निपट निकटही दीखत बरजेहूनरहोंगो। तुम्हरो प्रेमप्रकटमैं जान्यों बौराये न चहोंगो ॥ सूरश्याम कहै करगहि ल्याऊं शशितनताप दहोंगो ११ ॥ वार्ता ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ हूं हूं मैया मैं चन्दहि ल्योंगो (यशोदाबचन) अरे लाला मनुसुखा नेक इतैआ देखतो सही कि आज लाला कैसो चन्दाकेलिये खीजैहै याकोचन्दातोलादे (मनसुखाबचन) हम्वै मैया कलमैं गोबर्द्धनको गोचरावन जाउँगो वहां बहुत से चरैं है मैं दोतीन गोझे में डारलाऊंगो (श्रीठाकुरजीबचन) हूं हूं मैं चन्दाही लूंगो मैया १२ ॥ रागबिलावल-यशोदा वचन ॥ तु- वमुख देखिडरत शशिभारी। करकरिकै प्रभु देखोइ चाहत भाजि पतालगयो अपहारी ॥ वहशशि तौ कैसेहुं नहिं आ- वतयहऐसी कछु बुद्धि बिचारी। बदन लखे बिधु बिधु शंकित तन नयन कंज कुंडल उजियारी ॥ सुनहु श्याम तुहिं शशिडर

पतुहै कहतये शरणतुम्हारी। सूरश्याम ताते नहिं भावत ऐसे समुझावति महतारी १३॥ रागझझोटी-श्रीठाकुरजीवचन॥ चन्द्र खिलौनालेहौं मैया मेरी चन्द्राखिलौना लेहौं॥ सुरभीको पय पानन करिहौं बेनीशिर न गुथैहौं। मोतिन लालन धरिहौं उर पर झँगुली कंठ न लैहौं॥ जैहौंलोट अबै धरणीपै तेरीगोद न ऐहौं। लालकहैहौं नन्दबाबाको तेरो सुत न कहैहौं (यशोदा वचन) अरेलाल नेक इतेतौआ मैंतोते एकबात कहूं॥ कानलाय कछुकहै यशोदा दाऊनाहिं सुनैहौं। चन्दाहूंते अति सुन्दरतोको नवल दुलहिया ब्यैहौं॥ (श्रीठाकुरजी बचन) अरी मैयाकैमोंको चन्दालादे कैमोंको दुलहिनलादे (यशोदाबचन) अरेलाला ना घरमें नन्दबाबाहैं ना कोई बराती हैं॥ तेरीसौं मेरीसुन मैया अबहीं बिवाहनजैहौं। सूरदास सब सखा बराती युवतिन मंगल गैहौं १४॥ वार्ता-यशोदावचन॥ अरेलाला नन्दबाबाको घरआउन दे तबतेरो ब्याह कराढूंगी (श्रीठाकुरजीबचन) अरीमैया मोको ऐसी दुलहिन भावै है। कैसीलाला। सुनमैया १५॥ रागकाफी-श्रीठाकुरजीवचन॥ मैयामोहिं ऐसी दुलहिभावै। जैसी वा काहूकी ढिटोनी रुनक झुनक चलीआवै॥ करकरपाक रसाल आपने करमोहिं परस जिमावै। करअंचल पटओट बाबाते ठाढ़ी ब्यार ढुरावै॥ मोहिं उठाय गोद बैठारे करमनुहार मनावै (यशोदा बचन) अहोमेरे लाल कहो बाबाते तेरोव्याह करावै। नंदराय नँदरानी दोऊमिल मोद समुद्र बढ़ावै॥ परमानन्द दासको ठाकुर वेदविमल यशगावै १६॥ रागविलावल-श्रीठाकुरजीवचन॥ मैया मोहिं बडो करलेरी। दूधदही घृत माखन मेवा जबमाँगों तब देरी॥ कछूहौंस राखे जिनमेरी जोई जोई मोहिंरुचैरी। होउँ सबल सबहिनमें जैसेसदारहौं किडभेरी॥ रंगभूमिमें कंसपछाड़ो खींचिबहाऊं नेरी। सूरदास स्वामीकीलीला राखो मथुरा जेरी १७॥ रागरामकली॥ मैयामेरी कबबाढ़ैगी चोटी। कितीबेर मोहिंदूध पीवतभई यह अजहूं है छोटी॥ तूजो कहत बलकी

बैनी ज्योंहूहैं लांबीमोटी (यशोदा बचन) काढ़त गुहत गुहावत जैहै नागिनसी भौंलोटी ॥ काचेदूध पिवावत मोहनि देतीमाखन रोटी । सूरमैया याहीरस मिलियो हरिहल धरकी जोटी १८ ॥ वार्ता ॥ यशोदावचन ॥ (अरे लाला जा खेलआ । ना मैया मैंना जाऊं । क्यों सुनमैया) १९ ॥ रागरामकली-श्रीठाकुरजीबचन ॥ अब मेरी खेलनजात बलैया । जबहिंमोहिं देखत लड़कनसंग तबहिं खिजति बलभैया ॥ मोसोंकहत तातबसुदेवहै देवकी तेरीमैया । मोललियो कछूदे बसुदेवहिं करकर जतन बड़ैया ॥ अब बाबा कत कहत नन्दसों अरु यशुमतिसों मैया । पाछे नन्द सुनत है ठाढ़े तब हँसिहँसि उरलैया ॥ सूरनंद बलरामहि हरक्यों सुन मनहर्ष कन्हैया २० ॥ रागसारंग ॥ मैयामोहिं दाऊने बहुत खिजायो । मोसोंकहत मोलको लीन्हों कब यशुमति तोहिंजायो ॥ कहाकरूं या रिसकेमारे खेलनहू नाहिंजात । पुनिपुनि कहत कौनहै माता कौनहै तेरोतात ॥ गोरेनंद यशोदा गोरी तुमकत इयामशरीर । तारीदैदै ग्वाल हँसतहै सीखदेत बलवीर ॥ तूमोहीको मारनसीखी दाउहि कभूं न खीजै । मोहनको मुख रिस समेत लखि सुनिसुनि यशुमतिरीझै (यशोदा बचन) सुनों कान्ह बलभद्र चवाई जन्महीकोवहधूत । सूरदास मोहिं गोधन कीसों होंजननी तूपूत २१ ॥ लावनीचन्दाखिलौना गणेशप्रसादकृत ॥ बिश्वपालक बालक नंदनन्द । खिलौनामांगै मोहनचन्द ॥ धन्य ब्रज गोकुलके बासी । लखैप्रभु लीला सुखरासी ॥ कला पूरण पूरणमासी । चन्दछबि छायरही खासी (दोहा) नंदमहरिकी मोदमें खेलत मदन गोपाल । निरखि नखत पतिउदित मध्य नभ मचलिगये प्रभुहाल ॥ रहीं समुझाय माय हरिचन्द । खिलौना मांगै मोहनचन्द १ आयजा चन्दकहै मैया । बुलावै मेरो कान्हैया ॥ बालहटको को समुझैया । चलैएकौनहिं चतुरैया ॥ (दोहा) गोदउलावै माकहै लेचकई सुतश्याम । विविधभांति तसबीर खिलौना लेआई ब्रजबाम ॥ कान्ह एको नहिं करत प-

सन्द। खिलौना मांगै मोहनचन्द २ न आवै कुँवर कान्ह कनियां। बिफरफारै डारै तनियां ॥ जायबलिबलि गोरीं धनियां। बलैयालेय नन्द रनियां (दोहा) रोवतहरि लोटतमही रहेनन्द समुझाय। बाल मुकुन्द कहींनहिं मानत करिये कौन उपाय ॥ बिकटहट कीन्हों परमानन्द। खिलौना मांगै मोहनचन्द ३ यशोमति जब दर्पण लाई। पड़ो प्रतिबिंब चन्दआई ॥ निरखिताकी सुन्दर ताई। लगेप्रभु खेलन हरषाई (दोहा) करत बाललीला प्रभू जनजननी सुखहेत। कह गणेश दिनरैन बसौ मम नैनन कृपा निकेत ॥ भक्तिबर दीजै आनंद कन्द। खिलौना मांगैमोहनचन्द २२ ॥ रेखता ॥ महबूबखूब प्यारे चेटक चितैकियो है। सोहैबसंती चीरा छबिपेच ललितहीरा भूमैअधरको मोती छबि अद्भुततैं दियोहै ॥ चलता अजूबचालै लोचनअरुणतलालैं योबन जुलम बिहारी टोनास क्याकियोहै। घूमति फिरैं दिवाने साधू सबै लुभाने नयनोंचढ़ी खुमारी प्याला बिषका पियोहै २३ ॥

इतिश्री चन्द्रखिलौनालीलासम्पूर्णम् ॥

अथ प्रथम माखनचोरीलीला ॥

रागगौरी–श्रीठाकुरजी वचन ॥ मैयारी मोहिं माखन भावै। जो मेवा पकवान कहततूं मोहिं नहीं रुचिआवै ॥ सखीवचन ॥ ब्रज युवती इकपाछे ठाढ़ी सुनति श्यामकी बात। मन मन कहत कबहुं अपने घर देखौं माखनखात ॥ बैठैं जाय मथनियाके ढिग मैं तबरहौं छिपानी। सूरदासप्रभुअन्तरयामी ग्वालिन मनकी जानी १ ॥ रागगौरी–श्रीठाकुरजी वचन ॥ गये श्याम तिहिं ग्वालिन के घरैं। देख्योंजाय द्वार नहिंकोऊ इत उत चितै चले तबभीतर ॥ हरिआवत गोपी जबजान्यों आपुनरही छिपाय। सूनेभवनमथनियां के ढिग बैठिगये हरषाय ॥ माखन भरी कमोरी देखी लै लै लागे खान। चितैरहे मणि खंभछांहतन तासौं करत सयान ॥ प्रथम आजुमैं चोरी आयो भलो बन्यो है संग। आपु खात प्रतिबिम्ब खवावत गिरत कहत कारंग ॥ जो चाहौ सब

लेउ कमोरी अतिमीठो कतडारत। तुमहिं देखिमें अतिसुखपायो तुम जिय कहा बिचारत॥ सुनि सुनि बात श्यामके मुखकी उमँगि हँसी सुकुमारी। सूरदास प्रभु निरखग्वालि मुख तब भजिचले मुरारी २॥ रागगौरी-सखीवचन॥ फूली फिरत ग्वालि मनमेंरी। पूंछति सखी परस्परबातें पायो परंउकछुकके तैंरी॥ पुलकित रोम रोम गद गद मुखबाणी कहततन आवैं। ऐसो कहा लहासो सखीरी मोसों क्यों नसुनावै॥ तनुन्यारोजी एकतिहारो मारोहम तुम एकैरूप। सूरदास योंकहै ग्वालिनी सखीदेख्योंरूप अनूप ३॥ रागगूजरी--सखीवचन॥ आजु सखी मणि खंभ निकट वीरजहँ गोरसकीखोरी। निज प्रतिबिम्ब सिखावतयों शिशुप्रकट करै जिन चोरी॥ अर्ध भाग आजूते हमतुम भली बनीहै जोरी। माखन खाहु कताहि डारतहो छांडि देहु मतिभोरी॥ हिस्सा लेन सबै चाहतहौ इहूबात है थोरी। मीठो परम अधिक रुचि लागै तो भरीदेउँ कमोरी॥ प्रेम उमंगि धरिज नरहेउ तब प्रकट हँसी मुखमोरी। सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंजकी ओरी ४॥

इतिश्रीप्रथममाखनचोरीलीलासम्पूर्णम्॥

अथ द्वितीय माखनचोरीलीला॥

रागबिलावल--श्रीठाकुरजीवचन॥ ग्वालिनि घरगये श्यामसांझकी अँधेरी। मंदिरमें गये समाय श्याम बदन लखिन जाय देहमेह रूप कहौ को कहे निबेरी (सखी बचन बार्ता। अरीबीर देखतो सही यह कौन मेरे घरमें घुस्योहै चार भुजाको आदमी--हँम्वै सखी आऊंहूं दिया बारलै) दीपक गृह दान करेउ भुजा चार प्रकट धरेउ देखत भई चकृत ग्वालिन इत उतको हेरी॥ श्याम हृदय अति बिशाल माखन दधि बिन्दुजाल मनमोहेउ नन्द-लाल बालकही बेरी। युवती अति भई बिहाल भुजा देखि अंकमाल सूरदास प्रभु कृपाल डारेउ तन फेरी १॥ वार्ता॥ जब सखीने देख्यो कि ये तो श्रीठाकुरजीहैं तब हँसिके हाथ पकरि

लियो और कह्यो कि तुमने या व्रजमें बड़ी धूम मचाईहै आज मैंने तुमको पकरि पायो अबमें यशोदा मैयापै लैचलूंगी तब श्री ठाकुरजीने कही अरी सखी आजते मैं चोरी अब न करूंगो,तब सखीने कही मैं नांय मानूं तुम बड़े छलियाहो मैंतो लैचलूंगी तब कही चललेचलसखी तब सखी हाथ पकरिकेलेचली २॥राग जैजैवन्ती--सखी वचन ॥ करसोंकरलै लगाय महरिपैगईलिवाय आनँद उर न समाय बातहै अनेरी (अरी यशोदा रानी देख मैं तेरे लालाको पकरिलाईहूं तू हरदम कह्यो करै कि मेरो लाला चोरी नांय करै) यशुमति तू देखि आनि आगेहैले पहिचानि बहियां गहिल्याई कुंवर आनिहै कि तेरो। अबलौ मैं करी कानि सही दूध दही हानि अजहूं जिय जानि मानि कान्हहै अनेरो॥ दीपतहौं धरेउ बारिदेखत भुजभईचारि हारीहौं धरति करतिदिन दिनको भेरो। दिखियतनाहिं भवन मांझ तैसोई तन तैसी सांझ छलसों कछुकरत फिरत महरिको जठेरो॥ गोरसतन छीटि रही शोभा नहिं जात कही मानों जल यमुन बीच उड़गण पंथ फेरो (यशोदा बचन--अरी सखी तोय कछु दीखैहै कैनाहिं यह मेरो लालाहै कै काहूकी कुंवरि पकरिल्याई तेरी हिये कपारकी फूट गई--सखी बचन--अरी बीर मैंतो लालाहीको लाईथी बीच में लालीहोयगई तो मैं काकरूं) उरहन नहिंदेहुं काहि काहि तू इतनो रिसाय नाहीं व्रजबासी सुत ऐसी बिधि मेरो। यशुदा निरखे कुमार गोपी बरणेबिहार भूली भ्रमरूप मानों आनिकोउ हेरो॥ मनमें बिहँसत गोपाल भक्तपाल दुष्ट शाल जानेको सूरदास चरित कान्ह केरो ३॥

इति श्री द्वितीय माखन चोरी लीला सम्पूर्ण॥

अथ उरहनो लीला॥

वार्ता॥ सखीवचन॥अरीसखी। कहाकहै सखी। अरीबीर चल श्रीठाकुरजी के दर्शन करआवें और यशोदा मैयापै उरहिनो दे आवैं। हम्है बीर चल। सबसखी मिलके यशोदाकेइहां पहुंचीं।

अरीयशोदा अरीयशोदा यहकौनहै मेरेपिछवारे पहरुवासी देरही है। हम्बैबीर तेरे पिछवारे तौ नांयहूं हौंतौ तेरेअगवारे। कहुबीर कहाकहेहै। अरीतू जे अपनो गामलै हमनांयरहैं तेरेगाममें क्यों बीर। अरी तेरो लाला हमारे बड़े बड़े जानकरैहै याते अब ब्रज में कैसेबसें१॥ रागझझोटी-सखीवचन॥ ब्रजमें कैसे बसैंरी माई। जहँ नितप्रति उत्पात करतुहै तेरो कुंवर कन्हाई॥ भोरही मैं सोवत अँगनामें औचककही जगाई। उठरी सखी तोय द्वारपै टेरत कोऊ एक लुगाई॥ मैंजो द्वारपै देखननिकसी कोहै कहां ते आई। पछितै इन घरभीतर सों सांकर तुरत लगाई॥ हम बाहिर ये भवन माहिं मनमानी धूममचाई। बासनफोरि तोरि सब छींके दधि गोरस ढरकाई॥ यह कौतुक सुनिकै ब्रजबनिता निरखनकोसबधाई। हँसि हँसिकै मिलि बूझतमोसौं कहा लीलाफैलाई॥ भांति भांतिकी बोली बोलत जो जाके मनभाई। मैं अपने मनकहूं नारायण यह कहा कुमति कमाई २॥वार्ता॥ (यशोदा बचन)अरेलाला तै काहेको नितप्रति ऊधम करै है मैं तोते कईबार कही तै मेरो कहनो सांचनांय माने लेअब सुनले अपने कानते ३॥ रागकालिंगड़ाधीमाताल-यशोदावचन॥ मोहन तू इतनी कहीमान। बाहर मतिउरझै काहूसों मेरेजीवन प्रान॥ ब्रजबनिता तेरे गुण मोसों नितप्रति करत बखान। मेरो कह्यो जो सांच न मानै सुनले अपनेकान॥ इनबातनसों निन्दाउपजै ठकुरायतमें हान। नारायण सुत बडेबापके तजिदे ऐसीबान ४ श्रीठाकुरजीवचन॥ वार्ता॥ सुन मैया मैं तोतेकहूं—कहलाला ५ रागबिलावल॥ सुनमैया याकेगुण मोसों इनमोह लयोबुलाई। दधिमें पड़ी सेतकी चीटी मोपैसबै कढ़ाई॥ टहल करत मैंयाके घरकी यहपति संगलै सोई। सूरवचन सुन हँसी यशोदा ग्वालि रहीमुंहगोई६॥ रागजोगिया आसावरी-सखीवचन॥ वार्ता॥ (अरीबीर तैं मेरोन्यावकरदेनहींतो मैंगारीदूंगी)७हमारोन्यावकरोमहतारी। याब्रजमें प्रगटयोउत्पाती तेरोछैलबिहारी॥ जोतुम सुतकी ओर

करौगी हमहूं हैं ब्रजनारी। कबौहमारोदांवलगैगो समभैंगीगिरि-धारी॥ तुमराजा अपनेघरकेहौ हमैं न कानतिहारी। एकगारि बद-ले नँदरानी लाखन देंगीगारी॥ तुमनहिं बरजत मनमोहनको हम कहतीं नितहारी। नारायण कछु जानिपरतु है एकसलाह तिहारी ८॥ कवित्त-यशोदावचन॥ वार्ता (अरीसखियो गारी ना दीजो-ये लाला मैंने बड़े भाग्यते पायोहै जेको जितनो दहीदूध खायो होयसो मोते सबलेजाव) प्यारेकी कोमलसुनि कसकी कलेजेमाहिं जीवनहै मेरोकान्ह कहाकर आयो है। मोसों कहो कोटिक कछू न कहो बालकसों केतोदुख देखदेख कैसेकर पायो है॥ माखनको माठलैकै द्वारपै महरि बैठी तौलितौलि लेवबीर जाकोजेतो खायो है। गोरसके काज ग्वालि गोदहू पसारतिहूं गारीमतिदेहु मोंगरीबिनीको जायो है ९॥ रागदेश॥ गारीमत दीजो मोंगरीबिनीको जायोहै॥ तेरोजो बिगारयो सोतो मोसौं आनकहौबीर मैंतो काहूबातको नहीं तरसायोहै। दधिकी मटु-किया भरी अँगनामें आनधरी तोलतोल लीजोबीर जेतोजाको खायोहै। सूरदासप्रभु प्यारे नेकहूनहूजे न्यारे कान्हसों सपूत मैंने बड़ेपुण्य पायोहै १०॥ रागसारंग-ग्वालिनवचन॥ वार्ता (अरी बरितै अपनेढोटा काहेनांय बरजै) यशुमति अपने गोपालहिं बर जति क्योंजुनहीं। कहाकरै दिनप्रतिकी बातैंनाहीं परत सही॥ माखनखात दूधलैढारत लेपतदेहदही। तापाछे घरहूके लड़िक-नमारत छिरकमही॥ जो कछु धरहिंदुरायलै जानत तहीं तहीं। सुनहु महरि तेरे यासुतसों हम पचिहारि रही॥ जब बनजाति छिड़ाय मटुकिया रुचि रुचि बातकही। अपने जियके डरते तब जो जो कछु कही सो सही॥ चोरी अधिक चतुरई सीखी जाहि न कथा कही। तापर सूर बछरुमनि ढीलत बन बन फिरत बही ११॥ रागरामकली-श्रीठाकुरजीवचन- वार्ता॥(अरीमैया मैं नाहीं याको दधि खायोहै यातो झूंठही लगावै है) मैया मेरी मैं नाहीं दधि खायो। भोरभयो गैयनके पाछे मधुबन मोहिं पठायो। चार

पहर बंशीबट भटक्यों सांझभये घरआयो ॥ मैं बालक बैंयनको छोटो छींके किसविधि पायो। ग्वाल बाल सब बैर पड़े मेरे बरबस मुख लपटायो ॥ तू जननी मनकी भोरी अति इनके कहे पतियायो। तेरे जिय कछु भेद उपजतुहै जान परायो जायो ॥ यहलै आपनी लकुट कमरिया बहुतक नाच नचायो। सूरदास तब हँसी यशोदा लै उर कंठ लगायो १२ ॥ रागकान्हरो-यशोदावचन ॥ अब ये झूंठेई बोलत लोग। पांचबरस अरु कछुक दिनन को कब भयो चोरी योग ॥ यहि मिसि देखन आवति ग्वालिन मुँह फाटे जुगँवारि। अनदोषेको दोष लगावति दई देइगोटारि ॥ कैसेकर याकी भुज पहुंची कौनबेग ह्यांआये (ग्वालिनवचन) ऊखलऊपर आनि पीठधरि तापर सखा चढ़ाये ॥ जो न पत्याहुचलौ संग यशुमति देखौ नयन निहारि। सूरदास प्रभु नेकु न बरजौ मनमें महरि बिचारि १३ ॥ दोहा ॥ करतफिरत उतपात अति सब ब्रज घर घर जाय। नितउठि खेलत फागसी गरियावत न लजाय १४ ॥ रागपीलू-सखीवचन-वार्ता ॥ (अरी बीर जो अपनो गामले हम अनतहिं जायके बसैंगी) अपनो गांवलेउ नंदरानी। बड़े बापकी बेटी ताते पूतहि भले पढ़ावत बानी ॥ सखा भीरलै पैठत घरमें आपु खाय तो सहिये हानी। मैं जब चली सामुहे पकरन तबकेगुण काकहौ बखानी ॥ आवत जान भाजिगये मोहन मैं अपनेघरपौढ़ी आनी। सूरश्याम बैनी धर बांधी पाटीसौं मोहिं सोवत जानी १५ ॥ रागनट-यशोदावचन ॥ यशुमति यह कहिके रिसयावति। रोहिणी करति रसोई भीतर कहि कहि तिनहिं सुनावति ॥ गारीदेत बहू बेटीको वे धाईं यहां आवति। हा हा करति सबनिसों मैंही कैसेहू खूंट छुड़ावति ॥ जाति पांतिसों कहा अचगरी यह कहि सुतहि धिरावति। सूरश्यामको सिखवति हारी मारेहुं लाज न आवति १६ ॥ रागझझोटीतीनताल-श्रीठाकुरजीवचन ॥ मैया मोहिं झूठेहि दोष लगावै। बूझले मेरे सखा संगके जो तोहिं सांच न आवै॥

भवनरहौं तो तूही कहैगी गोचारन नहिं जावै । जो जाऊं तो यह मग छेड़ै फेर उरहनोलावै ॥ त्रियाचरित्ररचै ढिगतेरे तोरि कै हार दिखावै । तू जननी मेरी अति भोरी याकेकहे पतियावै ॥ कित गजराज कहां मृगछौना अनघट मेल मिलावै। नारायण मोहनमुख बातैं सुनि यशुमति मुसकावै १७ ॥ रागखम्माचतीनताल-यशोदावचन ॥ ग्वालिन रूपके मद इतरावै। तू अति तरुणि मेरो सुतबालक नाहक दोष लगावै ॥ तूहीं नई भई योवनवारी नेकलाज नहिं आवै । नारायण अबजा घर अपने क्योंतू बात बनावै १८ ॥ रागधनाश्री-सखीवचन ॥ भाजिगयो मेरो भाजनफोरी । लरिका सहस एकसंगलीन्हें नाचत फिरत सांकरीखोरी ॥ मारगतौ कहुं चलननपावै धावत गोरस लेत अजोरी । सकुच न करत फागुसी खेलत तारीदेत हँसत मुखमोरी ॥ बातकहूं तेरे ढोटाकी सब ब्रजको बांध्यो प्रेमकी डोरी। टोनासों पढ़ि नावत शिरपर जो भावैसो लेतहै छोरी ॥ आपुखायँतो सब हम मानैं औरनिदेत सिकहरे टोरी। सूरसुतहि बरजो नँदरानी अबतोरत चोली बँदडोरी १९ ॥ रागनट-यशोदावचन ॥ अनतिसुत गोरसको कतजात । घरसुरभी नवलाख दुधारी और गनीनहिं जात ॥ नितप्रति सब उरहनके मिसमैं आवतिहै उठिप्रात । अनलहते अपराध लगावति बिकट बनावतिबात ॥ निपट निशंक बिबादनि सनमुख सुनिमोहिं नन्द रिसात। मोसो कृपिणि कहत तेरेघर ढोटाऊं न अघात ॥ करि मनुहारि उठाय गोदलै बरजत सुतकोमात । सूरश्याम नित सुनत उरहनो दुखपावत तेरोतात २० ॥ रागसोरठा-यशोदावचन ॥ तोय बारबार समझायो । नितनये उरहने लायो ॥ एकसमय कालिन्दीके तट बकुल उदर बैठायो। ग्वालबाल गौवनके पाछे बिधनातोहि बचायो ॥ नौलखधेनु नंदबाबाके चोरपरायो खायो। तनक दहीके कारण मोहन माखनचोर कहायो ॥ एकसमय कालिन्दी कूद्यो बिषधर अँग लपटायो । पैठपताल कालियाना-

थ्यो फनपर नृत्य करायो ॥ हाथलकुटिया कांधे कमरिया नन्द बाबागृह आयो। सूरदास आशा चरणनकी यशुमति कंठलगायो २१ ॥ रागरामकली-श्रीठाकुरजीवचन ॥ मैया मैं नाहीं माखन खायो। ख्याल परेये सखा सबैमिलि मेरेमुख लपटायो ॥ देखु तुहीं छींकेपर भाजन ऊंचेधरि लटकायो। तुहींदेख नान्हें कर अपने मैं कैसे सोपायो ॥ मुखदधिपोंछि बुद्धियक कीन्हीं दोना पाछेदुरायो। डारिसांटि मुखचूमि यशोदा श्यामहिंकंठलगायो॥ बालबिनोद भावकरि मोहन मातामनहिं रिझायो। सूरदास यह यशुमतिकोसुख देवनदुर्लभगायो २२ ॥ रागकान्हरो-यशोदावचन ॥ करतकान्ह ब्रजघरनि अचगरी। खीझति महरि कान्हसों फिरि फिरि उरहनलै आवतिहैं सगरी ॥ बड़ेबापको पूत कहावत हमवै बास बसतएकही नगरी। नन्दहुते ये बड़े कहे हैं फेरिबसै हैं यह ब्रजनगरी॥ जननीकेखिझत हरिरोये झूंठहिंदोष लगावत धँगरी। सूरश्याम मुखपोंछि यशोदा कहतिसबै युवतीहैं लँगरी २३ रागमलार--यशोदावचन ॥ देत उरहनो लाज न आई। मेरोलाल ब्रजभरमें भोरो नेक नहीं जानत चतुराई ॥ सुनि यशुमति के बचन हँसीं सब निज निज भवन चलीं हरषाई। नारायण लखि चरित श्यामके ब्रह्मादिककी मति बौराई २४ ॥ रेखता॥ मनमोहनी मनमोहना मनमोहिबोकरौ। मुख चन्दचख चकोर सदा जोहिबोकरौ ॥ घनश्याम रसिक नागर तुमहोंजू कामिनी। तजि मान अधर पानकरौ जात यामिनी ॥ अपराधनहीं पिया मैं कछु भूलतूंगई। प्रतिबिम्बदेख आपनो सखी पीठक्योंदई ॥ समुझायकही भगवत जबलाग कानसों। सुखदान उठीआतुर भेंटी सुजानसों २५॥ इतिश्रीउरहनोलीलासंपूर्णम् ॥

अथ तृतीय माखनचोरीललिा ॥

(बार्ता सखी बचन) अरीबीर कबहूं हमारेहु ऐसे भाग्य होंगे कि श्री ठाकुरजी महाराज हमारे घरआवैंगे-- सखी बचन-- अरी बीर तू उनको भजन उपासना करैगी तो वोक्यों नहिं आवैंगेवो

तो प्रेमके भूखे हैं ७१ ॥ रागरामकली–सखीवचन ॥ सखीरी मोहिं हरि दरशनको चाव । वा सांवरेसों प्रीति बाढ़ी लाख लोग रिसाव ॥ श्याम सुन्दर कमल लोचन अंग अंग नित भाव । सूर हरिके रूप राची लाज रहे चाहै जाव २ ॥ कवित्त–सखी वचन ॥ धेनुके चरैया प्यारे भैया बलभद्रजूके नंदके ललैया मेरे अंगनामें आवरे । दही दूध बहुत प्याऊं माखन घनोसो लाऊं मीठी मीठी तान नेक गायके सुनावरे ॥ नन्दजूके किशोर मेरे चित्तहूके चोर नेकतो अधर धर बांसुरी बजावरे । या छबि ऊपर कोटि काम वार डारों दया सखी प्रेम बश हियेमें समावरे ३ ॥ कवित्त–सखी बचन ॥ आयकर सांवरे इन गलियोंमें झूम झूम सांझ औ सवेरे कभी दरश तो दिखायाकर । जायाकर यमुनाके तट नितरोज रोज बंशी अनोखी इकलहजातो सुनायाकर ॥ कादर कहै छायाकर नैनों बीच मेरी आय रूखा सूखा थाल हम गरीबों का पायाकर । खाया कर माखन मलाई दूध लूट लूट करके आराम मेरे हिये में समाया कर ४ ॥ कवित्त-सखीबचन ॥ चीरा की चटक औ लटक नव कुंडल की भौंह की मटक मोहिं आंखिन दिखावरे । आदिल सुजान गुणरूप के निधान कान्ह बांसुरी बजाय तन तपन सिरावरे ॥ एहो बनवारी बलिहारी जाऊं तेरी आज मेरी कुंज आउ नेक मीठी तान गावरे । नन्द के किशोर चित्तचोर मोर पंखवारे बंशीवारे सांवरे प्यारे इत आवरे ५ ॥ रागपीलू–सखीवचन ॥ बंशीवारे तू मेरीगली आयजारे । तेरेबिन देखेमुँह कल न परतुहै टुकमुखड़ा दिखलाय जारे ॥ रैनदिना मोहिं ध्यान तिहारो बंशीकी टेर सुनाय जारे । चरणदास सुखदेव दयासों मेरोहि माखन खाय जारे ६ ॥ राग बिहागरो–समाजीवचन ॥ अचानक आय गये तहँ श्याम । कृष्ण कथा सब कहति परस्पर राधा मिल ब्रज बाम ॥ मुरली अधर धरे नटवर बपुकटि काछनी परवारों काम । सुभग मोर चन्द्रिका शीश पर आयगये पूरण सुखधाम ॥ तरु तमाल तर तरुण

कन्हाई दूरि करन युवती तन काम। सूरश्याम बंशीधुनि पूरत राधा लै लै नाम ७ ॥ वार्ता ॥ (श्री ठाकुरजी बचन) अरी ललिता सखी--कहा कहो हो श्री ठाकुरजी महाराज—गैयन पै ते आये हैं बेर होय गईहै भूँख लगरहीहै नेकमाखन होय तो दीजो। आइये महाराज बैठिये बिराजिये माखन लीजिये मिसरी लीजिये जो चाहो सो लीजिये। दे सखी। लेव महराज। अरी सखी यहतो खट्टो है ॥ अरी विशाखा सखी। कहा कहो हो श्रीठाकुरजी महराज। अरी गैयनपै ते आयेहैं भूँख लगरही है नेक माखन होयतो दीजो। आइये बैठिये बिराजिये माखनलीजिये मिसरीलीजिये जो चाहो सो लीजिये। देसखी। लेउ महाराज। अरी सखी या में तो पानी मिलो है—अजी श्री प्रिया जी। कहा कहो हो श्री लाल जी महाराज। गैयनपै ते आये हैं भूँख लगरही है जो नेक माखनहोय तो दीजो। आइये बैठिये बिराजिये माखनलीजिये मिसरी लीजिये जो चाहिये सो लीजिये। यहां ही न लेयँगे तो फिर कहां लेयँगे ॥ देव प्यारी। लेव प्यारे। अहा ये तो बड़ो मीठो है। नेकऔर देजो। लेव प्यारे ८ ॥ रागरामकली—श्रीठाकुर जीवचन ॥ राधा सों माखन हरि मांगत। और न की मटुकिन को चाख्यो तुम्हरो कैसो लागत (श्री प्रिया जी बचन) लै आई वृषभान नन्दनी सदलोनी है मेरी। लै दन्हिीं अपने कर हरि मुख खात अल्प हँसि हेरी (श्री ठाकुरजी बचन) सब दिनसों मीठो यह दधिहै मधुरेसुर कहेउ सुनाई। सूरदास प्रभु सुख उपजायो ब्रज ललना मन भाई ९ ॥ वार्ता ॥ अरी प्यारी जी नेक और दीजो ये तो अतिहीमीठोहै- प्यारेजी अबनाचोगे गावोगे तब मिलैगो अच्छो प्यारीजी १० ॥ रागबिलावल—समाजीवचन ॥ आज नटवर नाचत संगीत। अहि बिबिध भांत गति नई नई ॥ बजत मृदंग सरस भेदनसों ताधिकत धुमीकिट तकिट तकाकिट तकिधिलंग तक धुम किट धिधिकिट धाधिधि किट धाधिधिकिट किट धाकिट धाथेई थेई। तापर पगनूपुर धुनि बाजत थिरे

थिरें थिंङ निंग निंग निंग निग निंग निंग निंग फिर चितवत आ नन्द मई ॥ अवलोकन मुसक्यान परस्पर दिग दिग दिग तान तान थो दिग दिग दिग तान तान थो दिग तान दिग दिग दिग दिग थेई थेई ११ समाजी बचन-टेक ॥ माखनकीचोरीरे वैयामाखन कीचोरीरे तुमकरनलगे चित चोरी लाल माखनकीचोरीरे (कबित्त) दीनहूके बंधु ग्वाल मोचो दुख ततकाल अबिनाशी नंदलाल वेदनमें गायेहैं। गावतहै नेति नेति नेति कह पुकारेंबेद शेषकेसहस्त्र मुख पार नहीं पायेहैं ॥ ब्रह्मासे आदि सनकादि जाको धरैंध्यान शंकर समाधिलाय हीयमें बसाये हैं। कहत कृष्णदास देखो भाग ब्रज ग्वालिनीके ऐसे घनश्याम दै दै माखनही नचाये है १२ सवैया ॥ जुगताधर ध्यान रहे जिनको तपसी तनगारकै खाकरमावै। चारोही बेद न पावत भेद बड़े तिरवेदी नहीं गति पावै॥ स्वर्ग और मृत्यु पातालहू में जाको नाम लिये ते सभी शिरनावैं॥ चरणदास कहै ताहिगोपसुताकर माखनदैदै नाचनचावैं १३ शंकरसे मुनि जाहिंरटैं चतुरानन चारोही आनन गावै॥ जो हिय नेकही आवतही मतिमूढ़ महारसखान कहावै॥ जापद देव अदेव भुजंगम वारत प्राणन पार न पावै॥ ताहि अहीर की छोहरिया छछियाभर छाछपै नाच नचावै १४॥ कवित्त॥ ब्रह्माहूके ध्यानमें न आवैकभूं एकछिन शंकरसमाधिलाय ध्यान धरत गाढ़ोहै। ऋषी और मुनी जाको रैनदिन धरैं ध्यान ध्यान में न आवै कभूं तालोंहित बाढो है॥ सोईहै निरंजन जाकीमाया को न आवै अन्तध्यानी ध्यानलाय रहत सहत धूप जाडोहै॥ देखोरीभाग्य ब्रजबनितनके आज आलीहैकै अनन्त नवनीत मांगै ठाडोहै १५ जाके पद परशनको तरसतहै विश्व ब्रज ग्वालनको खेल मांभ कंधन चढ़ायेहै। जाकी माया सुर नर मुनि बांधराखे यह तो सोई नागर यशुदापै ऊखल बंधायेहै॥ जाको देव यज्ञमें बुलावै नाहिं आवै सो तो नंद एक थारमांझ जेमके सिहायेहै। जाने तैंनचाये मईदार ज्यों पुतरी सो प्रेमबश गोपिनके हियमें

समाये है १६ ब्रजकी अहिरनीके भाग देखौ भैया देवनाको देव केसी सेवनाकर पायोहै। शिव विरंचि जाकोपार नहीं पावैं गोकुल की नारी दै करतारी सो नचायोहै ॥ नारद तुम्बरु पढ़ सुनि पचहारे व्यासजूकी बानी भी विमल यशगायोहै। कहत रणधीर भागभले अहीरनीके प्रेमको पयोधि ब्रजबीथिन बहायोहै १७ सखी कोई कहै नेक लाला मेरे आंगन नाचनो न मिली छांछदूंगी अच्छीसी धुआरके। भोरभयो वाकेगयो वासों मोसों बैरभयो धींगीसी गुजरियाने आयलियो धायके ॥ खिरक सब तोड़डारे वासन सबफोरडारे दूध ढरकायदियो बंदरा बोलायके। नंदरानी मुसकानी कछूकछू सकुचानी सूरश्याम धायलियो मूंढ़पै चढ़ायके १८ ॥ वार्ता श्रीठाकुरजी वचन ॥ हे प्यारीजी अबतो नाचलियो अबतो देव माखन अरे प्यारे कछू गावतो। जो आज्ञा १९ ॥ रागबिलावल-श्रीठाकुरजीवचन ॥ सांवरो मुरली अधर धरे। अहिनृत्य करत छुमछननननननन नटवर भेषकरे ॥ सारिगम पधानिसा धाधाधाधा निसापामागामारेसा गागागागा गरे। सांवरो मुरली अधर धरे २० ॥रागध्रुपद॥ चतुरंगरस गुणियन गाइये चतुरंगरस गुणियन गाइये। गाइये बजाइये सबनके आगे बड़ेबड़े गुणनकी बातरे॥ सारिगम पद्धानि सा ससस मगा रे सासारी गामापारे साये चतुरंगरस गुणियन गाइये २१ ॥ वार्ता ॥ श्रीठाकुरजीबचन ॥ अरीसखी अबतो नाचलीन्हीं गालीन्हीं अबतो दे माखन। महाराज कहांनाचे। अरी सखी तेरे आंगनमें तैं कहां गईहुती। मैंतो यमुनाजीपै जल भरबे गईहुती। तोचल माखनतो दे। महाराज मैं एकबात पूंछलूंगी तब माखन दूंगी। सखी पहिले माखन देदे पीछे एकबातके बदले दो बात पूंछलीजो। नहीं महाराज पहिले पूंछलूंगी पीछे दूंगी। अच्छो सखी मैं माखन खातजाऊं तू बात पूंछतीजाय। न मैंतो पहिले पूंछलूंगी तब पीछे दूंगी। अच्छो सखी पूंछ। महाराज तिहारी यशोदा मैया गोरी, नन्दबाबा गोरे, बलदाऊ भैयागोरे तुम कैसे

कारेभये मोल कैसे लीन्हें । सुनसखी तेरी माकारी तेरो बाप कारो तेरो भैयाकारो तेरो ताऊकारो तेरीसासु कारी तेरो ससुर कारो तेरो खसमकारो तू कैसी चन्दाकीसी उजरी पैदाभई मोल कैसी लीन्ही । जाउ महाराज अबनहीं दूंगी । अच्छो सखी देख लेंगे । जा देखलीजो ॥ अरीबिशाखा सखी । कहाकहो महाराज । अबतो माखनते देख तेरे आंगनमें नाचदियो गादियो । महाराज मैंतो गोबर थापबे गईहुई आप कौनके सामने नाचेगाये । अरी सखी माखनतो देसही । महाराज मेरी सासु साठिलोंदी गिनके रखगई है । तो सखी उनमेंते थोड़ोथोड़ो ददे । महाराज मेरी सासु लड़ैगी, जाव इहांते नादूंगी ॥ अच्छो ठंगो देखलेंगे यह सबमाल चोरीमें जायगो बोलूं मनसुखै । जाबोल लीजो २२ अरे मनसुखा, मनसुखा । कहाकहो श्रीठाकुरजी महाराज । अरे नेक इतैतो आ । आयोदादा आयो । अरे सारे सुन एकबात तोते कहें । कहदादा ।चोरी करबे चलेंगे । धासारे यह बात तौ मेरे बाप दादासे नायँहुई । तोसारे अबतो करेंगे । तौदादायामें कहा होयहै । अरे सारेबड़े बड़ेमाल चुरावेंगे खायँगे फूल फूलके कुप्पा होंयगे औरहाथ हाथकी चोटबिाढ़ै । तोदादामें तोईते लड़ोंगो । हां सारेलड़ियो । ओहो लालके चोरी को जायँगे ओहो लालके चोरीको जायँगे । अरेदादा पिटैंतो नायँ । अरेसारे हाथआयजायँ तौ पीटेहुंजायँ । तो जा सारे हम नायँ जायँ । अरे सारे चल ना पिटैगो । तो अच्छो दादा पहिले बटकरले । अच्छो सुनसारे नौबटकरैंगे आठहम लेंगे एकतोकूं देइँगे । जासारे हमनायँजायँ । अच्छो सारे तू करले । सुन दादा चारबट करूंगो साढ़ेतीन तो मैं लूंगो आधो तोकूं देंगे । जा सारे । अच्छो दादा मैं बट फट तो जानूं नायँ जितनोमोते खायोजायगो उतनो खाऊंगो बाकी बचोबचायो अपने लड़केबालोंको लेतोआऊंगो । अरे तेरे लड़के बाले कहांहैं । यह सब बैठेहैं देख दादा । अच्छो जासारे पहिले देखआं सखी सोती है कि जागतीहै । अच्छो दादा जाऊं । का-

नावातूतू—कानावातूतू। अरे दादा सब सखी सोवैहैं। तो चल सारे। छीं। अबतो नाजाऊंगो दादा। क्यों सारे। छींकहुई है। अच्छो सारे फिर देखआ। जाऊंदादा। टिरफिस भैंय भैंय टेंय टेंय फुरे। अरीसखी देखतो घरमेंकौनहै और कहा गिरयोहै। अरीबीर कछू नायँहै सेवा कुंजको नकटा बंदर होगो। सो रौ सखी। सेवा कुंजको नकटा बंदर नायँहै हौं तो तेरो खसमहूं। धकबिडांग धक बिडांग हो हो हो। अरे सारे का भयो। अरे दादा कछू पूछोई नायँ। अरे सारे कहुतो। अरे दादा धक बिडांग धक बिडांग मेरे पीछे पर गई। अच्छो सारे देखतोआयो। हां दादा देख आयो सखी सब सोवैहैं और बड़े बड़े माठ दूध दही माखनके भरे हैं मैंने एकमेंते खायो सो बडो मीठो हो॥ जा सारे नायँ जायँ तैंने सब जूठो करदियो। ना दादा या हाथते लियो या हाथते खायो। अरे सारे तोय कछू सगुन भये। हां दादा बड़े भारी सगुन भये। कैसे। पहिले जो मैं गयो तब बायें ओरते एक तितरीयों कहरही थी कि पिटैगे पिटैगो मैंने कह्यो मैं तो नायँ पिटौंगो तूही पिटैगी फिर मैं जो सुरसाधिके गयो तो दहिने ओरते एक तीतरयों बोल्यो फतेहै फतेहै मैंने जीमें यों कह्यो कि मेरीतो सदाहीकी फते है। तौ सारे चल। अच्छो चलो (पांयनकी घुंघरू बाज उठी झुन झुन) जा सारे मैं नायँ जाऊं। क्यों सारे॥ यहजो तिहारे पैरकी घूंघरू बाजै है इनकी आवाज सखियनके कानमें पड़ेगी सखियां जाग उठेंगी पकड़ जाउंगो तो पिटौंगो इनको पहिले उतार डारो। चल सारे दबाय रक्खोंगो। अच्छो चलो २३॥ टेक॥ माखनकी चोरी रे दैया माखनकी चोरी रे तुम करन लगे चित चोरी दैया माखन की चोरी रे २४॥ वार्ता॥ (अरी सखी। कहा कहैं बीर। सखी घर में कछु भांड़े गिरे हैं। अरी सखी देखले। अच्छो सखी। अरी कहाभयो बीर। अरी सखी मेरो तो घर लुटगयो। कैसो। जितने दूध दही के भांडे हैं सब फूटगये और दही दूध की कीच मच रही है। हम्बैबीर सांची

कहैअरी सखीमैं तो संतोष करलियो। संतोषी सदा सुखी। अरी सखी याही मनसुखा को पकरले। ऐसो मनसुखा भोरोहै जो तू पकर लेगी, (सखीने मनसुखाको पहर लियो) अरे ला.. मन सुखा तैं ने दहीको दही खायो और भांड़े के भांड़ेफोरे अरे दारी के ला मटुका कहा है। का सखी। मटुका। कैसे सखी मटुका अरेदारीके मटुका। अरेसखी वे मटुका तो मेरेपेट में गये। अरे दारीके तैंने माटी के मटुकाहू खायडारे। अरीसखी जितनो तेरे माखनमें स्वाद नहीं आयो तितनो मटुकनमें आयो। अरेदारीके लामटुका। अच्छो सखीनेक सोय रहनेदे। अच्छोसोय रहु। अरे उठदारीके मनसुखाभोर होयगयो। अरीसखी भोर होयगयो सूर्य नारायण कहाहै। ये देख। राम राम जपना पराया माल अपना लाइयो पैंदा बेटा काठकी माला माला मार भजनके ढेरकरूं। अरे दारी के पहले मटुका देदे। अरी सखी वही बात बता दे। कौन सी। अरी सखी तू कहती नहीं थी कि आउ लाला मनसुखा आउ लाला मनसुखा तोसों एक बात कहूंगी। अरे दारी के मैं ने कहा कह्योथो। अरी सखी तैंने नायँ कह्योथो आ लाला मनसुखा आ लाला मनसुखा मैं अपनी छोटी बहनकी सगाई करदूंगी सो वही बात कह सखी। ऐसो छैलहैना। सुन सखी दुनिया में च्यार हिस्सा खूबसूरतीहै तामें साढ़ेतीन तौ मैंहूँ और आधेमें सारी दुनियाहै। अरेदारीके मटुकादे मटुका। अजीसब भाइयो लोगो देखियो तो सही कोई ब्याह सगाई मत कीजो सगाई में तो चोटी बांधैहै और ब्याहमें नार बधैगी अरे दारीके अपने हिमाइती को बोल। अरी सखी मेरी हिमाइतिन तौ तूही है छोड़दे तौ चलोजाऊं। अरे दारीके ठाकुरजी को बोल। अजी श्रीठाकुरजी महाराज, श्रीठाकुरजी महाराज अरे कहाकहे है मनसुखा। अजी महाराज वोजो बरसाने वारियोंको माखन चोर चोरके खायोथो सो उन मेरी चोटी बांध रक्खीहै। जा सारे मैंने नायँ सुनी। जासारे मैंनेऊं दहकिसपट्टामें नायँसुनी।

अरे दारीके बोल अपने हिमाइतीमै । अजी श्रीठाकुरजी महाराज । श्रीठाकुरजीमहाराज । कहाकहे अरे सारे छुड़ायलै यहां मेरी गोवर्द्धन पूजाहोय रहीहै । तो सारे मैं कहाकरूं छूटआव अपने बलते बहुत चोर चोरके माखन खायो है तेरी नानीको खायो है सारे मैंने अपनीमहिनतको खायो है अरे दादाअबछुड़ाय ले । अरी सखियोयाको छोड़देव जे अपने मटुकालेउ । अयोंसखी छूटगयो तेरोयार २५ ॥ रेखता ॥ नाचत छली छबीला नँदका कुमार है । गल बांहिदे प्रियाके सुन्दर सिंगारहै ॥ इत मंद मंद झीनी नूपुर अवाज है । उतपायजेब पाइल घनकीसी गाजहै ॥ कटि कांछेनी सुचोली पटुका किनार का । दामिन सुरंगसेला कीरति कुमारिका ॥ पगियालसी कुंवरके शिरपेंच लालहै । भृकुटीलगी ललोई प्यारी के भालहै ॥ कानों जड़ाऊ झुमका गज हीरा हारहै । मोतिनकी माल सुन्दर शोभा अपारहै ॥ गुंजा गल गुणीके तर गुंज माल है । अंखियां लगीं ललासों बंशी रसालहै ॥ नासा बुलाक बेसर माथे मुकुट सोहै । प्यारीके नखछटापर रबिचन्द कोटि मोहै ॥ दोनों झुके परस्पर छबि बेशुमारहै । केशव खड़ा बिलोकै प्रानन अधार है २६ ॥

इति श्री तृतीय माखन चोरी लीला सम्पूर्ण ॥

अथ यमलार्ज्जुन लीला ॥

रागबिलावल - यशोदावचन-वार्ता (अरे लाला नेक ठैरजा मोको दधि बिलोवनदे -फिरमैं तोयमाखन दूंगी) १ दधिकैसेके बिलोऊं कान्हा गहिलीन्ही मथनियां । छोटे छोटेहाथ पैर छोटी सीअंगुरियां ॥ छोटेछोटेपगधरैं छोटीसीभुजरियां । छोटेछोटेबाल सोहैं छोटोसो मुखारबिन्द नाकमें बुलाकसोहे पैरपैजनियां ॥ सूर दास हरिके गुणगावे ऐसे कहै नंदरनियां २ ॥ वार्ता-यशोदा बचन॥ खेललाला इन खिलौनानते खेल जबतक मैं दधिमथिलेऊं । जब श्री ठाकुरजीने देख्योकि मैया मेरी नायँ सुनै तब दूधजो चूल्हेपै धरयोहुतो वाको उफलायदियो(सखीबचन)अरीयशोदा तेरघो

दूधउफनाय रह्योहै। हम्बै बीर देखूं हूं। जब तक यशोदा दूध देखिवे गई तब तक इहां श्री ठाकुरजीने सब दहीके माठ फोर डारे वा सब सही ढुरकायदियो। जब यशोदाने देख्यो तब कही भरेदारीके तैंनेआज बड़ो जानकियो मेरो जो पचासी बर्षको माठहुतोसो फोरडारयो देखमें आज कैसे हालकरूं हूं तेरे ३॥ रागकान्हरो-यशोदावचन॥ ऐसीरिसमैं जो धरपाऊं। कैसे हालकरों धर हरिके तुमको प्रकट दिखाऊं॥ सटिया हाथ लिये नंद रानी थर थरात सबगात। मारेबिना आज जो छाडौं लागै मेरो तात॥ यहि अन्तर ग्वालिन यक औरै धरे बांह हरि ल्यावाति। भलो महरि सूधो सुत जायो लरकन अंतहि खिजावाति॥ यह सुनतहि आई तब बाहर मन में अति अभिलाष। सूरदास भुज गहे यशोदा अब बांधो कहि भाष ४॥ रागधनाश्री समाजी वचन॥ यशुमति रिसकरि रज्जु अकरषे। सुतहि क्रोध देखि माताको मनहीमन अति हरषे॥ उफनतक्षीर जनानि करि दुचिती यहि बिधि भुजा छुड़ायो। भाजन फोरि दही सबडारेउ माखन मुख लपटायो॥ ले आई जेवरि अब बांधौ मरम जानि न बंधावै। आंगुर द्वैघटिहोत सबनिसों पुनि पुनि और मँगावै॥ नारदशाप भये यमलार्ज्जुन इनकोअबजो उधारौ। सूरदासप्रभु कहत भक्तहित जन्म जन्म तनुधारौ ५॥ रागधनाश्री सखी वचन सखीसे॥ देखुसखी यशुदा बौरानी। घरघर डोलति लेति दांवरी बांह गहे हरिकी बिततानी॥ जानति नाहिं जगतपति माधव जिनते सब आपदानशानी। जाकोनाम सकति पुनि ताकी ताहि देखि बांधत नंदरानी॥ अखिल ब्रह्मांड उदर रहे जाके जिनकी ज्योति जलथलहु समानी॥ मुखजम्हात त्रिभुवन दिखरायो अचरज कथा न जात बखानी॥ ब्रह्मादिक सनकादि शुकादिक भ्रमत रहत इनहूं नहिं जानी। सूरदासम्वहिं वैसिये लागति जो कछु कहीगर्ग मुखबानी ६॥ राग पीलू-यशोदावचन॥ बांधौ आजु कवन तोहिं छोरे। बहुत लँगरई कीनी मोसों भुज

गहि रज्जुऊखलसों जोरे ॥ जननी अतिरिस जानि बँधाये चितै बदन लोचन जल धोरे। यह सुन ब्रज युवती सब धाई कहति कान्ह अब क्यों नहिं छोरे ॥ ऊखलसों गहि बांधि यशोदा मारन को साटीकर तोरे। सांटी देखि ग्वालि पछितानी बिकल भई जहँ तहँ मुख मोरे ॥ सुनहु महरि ऐसी न बूझिये सुत बांधति माखन दधि थोरे। सूरश्यामको बहुत सतायो चूक परी हमते यह भोरे ७॥ राग बिलावल--पहिली सखी बचन ॥ यशोदा तेरो मुख हरि जोवै। कमल नयन हरि हिचिकिन रोवै बंधन छोरि जु सोवै ॥ जो तेरो सुत खरो अचगरो अपनी कूखिको जायो। कहा भयो जो घरके ढोटा चोरि माखन खायो ॥ तुरत दोहनी दहेउ जमायो जावन पूजन पाये। ता घर देव पितर काहेको जो घर ऐसो जायो ॥ जाको नाम लेत भ्रम छूटै कर्म फन्द सब काटे। सा हरि प्रेम जेवरी बांधे जननि साट लबे डाटे ॥ सूरदास प्रभु भक्त हेतते देह धरतही आये। दुखित जानि दोउ सुत कुबेरके ताहित आपु बँधाये ८॥ राग स रंग-- दूसरी सखी बचन ॥ महरि तोहिं बड़ी कृपिनिमैं पाई। दूध दही है बिधिको दीन्हों सुतडर धरत छिपाई ॥ बालक बहुतनही री तेरे एकै कुंवर कन्हाई। सोऊतो घर घरही डोलत माखनखात चुराई ॥ वृद्धवैस पूरे पुण्यनते तैं बहुतै निधिपाई। ताहूके खैबे पीबेको कहाइती चतुराई (यशोदा वचन) सुनिसुनि बचन चतुर नागरके यशुमति नन्द सुनाई। सूरश्यामको चोरीके मिस देखन को यहआई ९॥ रागधनाश्री-तीसरीसखीवचन ॥ चितैयों कमल नयनकी ओर। कोटिचन्द्र वारौं मुखछबि परयेहैं शाह किचोर ॥ उज्ज्वल अरुण असित दसितहै दोउ नयननकी डोर। मानहुं श्याम सुधापानके कारण बैठे निकट चकोर ॥ काहे रिसाति यशोदा इनसों कौनज्ञानहै तोर। सूरश्याम बालक मनमोहन नाहिंन तरुण किशोर १०॥ रागरामकली-चौथीसखीबचन ॥ यशोदा यहिन बूझिये काम। कमल नयनकी भुजा देखुतें बांधेहैं जो

दाम ॥ पुत्रहुते प्यारो कोउहैरी कुल दीपक मणिधाम । देखहुं चन्द्रबदन कुम्हिलानो है निरमोही तूंबाम ॥ तूंबैठी मन्दिर सुख छहियां सुखदुख पावत धाम । अति सुकुमारि मनोहर मूरति ताहि करति तूताम ॥ यह हैं सब ब्रजको जीवनसुख पावति हैं लैनाम । सूरदासप्रभु भक्त बश है सबजगके बिश्राम ११ ॥ रागधना श्री-पाचमीसखीबचन ॥ यशुमति किनयह सीखदई । सुतहि बांधितू मथति मथानी ऐसी निठुर भई (यशोदा बचन) हेर बोलि युवतिन को लीन्हीं तुम सब तरुणि नई । लरिकहि त्रास दिखावति रहिये कत मुरझाय गई (सखी बचन) मेरे प्राण जीवन धन माधव बांधे बेर भई । सूरश्याम को त्रास दिखावति तुम कहा कहति दई १२ ॥ रागगूजरी--छठीसखीबचन ॥ यशोदा कान्हहुं ते दधि प्यारो । डारि देहुं कर मथति मथानी तरसत नंद दुलारो ॥ दूध दही माखन लै वारो जाहि करति तू गारो । कुम्हिलानो मुख चन्द देखि छबि काहे न नेक निहारो ॥ ब्रह्मा सनकादि शिव ध्यानन पावत सो ब्रज गैयनि चारो । सूर श्याम पर बलि बलि जैये जीवन प्राण हमारो १३ ॥ रागनट--सातमीसखीबचन ॥ मुख छबि निरखि हो नंद धरनि । शरद निशि को अंश अगणित इन्दु आभा हरनि ॥ ललित श्री गोपाल लोचन लोल आंसू ढरनि । मित्र लोचन मनहुंआये तरलगति है तरनि ॥ कुटिल कुन्तल मधुप मिलि मानौ कियो चाहत लरनि । बदन कान्ति बिलोकि शोभा सकै सूर न बरनि १४ ॥ रागधना श्री--आठमीसखीबचन ॥ कब के बांधे ऊखल दाम । कमल नयन बाहिर करि राखे तू बैठी सुखधाम ॥ हौ निरदई दयाकछु नाहीं लागिरही घरकाम । देखिक्षुधा ते मुख कुम्हिलानो अति कोमल तनश्याम ॥ छोरहुबेगि बड़ी बिरियाभई बीतिगयो युगयाम । तेरी त्रास निकट नहिंआवत बोलिसकत नहिंराम ॥ जनकारण भुज आप बँधाई बचन कियो ऋषिनाम । ता दिनमें यह प्रकट सूर प्रभु दामोदरसो नाम १५ ॥ रागनट-नवमीसखी बचन ॥ देखुरी नंद

नंदन ओर। त्रासते तनत्रसित भैहरि तकत आननतोर ॥ बार बार डेराततोको बरण बदनहि थोर। मुखरमुख दोउ नयन दारत क्षणहि क्षण छबिछोर ॥ सजल चपलकर नयन कोपल अरुण ऐसेडोल। रसभरे अम्बुज भीतर भ्रमत जनुभय भोर ॥ कछुक करुणाकर यशोदा कहति निपति निहोरि। सूरश्याम बिलोकि यशुमति कहति माखन चोर १६ ॥ रागबिहागरो-दसमी सखीवचन ॥ कुंवरजल भरिभरि लोचनलेत। बारिदबदन बिलोकि यशोदा कतरित करति अचेत ॥ छोरि उदरते दुसह दांवरी डारि कठिन करवेत। कहिंधौ तोहिं कैसेकरि आवत शिशुपर तामस येत ॥ मुखआंसू उरमाखनके फन निरखि बदनछबिदेत। मानहुं श्रवत सुधानिधि मोती उडुगण अवलिसमेत ॥ सरबस तन मन धन निछावरकीजै सूरश्याम के हेत। नाजानौं किहिपुण्य प्रगट भये यहि ब्रज नंदनिकेत १७ ॥ रागधनाश्री-ग्यारहमीसखीबचन ॥ यशोदा तोहिं बांधत क्यों आयो। कसक्यौं नहीं नेक मन तेरो याहीकोहौ जायो ॥ शिव विरंचिं महिमा नहिं जानें सो तो गायसंग धायो। ताते तूंपहिंचानति नाहिन कौनपुण्यते पायो ॥ इतनी कहि उसकारतबांहैं गोरस हित बलछायो। कहाभयो जो घरकें लरिका चोरी माखन खायो ॥ अपने कर करि बन्धन छोरो प्रेमसहित उरलायो। सूरसुबचन मनोहर कहि कहि अनुज शूल बिसरायो १८ ॥ वार्ता ॥ सखीवचन ॥ अरी यशोदा तू लालाको छोड़दे देख तो सही लाला कैसो रोरह्यो है अरी तेरो तो महा कठिन हियोहै (यशोदा बचन) अरी सखियो तुमजाव अपने अपने घरै मैं लाला को नायँ छोडूंगी, अरी बीर तै नायँ छोड़े तो मैं छोड़े देती हूं, अरी सखियो तुम कूं याही की सौं है जो तू छोरे, तू अपने घरजा १९ ॥ रागधनाश्री-बारहमीसखीवचन ॥ यशोदा तेरो बड़ो कठिन हियो माई। कमल नयन माखन के कारण बांधे ऊखल लाई ॥ जो संपदा देव मुनि दुर्लभ स्वपनेहुं देत न दिखाई। याही ते तूं गर्व भरी है घर बैठे निधिपाई ॥ तब

काहूकोसुत रोवति सुनिके दौरिलेत हियलाई। अब काहे घरके ललना सों करति इती जड़ताई॥ बारम्बार सजल लोचन भरि रोवति कुवँर कन्हाई (श्रीठाकुरजी से) कहा करौं बलिजाउँ छोरती तेरी सौंह दिवाई॥ जो मूरति जलथलमें व्यापक निगम न खोज न पाई। सो यशुमति अपने आंगनमें दैकरताल नचाई॥ सुरपालक सब असुरसँहारक त्रिभुवन जाहिडराई। सूर श्याम प्रभुकी यह लीला निगम नेति नितगाईहै २० ॥रागसारंग-तेरहमीसखीवचन॥ माई नेकहू न दरद करति हिचाकिन हरि रोवै। बज्रहूते कठिन हियो तेरोहै जसोवे॥ पलना पौढ़ाहि जिनहिं विकट बाउँ काटै। उलटे भुज बांधि तिनहिं लकुटि लिये डाटै॥ नेकहु न थकति पाणि निरदई अहीरी। अहो नन्दरानी सीख कौनपै लहीरी॥ जाकोशिव सनकादिक सदारहत लोभा। सूरदास प्रभुको मुख निरखि देखि शोभा २१ रागनट-चौदमीसखी वचन॥ हरिके बदन तनधौंचाहि। तनक दधि कारण यशोदा इतो कहा रिसाहि॥ लकुटके डर डरति जैसे सजल शोभित डोल। नलिनीरज दलमले अलि ओसकन कृत लोल॥ बातके बश माल जैसे प्रात पङ्कज कोस। नाभित मुखबमि अधर सूचत सकुचमें कछु रोस॥ कितिक गोरस हानि जाको कहतिहौ अपमान। सूरप्रभुके रोमऊपर वारिये तनप्रान २२॥ वार्ता॥ (सखी वचन) अरीयशोदा नेकसे माखनके लाने लालाको काऐकोत्रास दिखावैहै तेरो कितनो माखन खायोहै कहैतो मैं अपनेघरते लाऊ २३॥ रागधनाश्री॥ कहौतो माखनल्याऊं घरते। जाकारण तू छोरति नाहिन लकुटनडारति करते॥ सुनहु महरिऐसी नबूझिये सकुचि गयो मुखडरते। मनहुकमल दधिसुतसमयोंतकि फूलत नाहिन सरते॥ ऊखलत्नाय भुजाधरि बांधे मोहनमूरति बरते। सूरश्याम लोचन जलबर्षत जनु मुक्ताहिम करते २४॥ वार्ता-यशोदावचन॥ (अरी सखियो तुम्हींने मेरो धोटा बँधायोहै और अब बढ़ बढ़के बातैं करौहौ कि मैं माखन घरतेलाये देतीहूं, जाउ

अपने अपने भवनमें लालाको नायँ छोरूंगी. २५ ॥ रागधनाश्री ॥ कहनलागी बढ़ि बढ़ि अब तू बात । ढोटा मेरो तुमहिं बँधायो तनकहिं माखन खात ॥ अब मोहिं माखन देति मँगाये मेरे घर कछु नाहिं । उरहन कहिकहि सांझ सवारे तुमही बँधायो याहि ॥ रिसहीमें मोको गहि दीन्हों अब लागीं पछितान । सूरदास अब कहति यशोदा बुझियो सबको ज्ञान २६ ॥ रागधनाश्री-पन्द्रहमी सखीवचन ॥ सुचितदै चितै तनैतन ओर । सकुचित शीतभीत ज्यों जलरुह तुवकर लकुट निरखि सखि घोर ॥ आनन ललित श्रवत अंशुवन अति अरुण चपल लोचनकी कोर । डारत मनो गंडुलक सुधा विधुमण्डलते भरि उभय चकोर ॥ कमलनालते कलित युगनभुज ऊखल बांधे दामकठोर । मनहुं भुजंग भिरत बांबीपर अरुझिरहे कंचुरि गरजोर ॥ लघु अपराध देखि मन शोचतहै समकुलिश कठिन उरतोर । सूरकहा सुतसों इतनी रिस बिलखति कहति न माखनचोर २७ ॥ रागनट-सोलहमीसखी बचन ॥ तबते बांधे ऊखल आनि । बालमुकुन्दहि कत तरसावति अतिअंग कोमल जानि ॥ प्रातकालते बांधे मोहन तरणि चढ्यो मधिआनि । कुम्हिलानो मुख चन्द्र दिखावति देखहुधौं नँदरानि ॥ तेरीत्रासते कोउ नहिं छोरत अब छोरहु तनआनि । कमल नयन बांधे ई छांड़े तुमबैठीं मनमानि ॥ यशुमतिके मन सुख कारणको आपु बँधावति पानि । यमला अर्जुन मुकतकरन को सूरश्याम यहठानि २८ ॥ वार्ता-यशोदावचन ॥ अरी सखियो जाव अपने अपने घरनमें लालाको नायछोरूं, मोको कोऊजिन बरजो,पहिले सबनने मिलके ढीठकर दीन्हो अब छुडायबे आईं मोको अपनेबाबाकी सौगंदहै जो मैं अबकान्हको पतयाऊं २९॥ राग आसावरी ॥ जाहु चली अपने अपनेघर । तुमहीं सबमिल ढीठकरायो अबआईं बंधन छोड़नवर ॥ मोहिं आपने बाबाकी सौंहै कान्हहि अबन पत्याऊं । भवनजाहु अपने अपने सब लागतिहौं मैं पाऊं ॥ मोकोजिन बरजो कोउ युवती देखो हरिके

ख्याल । सूरश्याम सो कहति यशोदा बड़े नन्दकेलाल ३० ॥
रागपरज-सबसखीबचन॥ ऐसीरिस तोकौ नंदरानी। भलीबुद्धि तेरे
जिय उपजी बड़ीबैस अबभई सयानी ॥ ढोटा एकभयो कैसहुं
कर कौनकौन करिवर विधिबानी। करम करमकर अबलौं उब
रेउ ताकोमारि वितरदै पानी॥ को निरदई रहैतेरेघर तेरे संग
अब बैठे आनी । सुनहुंसूर कहिकहि पचिहारी युवती घरनचलीं
बिरुझानी ३१ ॥ वार्ता॥ (सखीवचन) अरी यशोदा जो तू
लालाको नायँ छोड़ैतो हमसब जायँहैं। जावरी सखियो जाव,
मैं लालाको नायँछोरूं। इतनी कहके सखियांतो सब चलीगईं
और एकग्वाल बलभद्रजीके पासजाके यह सबहाल कह्यो कि
आज भोरहीते मैयाने कन्हैयाको बांध राख्यो है ३२ ॥ रागराम
कली-ग्वालबचन॥ हलधरसों कहिग्वाल सुनायो। प्रातहितै तुम्ह-
रो लघुभैया यशुमति ऊखल बाँधिलजायो ॥ काहूके ललना
हरिमारयो भोरहिआन रोवत गुहिरायो । तबहीतैं बांधे हरि-
बैठे सोहम तुमसों आन जनायो (हलधरवचन) हमबरजी
बरज्यो नहिं मानति सुनतिहिं बलआतुर ह्वै धायो । सूरश्याम
बैठे ऊखल ढिग माताडरत न अतिहि त्रसायो ३३ रागसारंग-
हलधर वचन ॥ यह सुनिके हलधर तहं आये । देखि श्याम
ऊखल सों बांधे तबहीं दोउलोचन भरिआये ॥ मैं बरज्यो कई
बार कन्हैयां भैया भली करी दोउहाथ बँधाये । अजहूं छांड़हु
गे लगराई भैया दोउकर जोरि जननीपै आये ॥ श्यामहि छोरि
मोहिं बरु बांधौ मैया निकसत सगुण भलेनहिं पाये। मेरोप्राण
जीवनधनकान्हा मैया तिनके भुजमोहिं बंधेरी दिखाये ॥ माता
सोंकह्याकरौं ढिठाई शेषरूपकहि नामसुहाये। (यशोदा बचन)
सूरदास तब कहत यशोदा दोउभैया तुम एकैह्वै आये ३४ ॥
वार्ता--हलधर वचन ॥ अरी मैया तैंने श्यामकूं कायेको बांधेहै और
इतनो त्रास क्यों दियोहै) ॥ रागसारंग ॥ काहेको इतनो हरि
त्रास्यो। सुनरी मैया मेरो भैयाकितनो गोरसनास्यो॥ जबरज्जु

सोंकर गाढे बांधे छर छर मारी सांटी। सूनेश्वर बाबानँद नाहीं ऐसे करि हरि डाटी ॥ और नेकु छरि देखहि श्यामहि वाको करो निपात। तू जो करै बात सो सांची कहा कहौं तोहिंमात॥ गाढे बदत बात सब हलधर माखन प्यारो तोहिं। ब्रज प्यारो जाको मोहिं गारो छोरति काहे न जोहिं॥ काको ब्रज माखन दधि काको केहिं बांधे जकरि बनाय। सुनत सूर हलधरकी बाणी जननी सेजुबलाय ३५॥ रागसारंग--यशोदा बचन॥ सुनहु बात मेरी बलराम। करन देहुं मोहिं इनकी पूजा चोरी प्रगटत नाम॥ तुमहीं कहौ कमी काहेकी नव निधि मेरे धाम। मैं बरजौ सुत जाहु कहूं जिनि कहि हारी निशियाम॥ तुमहुं मोंहिं अपराध लगायो माखन प्यारो श्याम। (हलधर बचन) सुनि मैया तोहिं छांड़ि कहौ कहिको राखे तेरे नाम॥ तेरीसौं उरहनलै आवति झूठी ब्रजकी बाम। सूरश्याम अतिही अकुलाने कब बांधेहै दाम ३६॥ वार्ता--यशोदाबचन॥ अरे बलराम तैं तो जानेहींहै कि ये कैसो ढीठ होगयोहै नेक कहनोई नायँ मानै ३७॥ राग सारंग॥ कहाकरौं हरि बहुत खिझाई। सहि न सकी रिसही रिस भरिगई बहुतै ढीठ कन्हाई॥ मेरो कहेउ नेकु नहिं मानत करत आपनी टेक। भोर होत उरहनले आवत ब्रजकी बधू अनेक॥ फिरत जहांतहँ धूम मचावत घर नहिंरहत छनेक। सूरश्याम त्रिभुवनको कर्ता यशुमति कहति जनेक ३८॥ वार्ता--हलधर बचन॥ अरी मैया तू अब कन्हैयाको छोड़दे देखया ब्रज की बाम झूंठेही उरहनलै आवैहैं और तोय रिस करवाके कान्ह को दुख दिवावैहैं। अरे बलराम तुम इहांते जाव मैं लालाको नायँ छोडूंगी याने बहुत लँगराई कीन्हींहै और मोको हैरानकर डालोहै ३९॥ राग पद--यशोदाबचन॥ हलधर तुम अब जाउ इहांते। लाख कहौ मैं एक न मानूं रज्जुन छोरौ ढीठ श्यामते॥ नित प्रति ये उतपात करतहैं आवत उरहन जहां तहांते। परमानन्द कह्यो नहिं मान्यो तब बांध्यों मैं ऊखल दामते ४०॥

राग राम कली--यशोदावचन ॥ यशुधा ऊखल बांधे श्याम । मनमोहन बाहरही छांड़े आपु गई गृह काम ॥ दहीमथति मुखपै कछु बकरति गारी दै दै नाम । घरघर डोलत माखन चोरत षटरस मेरे धाम ॥ ब्रजकेलरिकन मारि भजतुहै जाहुतुमहुं बलराम । सूरश्याम ऊखलसों बांधे निरखति ब्रजकी बाम ४१ ॥ दोहा ॥ बलराम वचन ॥ छूतो तनक जो और कोउ आज देखत्यों सोय । तू जननी कछु बश नहीं जो कछुकरै सो होय ४२ दधि माखन सब कान्हकी कान्हहिकी सब गाय । मो को है बल कान्हको तू नहिं जानत माय ४३ इतनी सुनि यशुमति तबै तबहुं न छोरे श्याम । हलधर आये कृष्णढिग करीं तिन्है परणाम ४४ ॥ राग सारंग हलधर वचन ॥ निरखि श्याम हलधर मुसक्याने । कोबांधे को छोरै इनको यह महिमा येही ये जाने ॥ उत्पति प्रलयकरत हैं येईशेष सहसमुख सुयशबखाने । यमलाअर्जुन तोरि उधारण कारण करतआप मनमाने (वार्ता—अरेलाला तोकोकौन बांधने वालोहै और कौन छोरने वालोहै मैं जानूहूं कि तूने यहलीला यमलाअर्जुनके उद्धार करबेके लिये कीहै कि अपने भक्तके लिये निजभुजा बंधाये सो भैया अब इनको उद्धारकर ये बड़े क्लेशित हैं) असुर संहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावतबाने । सूरदास प्रभु भाव भक्तके अतिमति यशुमतिहांथ बिकाने ४५ ॥ रागकल्याण—श्रीठाकुरजीवचन ॥ हरिचितयेयमलाअर्जुनतन । अबहीं आजु इनहिं उद्धारों येहैं मेरेनिजजन ॥ इनकेहेतु भुजाबंधवाई अब बिलम्ब नहिं लाऊं । परशकरौं दोउ तरुहि गिराऊं मुनिवर शापमिटाऊं ॥ येसुकुमार बहुत दुखपायो सनकादिक सुतचारों । सूरदास प्रभु कहत मनहिंमन करबन्धन निरवारों ४६ ॥ वार्ता बलराम वचन ॥ अरेभैया मैं अब जाऊंहूं अबतू इनको उद्धारकर-- जबबलरामजी चलेगये तबश्रीठाकुरजीने यहबुद्धि बिचारी ४७॥ रागगूजरी--श्रीठाकुरजी वचन ॥ तबहिं श्याम यकबुद्धि उपाई । युवती गईं घरनि जब अपने गृह कारज जननी अटकाई ॥ आपु

गये यमलाअर्जुन तर परशत पात उठेभहराई । दिये गिराय धरणि दोऊ तरुवर द्वै कुबेर सुत प्रगटे आई ॥ द्वै कर जोरि करत दोउ स्तुति चारि भुजा हरि प्रकट दिखाई। सूर धन्य ब्रज जनम लियो हरि धरणीकी आपदा नसाई ४८ राग धनाश्री—नल कूवर वा मणिग्रीव वचन ॥ धनि गोविंद धनि गोकुल आये । धनि धनि नन्द धन्य निशिबासर धनि यशुमति जिन गोद खिलाये॥ धनि वह बालिकेलि यमुना तट धनि बन सुरभी वृन्द चराये। धनि यह समय धन्य ब्रजबासी धनि धनि बेणु मधुर धुनि गाये ॥ धन्य सूर ऊखल तरु गोबिंद हमहिं हेतु धनि भुजा बँधाये ४९ ॥ राग बिलावल ॥ गोविंद तिहारो स्वरूप निगम नेति नेति गावैं। भक्तिके बश श्यामसुन्दर देह धारे आवैं ॥ योगी जन ध्यान धरत सपनेहूं न पावैं । नन्दघरनि बांधि बांधि कपि ज्यो नचावैं ॥ गोपी जन प्रेम आतुर तिनको सुख दीन्हों । अपने अपने रसबिलास काहू नहिं चीन्हों ॥ श्रुति स्मृति सब पुराण कहत मन बिचारी। सूरदास प्रेम कथा सबहीते न्यारी ५० ॥ राग सोरठ ॥ ज़ाको ब्रह्मा अन्त न पावैं। तासों नन्दकी नारि यशोदा घरकी टहल करावैं ॥ शेष सनक नारद गणेश मुनि जाके गुण नित गावैं । निशबासर खोजत पचिहारे मुनि मन ध्यान न आवैं ॥ धनि धनि धनि गोकुल धनि ब्रज बनिता निरखत श्याम बँधावैं। सूरदास प्रभुप्रेमहिं के बश सन्तन दरश दिखावैं ५१ ॥ रागकान्हरो ॥ धनि धनि ऋषि शाप हमारे। आदि अनादि निगम नहिं जानत ते हरि प्रगट देह ब्रजधारे ॥ धन्य नन्द धनि मात यशोदा धनि आँगनमें खेलत वारे। धन्यश्याम धनि हाथ बँधाये धनि ऊखल धनि माखन प्यारे ॥ दीन बन्धु करुणानिधि हौ प्रभु राखिलेहु हम शरण तिहारे। सूरश्यामके चरण शीश धरि अस्तुति करि निजधाम पधारे ५२ ॥ वार्ता— श्रीठाकुरजीवचन ॥ अरे तुम कौनहो। महाराज हम कुबेरके पुत्रहैं। तिहारो नाम कहाहै। मेरो नाम नल कूवर याको नाम मणि-

ग्रीव है। अरे तुम जड क्यों हो गये। महाराज एकसमयके विषे में हम दोनों जने जल में अपनी अपनी स्त्रियोंकेसाथनंगे जल-क्रीडा कररहे थे और उसीसमय श्री नारदमुनिजी भजन करते करते हमारी ओर होकर निकसे महाराज हम ने उनकूं मारे गर्व के कुछू ख्याल नहीं कियो तबतो उन्हों ने हमको शाप दै दियो कि तुम्हारी जड़बुद्धि है सो तुम जड़ होव जायके, महाराज, तब हमने हाथ जोरके कह्यो कि जो आप ने ऐसो शाप दियो है सो तौ मेरे सब शिर मस्तकपर है पर हमारो या शाप ते उद्धार कैसे होगो तब उन्हों ने कह्यो तुम जाकर नन्द के आँगनमें वृक्षहो जब नन्द के यहां श्री भगवान अवतार लेंगे तब वह तुम्हारो उद्धार करेंगे, सो महाराज उन्होंने तो हमकोशाप दियो थो पै हमकूं वरदान होके लग्यो कि आप के दर्शन जो ब्रह्मादि देवताओंको दुर्लभ हैं सो हमकूं प्राप्तभये ५३ ॥ गीतिका छंद - नलकूबरवामणिग्रीववचन ॥ पारब्रह्म परमेश्वर अवगति भवन चतुर दशनाथ हरी। जब जब भीर परी संतनपै प्रगटहोय प्रतिपाल करी ॥ आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिक हैं अनुगामी। कृष्ण नमामि नमामि नमामी दयासिंधु अन्तरयामी ॥ जाको ध्यान धरत योगीजन शेषजपत नित नाम नये। सो भव तारण दुष्ट निवारण सन्तन कारण प्रगट भये ॥ जिनको नाम सुनत यम डरपत थर हर कांपत काल हियो। तिनको पकरि नन्दकिरानी ऊखलसों लै बांधि दियो ॥ जयदुख मोचन पंकज लोचन उपमा जाय न कहतबनी। जय सुखसागर सबगुण आगर शोभा अंग अनंग धनी ॥ नारद को हम अति गुनमानें शाप नहीं वरदानदियो। जा कारणते प्रभू आपने दर्शनदियो सनाथ कियो॥ जो हरिहूकेध्यान न आवत अपरअमरहैकिहिलेखे। सो हरि प्रगट नन्दके आंगन ऊखलसंगबँधे देखे ॥ जिनकीपदरजको सुर तरसैं अगम अगोचर दनुजारी। त्राहि त्राहि प्रण तारण भंजन जन मन रंजन सुखकारी ॥ तुमरी माया जीव भुलानो

किहि विधि नाथ तुम्हैं जानै। तुमहीं कृपाकरै जब स्वामी तब हीं तुमको पहिचानै॥ श्रीमुकुन्द मधुसूदन श्रीपति कृपानिवास कृपाकीजै। इन चरणन में सदा रहैमन यह बरदान हमैंदीजै॥ जयकेशव जयअधमउधारन दयासिंधुहरिनित्य मगन। जयसुंदर ब्रजराज शशी मुख सदा बसौ मम हृदय गगन॥ रसना नित तुम्हरे गुण गावै श्रवण कथा सुनि मोद भरै। कर नितकरै तिहारी सेवा नैन सन्तजनदरशकरै॥ नेम धर्म व्रत जप तप संयम योग यज्ञ आचार करै। नारायणविन भक्ति न रीझै वेद संतसब साख भरै ५४॥ छंदहरिगीतिका-स्तुति॥ अनुसार अस्तुति युगल प्रेमानँद मगन सन्मुखखरे। जय जय भगत हित सगुण सुन्दर देह धरि ध्यावत हरे॥ जो रूप निगम न नेति गायो बुद्धि मन बाणी परे। सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उरधरे॥ धन्य ब्रज धनि गोप गोपी गाय दधि माखन मही। धन्य गोविंद बाललीला करत माखन चोरही॥ धनि धनि उरहनो देतनित उठि धन्य अनख बढ़ावही। धनिसो जननी बांध राखति जाहि बेद न पावही॥ धन्य सो तरु जासु ऊखल धनि सुजन गढ़ि ल्याइयो। धन्य सो तृण जासु की रजुश्याम भुजन बँधाइयो॥ धन्य ऋषि धनि शाप दीन्हों अति अनुग्रह सो कियो। जासुशिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दर्शन दियो॥ अब कृपा करिदेहु बर प्रभु चरण पंकज मतिरहै। जहां जन्महिं कर्म बश तहँ एक तुम्हरी रतिरहै॥ दीनबन्धु कृपालु सुन्दर श्याम श्री ब्रजराजजू। राखिये निजशरण अबप्रभु करिय हमहिं सनाथजू ५५॥ दोहा॥ बारबार पद नाय शिर बिनती प्रभुहिं सुनाय। प्रेम मगन निरखत बदन हर्ष सहित दोउ भाय ५६॥ वार्ता-श्रीठाकुरजीवचन॥ अरे हम तुम पै बहुत प्रसन्नहैं मांगो जो तुमको चाहिये। महाराज हम यही बरदान मांगै हैं कि यहतो हमारे नेत्रहैं सो आपकी माधुरी मूर्त्तिको दर्शन कियोकरैं और येजो हांथहैं सो आपकी सेवा कियोकरैं और येकान आपकी कथा श्रवण कियोकरैं और

ये रसना आपके गुण गावोकरें वा ये पैर आपकी परिक्रमा कियो करें और हेप्रभु जहां जहां कर्मवश जन्मैं तहां आपकी भक्तीबनी रहै यही बरदान हम मांगै हैं। जावोहमने तुमको दियो ५७॥ सोरठा ॥ साधु साधु कहिनाम भक्तिदान तिनको दियो। बिदा किये घनश्याम हर्षिगये निजपुर युगल ५८ ॥ वार्ता ॥ जब नलकूबर वा मणिग्रीव बरदान पाकै अपने निजलोक को चलेगये तब श्रीठाकुरजी फिर पहिलेकी तरह बैठगये--इतनेमें एक सखी आई और वृक्षोंकोगिरे देखकर यशोदासे कहनलगी, अरी यशोदा देखो तो लालाको कहा होयगयो है। हम्बै बीर देख तो यह बड़े बड़ेपुराने वृक्ष गिरपड़े, अरी बीर ना आंधी आई ना बैहर चली। ये वृक्ष कैसे गिरपड़े यह कहके यशोदाने कुंवर को उठा लियो और कहन लगी॥ जरै रिस जिहि तुमहि बांधे लगे मोहिं बलाय। नन्दमोंहिं कहैंगे देखि तरु दोउआय॥ मैंमरूं तुम कुशल रहौ दोउ श्याम हलधर भाय। इतनेमें नन्द बाबाभी घर आनकै देखे दोनों तरु गिरपड़े हैं तब बूझबे लगे ये कैसे गिरपड़े तब एक सखीने कही यशोदाने कन्हैयाको ऊखल ते बांध्यो तो सो नाजानै येकैसे गिरपड़े तब नंदबाबाने कन्हैया को गोदमें लेकै यशोदाको गारी देन लगे और कह्यो तेरी बुद्धि कैसे होयगई है जो मेरे सुतको बांध राखतहै तब यशोदाने कही कि याने मेरो पचासी बर्षको माट फोर डारोहै और सबोंके घर जाय कै चोरी करै है मेरो कहनो नेकहू नायँ मानै तब नंदबाबा ने कही अरी यशोदा माटके लिये बांधो है तेरी पचासी बरस ये ऊ गये इतनेमें फिर श्याम मैयाके लिये रोये तब यशोदाने फिर लै लियो ५९ ॥ राग सारंग यशोदा वचन ॥ अब घर काहूके जिन जाहु। तुम्हरे आज कमी काहेकी कत तुम अनतहि खाहु॥ जरै जेवरी जिन तुम बांधे बरै हाथ भहराय। नंद मोहिं अति त्रासत हैं तू बांधे कुंवर कन्हाय॥ बेगि जाऊं अपने हलधरको छोरतहै तब श्याम। सूरदास प्रभु खात फिरो जिन माखन दधि

तुम धाम ६० ॥ राग सारंग ॥ ब्रजयुवती श्यामहि उरलावति । बारम्बार निरखि कोमल तनु करि बिनती बिधिकों जु मनावति ॥ कैसे बचे अगम तरुकेतर मुखचूमति यह कहि पछितावति । उरहन लै आवति जेहि कारण सो सुख फल पूरण करि पावति ॥ सुनहु महरि इनको तुम बांधति भुज गहि बंधन चिह्न दिखावति । सूरदास प्रभु अति रति नागर गोपी हर्षि हृदय लपटावति ६१ ॥ राग सारंग यशोदा वचन ॥ भूखो भयो आज मेरी बारो । भोरे ग्वालि उरहनो ल्याई वहि यह कियो पसारो ॥ पाहिलेरोहिणिसों कहि राख्यो तुरत करी जेवनार । ग्वाल बाल सब बोलि लिये मिलि बैठे नन्दकुमार ॥ भोजन बेगि ल्यावरी मैया भूख लगी मोहिं भारी । आजु सवेरे कछुवन खायों सुनत हँसी महतारी ॥ रोहिणि चिते रही यशुमति तन शिर धुनि धुनि पछितानी । परसुरी बेगिबेर कसलावति भूखो शारंगपानी ॥ बहु व्यंजन बहु भांति रसोई षटरसके परकार । सूरश्याम हलधर दोउ भैया और सखा सब ग्वार ६२ ॥

इति श्री यमलार्ज्जुन लीला सम्पूर्णम् ॥

अथ प्रथमसनेहलीला ॥

वार्ता-श्रीठाकुरजीवचन ॥ अरीमैयामोकूं भँवरा चकरीदे मैं खेलबेकूं जाऊंहूं १ ॥ राग विलावल-श्रीठाकुरजीवचन ॥ दै मैया भँवरा चकडोरी (यशोदावचन) जायलेहुं आरेपर राख्यों काल्हिमोल लै राख्यो कोरी (श्रीठाकुरजी बचन) लैआये हँसि श्याम तुरतही देखिरहे रंगरंग बहुठोरी । मैयाबिना औरको ल्यावै बार बारहरि करत निहोरी ॥ बोलिलये सब सखासंगके खेलत कान्ह नन्दकी पोरी । तैसेइहरि तैसेइ ब्रजबालक कर भँवरा चकरिनकी जोरी ॥ देखति जननि यशोदा यहसुख बिहसति बार बार मुखभोरी । सूरदासप्रभु हँसिहँसि खेलत ब्रज बनिता डारति तृणतोरी २॥ वार्ता-श्रीठाकुरजीबचन ॥ अरे मनसुखा तनसुखा श्रीदामा । कहाकहो दादा । अरेसारे चल यमुनाजीपै चलें वहां

अच्छीतरह भँवरा चकरी खेलैंगे। अरे दादा चलोतो ३॥ राग टोडी-समाजीवचन॥ खेलतहरि निकसे ब्रजखोरि। कटि काछनी पिताम्बर ओढ़े हाथलिये भँवरा चकडोरि॥ मोर मुकुट कुण्डल श्रवणनिवर दशन दमकदामिनि छविथोरि। गयेश्यामरवितनया केतट अंगलसत चन्दनकीखोरि॥ औचकही देखीतहँराधानयना बिशाल भाल दिये रोरि। नील बसन फरिया कटि पहिरे बेणी पीठि रुरति झकझोरि॥ संग लड़किनी चली इतआवति दिन थोरी अति छबि तन गोरि। सूरश्याम देखतही रीझे नयननि मिलि शिर परी ठगोरि ४॥ रागटोडी-श्रीठाकुरजीवचन॥ बूझत श्याम कौन तुम गोरी। कहां रहत काकीहौ बेटी देखीनहीं कभूं ब्रज खोरी (श्रीप्रियाजी बचन) काहेको हम ब्रजतन आवत खेलत रहत आपनी पोरी। सुनतरहत श्रवणनि नंदढोटा करत फिरत माखनकी चोरी (श्रीठाकुरजीवचन) तुम्हरोकहां चोरि हमलेहैं खेलन चलो संगमिलि जोरी। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातन भुरै राधिका भोरी ५॥ रागधनाश्री-श्रीठाकुरजी वचन॥ प्रथम सनेह दुहुन मनमानो। नयन सयन बातैं सब कीन्ही गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटानो॥ खेलनकबहुं हमारेआवहु नंदसदन ब्रजगाम। द्वारे आय टेरि मोहिंलीजौ कान्हाहै मम नाम॥ जो कहिये घर दूरि तुम्हारो बोलत सुनिये टेर। तुमहिं सौंह वृषभानु बबाकी प्रात सांझ इकफेर (श्रीप्रियाजी वचन) (अरे प्यारे इतनो प्रेम हमते काहे को करतहौ) सूधी निपट देखियत तुमको ताते करियत साथ। सूरश्याम नागरि उत नागर राधा हरि दोऊ मिलि गाथ ६॥ वार्त्ता॥ श्रीठाकुरजी वचन॥ अरी प्यारीजी तुमको अपने वृषभानबाबा की सौं-गंध है जो तुम हमारे इहांखेलबे न आओ तो तुम्हारे टेरतहीं मैं बाहिर आजावँगो अच्छो प्यारे हम जरूर आवैंगी॥ हम अबजायहैं,अच्छो प्यारीजी ७॥रागसारंग-श्रीप्रियाजीवचन॥ गई वृ-षभानसुता अपनेघर। संग सखिनसों कहत चली यहको जैहै

खेलन इनके तर ॥ बड़ीबार भइ यमुना आये खीझत हैहैं मैया। बचन कहति मुख हृदय प्रेमदुख मनहरिलियो कन्हैया ॥ (कीरतिबचन) माता कहति कहांहुती प्यारी कहां अबेर लगाई। (श्रीप्रियाजीबचन) सूरदास तब कहति राधिका खरिक देख में आई ८ ॥ रागपद-कीरतिबचन ॥ खीझीकछुक कुंवरिपै जननी। घरनहिं रहत फिरत भई हरनी ॥ कितनो कहत तोहिंमें हारी। दूरकहूं बाहर जानिजारी ॥ (श्रीप्रियाजीबचन) यहसुनि हँसी मनहि मन प्यारी। हृदयध्यान धरि कुंजबिहारी ॥ कहति दूर अब कतहुं न जैहौं। गांव घरहि खेलत नित रैहौं ॥ (समाजीबचन) माया ब्रह्म कृष्ण अरु राधा। प्रेमप्रीति दोउ अगम अगाधा ॥ बसे श्याम श्यामा उर पाहीं। देखे बिन भावतक्षणनाहीं ९ ॥ रागआसावरी-श्रीप्रियाजीबचन॥ खेलनके मिस कुंवरि राधिका नंद महरि गृहआई हो। सकुच सहित मधुरेसुर बोली घरहौ कुंवर कन्हाई हो ॥ (श्रीठाकुरजीबचन) सुनत श्याम कोकिल धुनि बाणी निकसे अति अतुराईहो। मातासों कछु कलहिं करत रहे सो डारचो बिसराईहो ॥ अरी मैयातू इनको जानैहै। लाला यह कौनहैं मैंतो इन्हैं नायँ चीन्हौं ॥ अरी मैया कलमें यमुनापैभूलगयोथो सोयह मेरो हाथ पकरि लै आई थी। हम्बै आ बेटी बैठजा तैंने अच्छो करचो जो लाला को पकर लाईही। अरी मैयाजे यहां आवैमें सकुचैहै। अरी बेटी आ बैठजा मैयासों कहा शरमहै। अच्छो मैया बैठूंहूं) मैयारी तू इनको चीन्हत बारम्बार बताई हो। यमुनातीर काल्ह मैं भूल्यों मैया बांह पकरि मेरी लाईहो। आवति इहांतोहिं सकुचतहै मैंदैसौंह बुलाई हो। सूरश्याम ऐसे गुणआगर नागरि बहुत रिझाईहो १० ॥ रागआसावरी-श्रीठाकुरजीबचन॥ कोजानै हरिकी चतुराई। नयन सैन सम्भाषणकीन्हो प्यारीकीउरतपति मिटाई। मनहीं मन दोउ रीझ मगनभये अति आनंद उरमें न समाई। करि पल्लव हरि भाव बतावत यक दोय देह बनाई ॥ जननी

हृदय प्रेम उपजावत कहति कान्हसों लेहु बुलाई । सूरश्याम गहि बांह राधिका ल्याये महरि बिहँसि बैठाई ११ ॥ वार्ता यशोदा बचन ॥ अरीबेटी तेरो नाम कहाहै । मैं अपनीपै चटरमटर होजाऊं १२ ॥ रागनट ॥ नामकहातेरोरीप्यारी। बेटी कौन महरिकीहै तू को तेरी महतारी ॥ धन्य कूंख जिहि तोकों राखी धन्य घरी जिहि तू अवतारी। धन्य पिता माताधनि तेरी छबि निरखत हरिकी महतारी (श्रीप्रियाजीबचन) मैंबेटी वृषभान महरकी मैयातुमकोजानति। यमुनातट बहुबेरमिलनभयो तुम नाहिंन पहिचानति (यशोदा बचन) ऐसी कहि वाको मैं जान्यो वह तो बहुभरतारी । महर बड़ो लंगर सब दिन को हंसतिदेति मुख गारी (श्रीप्रियाजीबचन) राधा बोलिउठी बाबा कछु तुमसों ढीठ्यो कीन्हों (यशोदा बचन) ऐसे समरथ कब में देखे हँसि प्यारी उरलीन्हों॥ महरि कुंवरिसों यों करि भाषति आउ करौं तेरीचोटी। सूरदास हर्षित नंदरानी कहति महरि-हम जोटी १३ ॥ वार्ता–यशोदाबचन ॥ अरीआबेटी तेरी चोटीकर दूं॥ रागगौरी ॥ यशुमति राधा कुंवरि सँवारति । बड़े बार श्रीमन्त शीश के प्रेमसहित लैलै निरवारति। मांग पार बेनीहि सवाँरति गूंथी सुन्दर भांति । गोरेभाल बिन्द बन्दन मानौ इंद्र प्रान्त रवि कांति ॥ सारी चीर नई फरियालै अपनेहाथ बनाई। अंचल सों मुख पोंछि अंग सब आपुहिलै पहिराई ॥ तिलचावरी बतासा मेवा दिये कुँवरिकी गोद । सूरश्याम राधातनचितवत यशुमति मन मन मोद १४ ॥ वार्ता ॥ ए विधाता सहस्र कानदेके सुनियो यह बेटी मेरे कनुआको मिलै मैं गोद पसारे यही मांगूंहूं। जा बेटी श्यामके संग खेल १५ ॥ रागकल्याण–यशोदावचन ॥ खेलोजाय श्यामसँग राधा। यह सुनि कुंवरि हरषि मन कीन्हों मिटि गई अन्तर बाधा ॥ जननी निरखि चकृत रही ठाढ़ी दम्पति रूप अगाधा। देखति भाव दुहुनको सोई जो चितकरि अवराधा । सँग खेलत दोउ भगड़न लागे शोभा

बड़ी उपाधा ॥ मनहु तड़ित घन इन्दु तरणिद्वै बाल करत रस साधा ॥ निरखत विधितन भूलि परेउ तब मन मन करत समाधा। सूरदास प्रभु और रच्यो विधि शोच भयो तन दाधा १६ ॥ रागसूहो यशोदाबचन ॥ देखि महरि मनही सो सिहानी। बोलि लई बूझति नंदरानी कुंवर कहति मधुरे मधुबानी ॥ व्रज में तोहिं नहीं कहुं देखी कौन गांवहै तेरो। भलीकरी कान्हहि गहि ल्याई भूलो तो सुत मेरो ॥ नयनबिशाल बदन अति सुन्दरि देखत नीकी छोटी। सूर महरि सबिताको बिनवाति भली श्यामकी जोटी १७ ॥ वार्ता-श्रीप्रियाजीबचन ॥ अरे प्यारे हम अब जायहैं। अरी प्यारीजी जावहौ ॥ हम्बै प्यारे जावैहैं। तो अच्छी प्यारीजीपर हमकों भूलियो नहीं ॥ हे प्यारे मैं आपकू नयननहीं में राखूंगी १८ ॥ राग पद-श्रीप्रियाजी-बचन ॥ नयनन हीमें राखों पिय तोय नयननहीं में राखों। तिहारे एक रोम रोमपर कोटि काम रति नाखौं ॥ अंग अंग माधुरी बिलोकों अधर सुधारस चाखौं। रसिक प्रीतमकी प्यारी बातें ना काहू सों भाखौं १९ ॥ वार्ता श्री प्रियाजी बचन ॥ अरी यशोदा मैया हम जाय हैं। अरी बेटी जायँहै। हम्बै। अरी बेटी नित आयो कर और श्यामकेसंग हिलमिल खेलोकर। हम्बैमैया २० ॥ रागनट-श्री प्रियाजीबचन ॥ राधे महरिसों कहि चली। (यशोदा बचन) आनि खेलत रहो प्यारी श्याम तुम हिंलिमिली ॥ (श्री ठाकुर जी बचन) बोलि उठेगोपाल राधा सकुचि जिय कत करति। मैं बुलाऊं नहीं आवति जननिकों कत डरति ॥ मैया यशोदादेखि तोकों करति कितनोछोह। (श्रीप्रियाजीबचन) सुनति हरिकीबात प्यारी रहीमुख तनजोह ॥ हँसिचली वृषभान तनया भई बहुत अबार। सूरप्रभु चितते टरतिनहिं गई घरके द्वार २१ ॥ वार्ता-कीरतिबचन ॥ अरीबेटी तू कहां गईहुती देखतो सही तैंने ना आज कलेऊ कियो न मुंहधोयो तैं आज कहा बड़े भोरते गईहुती २२ ॥ रागभूपाली-कीरतिबचन ॥ बूझति जननि

कहां हुती प्यारी। किनतेरी मांग तिलक रचिदीन्हों किनकच गूंथित मांग सवांरी (श्रीप्रियाजी वचन) खेलतरही नन्दके आंगन यशुमति कह्यउ कुँवरि यहांआरी। तिलचावरी गोद दिखरावति फरियादई फारि नईसारी ॥ मेरोनाम बूझि बाबाको तेरोनाम बूझिदई हँसिगारी। मोतन चितै चितै ढोटातन कछुक बिधातातन गोद पसारी (वृषभान वचन) यहसुनि सुनि वृषभान मुदित चित हँसिहँसि बूझति बातदुलारी। सूरसुनत रस सिंधुबढ्यो अति दम्पतिमन मनहींमें बिचारी २३ ॥ राग बिहागरो-श्रीप्रियाजीवचन ॥ मेरे आगे महरि यशोदा मैयारी तोहिंगारी दीन्ही। वाकीबात सबै तू जानति वेजैसी मैं चीन्ही॥ तोकोकहि पुनि कह्यो बाबाको बड़ोधूत वृषभान। तबमैं कहेउ ठग्यो कहुं तुमको हँसिलागी लपटान (कीरतिरानी बचन) भली कही तू मेरी बेटी लियो आपनो दांव। जो मोहि कहेउ सबै गुण उनमें हँसि हँसि कहति सुभाव ॥ फेरि फेरि बूझत राधासों सुनति हँसति सबनारि। सूरदास वृषभान घरनि यशुमति को गावति गारि २४ ॥ वार्ता (कीरतिरानी वचन) अरी सखियो याने बिधनाते गोद पसारके कहा मांगोहै। अरी बीर सुन वाके धनकी कमी नायँहै दूध दहीकी कमी नायँहै वाको कोई बातकी कमी नायँहै वाने तेरी कुँवरि मांगी है। हम्वै बीर मेरी कुँवरि मांगी है हम्वै कीरति रानीजी। अरी सखियो देखो तो सही कहां मेरी राधा चंदासी उजारी कहां वाको कनुहां कारो वाकी याकी जोड़ी कैसे मिलैगी। अरीकीरति रानीजी वह कारो नायँहै जगत उजारोहै और मेरे तो आंखोंको तारो है और सबको प्यारो है मेरी नायँ मानो तो पुन्यवानी प्रोहतानीजी से पूछलो। अरी सखियो नेक प्रोहतानी जीको बोललै ॥ अच्छो बीर। अजी पुन्यवानी प्रोहतानी जी२ तुमको कीरति रानी जी बोलैहै। अच्छो आई। कहाकहो कीरतिरानी जी। तुमतो कभूं आवोई नायँ देखोतो यह सब सखी बोलैहैं कि तिहारी राधिका

सों कन्हुआकी सगाई करदे । सो कहा मेरी चंदासी राधिका कहा कन्हुआकारो यह जोडी कैसे मिलैहै । अरी सुन कीरतिरानीजी । कहो प्रोहतानीजी । मेरो पीहर होडिलमें है सो मैं पीहरसों अपने नैहरको जातहुती सो बीचमें नंदगांव मिलै है तहां मैंनेदेखो कि छोटेछोटे छोरा जिनके छोटेछोटेसे बारछोटी छोटी सी अंगुलियां छोटीछोटीसीटोपीथी यों कहरहेथे, नन्दमहरि घर ढोटाजायो महरानेते टीको आयो । नन्द महरिघर ढोटाजायो महरानेते टीकोआयो, यों कहरहेथे कीरतिरानी जी, तब मैंने कह्यो जो होनीहोयहै सो पहिलेही सों दीखे है, जाव तिहारेभी पचासीवर्ष चूल्हेमें गये । अरी प्रोहतानीजी वोतो चोरहै घर घर में माखन चुरातो फिरै है । अरी कीरतिरानी जी या संसारमें सब चोरही चोरहै साव कोईनांय है २५ ॥ रागपद ॥ देखतके सब चोर जगतमें देखतके सबचोर । प्रथम चोर जोर इन्द्रिनवश महालुब्ध बनमोर ॥ पांचचोर सबके उरभीतर चोरीकरै करावै । चोरचोर संसारह खावै कोइएक पार न पावै ॥ हाकिम चोर चोरमुसद्दी चोरशहर व्योपारी । जैसईचोर जानिये सबको कहा पुरुष कहानारी।। ब्रह्माचोर विदितवृन्दाबन बालक बच्छचुराये। साधुचोर हरि हृदोचुरायो जो त्रिभुवनकेराये ॥ सातपांच मिल चोरीकीन्ही जोजाकेमनभाई । सूरदासशठ कहलगबरणै माखन चोर कन्हाई २६ ॥ वार्ता ॥ सो कीरति रानी जी जे चोर नांय है तुम इन्हैंचोर कर के मत समझो जो मेरो विश्वास न होय तो प्रोहित जीसों पूछले । च्योंपुरोहित जी । हम्वै कीरति रानी जी । कीरति रानी जी अब हम जायँहैं । अच्छो प्रोहतानी जी । अरी ललिता विशाखा सखियो । कहा कहो कीरति रानी जी । अरी नेक नन्द के लाला को तो लिवालाव मैं अपने आंखन ते तो देखलूं । हम्वैं बीरजाऊं हूं । अजी श्री ठाकुर जी महाराज। कहा कहो सखी । अजी तुमको कीरतिरानी बोलैहै । चलसखी। (मनसुखा बचन) अरे दादा कहां जाओ हो । अरे सारे बरसाने

जायहैं तो दादा संग में मोऊंको लेत चल ससुराल को गांवहै एक ते दो अच्छे होवे हैं । चल सारे । (ललिता सखी बचन) अरी कीरति रानी जी ये आये । आउलाला बैठो तुमतो लाला ना होरी आवो ना दिवारी आवो तुम तो कोई तेवहार हू में न आवो हो यहतो तिहारो घरहै जैसी यशोदा मैया तैसीही मैं हूं । अरी सखियो देखो लाला को बियारी कलेऊ तो कराव । अरे लाला कछू बियारीकरो लड्डू खाजा खुरमा पापर जलेबी आदि ले के लाला के आगे धरी अरेलाला कछूजेवो यहांकी बातों को कछू बुरो मत मानियो । अरी सखियो लाला को गारी तो गाओ २७ ॥ रागजंगला–सबसखियोंकावचन ॥ यशोदा ने कारी अँधेरी में जायो । याते कारो रूप हरि ने पायो ॥ कीरति गोद गोपाल लिये मुखचूमत मोद बढ़ायो । रूपकी राशि मयंक मुखी मेरी राधे को रूप लजायो ॥ नाम अनेक सुने घनश्याम के जब तें गर्ग गृह आयो । ना हमने वसुदेव सुने बासुदेव कहां ते आयो ॥ कर्मकी रेख मिटै ना सजनी बेद पुराणन गायो । सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको बेद बिमलयशगायो २८॥ रागआसावरी-गारियां ॥ गारी गावै दै दै तारियां ब्रज की नारियां सुकुमार॥ नंदके नंदन हो ब्रज के चन्दना रसगार ॥ मिल सब बरषाने की गोरी । गारी गावैं नवलकिशोरी ॥ तुम सुनो नंद के नन्दा । तुमको पूंछे ब्रज चन्दा ॥ तेरी बहन छैल छिन गारी । हमारे श्री दामा ते यारी ॥ तेरी बड़ी बिनोदन ताई । जाकी सबजग करत हँसाई ॥ नन्द नन्दन तेरी बूआ । सो करत झूंठ के पूआ ॥ नंद नंदन तेरीकाकी । सो कामकला में पाकी ॥ नंदनंदन तेरीमौसी । सो रहत सदा मन हौसी ॥ नंद नंदन तेरी मामी । सो सब ऐबनमें नामी ॥ नंदनंदन तेरी नानी । वाकी बात न हमते छानी ॥ नंद नंदन तेरी दादी । सो सदा फिरै उन्मादी ॥ गोरे नन्द यशोदा मैया । तुम कारे कौन के दैया ॥ शुद्ध न्हाय यशोदा रानी । काहू जार ते रति मानी ॥ अपनी यशुमति को गहि आनो ।

सो आय मिलै वृषभानो ॥ यह नंद वृषभान सनेही। यह एक प्राण द्वै देही॥ तुम सब नंद गांमकी बाला। हम सब बरपानेकी लाला॥ गठ जोरी आन करावो। हृथ फेरो हमैं दिवावो॥ यह रहस किशोरी दास गायो। सो बास सदाव्रज पायो ॥ ऐजी वा बाजै २९ ॥ वार्ता-श्रीठाकुरजीवचन ॥ अरी मैया हमतो जायेहैं। अरे लाला जावहो कछु बुरयो तो नाय मान्यो। ना मैया। अरे लाला ससुरालकी गारियोंको कोई बुरोनायँ मानेहै लाला जैसे तिहारे नंदबाबा तैसे अपने वृषभान और जैसी यशोदा मैया तैसी मैंहूं कछू बुरोमतमानियो, अच्छोजावलाला। हम्वै मैया (मनसुखावचन) अरे दादा बुरोनाय मानो देखो सबलोग बोलैहैं कि ससुरारकी गाली और सोहारी खावेहीके लिये बनाई हैं, सो यामें कहा दोषहै जहां चार सुहारीखाई तहां चारगारीहू खाली जहां वै हजमहोंगी तहां येभी हजम होजायँगी। जासारे तैंने यहां लाकर गाली खिलाई। अजी महाराज मेरोदोष च्यों देवहो आपकोतो खानेकी रुचिथी नायँतौ बैकुंठ छोडकै व्रजचोरासी कोसमें कायको आवते (यशोदावचन) अरे लाला कहां गयोथो तैंने आज इतनी बेर कहां लगाई देखतोसही तैंने ना आज बियारीकरी ना कछुखायो। अरी मैया मैं आज बर्षाने गयोथो। तौ लाला बड़ीबड़ी बातलायो होगो। हम्वैं मैया सुन ३० ॥ रागकाफी-श्रीठाकुरजी वचन ॥ भूषणअपने लेरी मैया। मोर कि चंद्रिका कांचकी मनियां गुंजाफल मोयदेरी॥ रत्नजटित आभूषण भूषण सोतू अपने लेरी। दुरादुरी खेलतमें सखनसँग खेलन मैं नहिं पाऊं। मुखशशि प्रभा बारही राखूं इनको कहां दुराऊं॥ आज सदन वृषभान गोपघर खेलन मैंजो गयोरी। सगरे सखा आगमनभागे मैंहीचोर भयोरी॥ जबहिं महर वृषभान गोपघर गहि अंचल मोहिराख्यो। बदन चूम मिष्टान हाथधर अंगअंग अवलोक्यो॥ तब वृषभान सभाते आये नंद कुँवर ना होई। परमानन्द कुँवरिको दूल्हो कहतरहे सबकोई ३१॥ वार्ता-यशोदावचन॥

अरे लाला कहा चिन्ताहै वहां तिहारी ससुरारहै वहांकी बातन को बुरोनायँ माननो उनीकी बेटीते तिहारी सगाई हुई है। तौ मैया मोको ऐसी दुलहिन भावैहै। कैसीलाला। सुनमैया ३२॥ रागकाफी-श्रीठाकुरजी वचन॥ मैया मोहिं ऐसी दुलहिन भावै। जैसीवा काहूकी ढिटोनी रुनक झुनक चलिआवै॥ करकरपाक रसाल आपने करमोहिं परस जिमावै। करअंचल पटओट बबा ते ठाढ़ीब्यार ढुरावै॥ मोहिं उठाय गोद बैठारे कर मनुहार मनावै (यशोदा वचन) अहो मेरे लाल कहो बाबाते तेरो ब्याह करावै॥ नंदराय नँदरानी दोऊ मिलि मोदसमुद्र बढ़ावै। परमानन्द दासको ठाकुर बेद बिमल यशगावै ३३॥ वार्ता-यशोदावचन॥ अरे लाला बाबातेकहतेरो ब्याहकरावै अरेलाला अबरात ह्वैगई है चलब्यारीकरलो ३४॥ रागकेदारो-यशोदावचन॥ चलो लाल कछुकरौ बियारी (श्रीठाकुरजी बचन) रुचिनाही काहू परमेरी तूकहि भोजन कियो कहारी॥ (यशोदाबचन) वेसन मिले सरस मैदासों अति कोमल पूरी है भारी। जेंवहु कान्ह मोहि सुखदीजे तातकरी तुम लिये बियारी॥ निंबुआ सूरन आम अथानो और करोंदनिकी रुचिन्यारी। बार बारसो कहति यशोदा कहिल्यावै रोहिणि महतारी॥ जननी सुनत तुरतलैआई तनक तनक धरि कंचनथारी। सूरश्याम कछु कछु लैखायो जल अँचयो अरु बदन पखारी ३५॥ दोहा॥ सोये श्याम सुजान हरि सुखसो बीती रात। बहुरि कलेऊ के लिये जननि उठावति प्रात ३६॥ रेखता॥ चल देखिये रंगीली गुलशनकी खुशनुमाई। हर यकतरह चिमनमें कैसी बहारछाई १॥ गेंदागुलाबतुर्रा क्यामालतीनिवारी। फूलोंके भारसेती झुकती है भूमिडारी॥ जाही जुही चमेली नरगिस भली सुहाई। हरयक तरह० २ क्यासोहनी सुहावनी शितल समीरडोलै। बुलबुल चहक लहकसों करती फिरै कलोलै॥ फूली बसन्तीबेली मधुकर रहेलुभाई। हरयक तरह० ३। सुनकर सलोनी

श्यामा सुन्दरशृंगार साजे। सारीसुरंगसोहै बरशशि फूलराजे॥ फूलनकी गुंथीबेनी सखियोंने भलीबनाई। हरयक तरह० ४ मृगमदकी ओडसोहै बेसरि अधिक भुकीली। भृकुटी कमान ताने अँखियांबनी निबूली॥ मुसक्यान माधुरीने चितको लियो चुराई। हरयक तरह० ५। मोतिनकी माल उरबिच कुचकंचुकी सुहावै। द्युतिचन्द्रिकाकी शोभा चम्पाकली लजावै॥ किंकिणीके जाल जगमग नूपुर झनक सुहाई। हरयक तरह० ६। पदपद्म चारु मंजुल शीतल शुभग सुहाई। रसिकनके माधुरी में रसमाधुरी लुभाई॥ बहुभांतिसे छबीली खुसनमनुमा बनाई हरयक तरह० ७। सखियोंके साथ जाके देखी विपिनकी शोभा नागर नवल छबीली छबिदेखिरहे लुभाई॥ हँसिहँसके ललित किशोरी जब कंठसे लगाई। हरयक तरह चमनमें कैसी बहार छाई ३७॥

इतिश्रीप्रथमसनेहलीला सम्पूर्ण॥

अथ मगरोकन वा नवलसखीकी दानलीला॥

दोहा-समाजी वचन॥ धनि ब्रजबासी नारिनर धनि वृन्दाबन धाम। नारायण सुरपतिजिन्हैं निशदिन करतप्रणाम १ प्रातसमै ब्रजनागरी सज अपनौसिंगार। गोरसबेचनको चली गजगामिनि सुकुमार २ मगमें ठाढ़ो सांवरो रोकि सबनकी गैल। रूपसिंधु अरबिन्द दृगरसिक शिरोमणि छैल ३ जब पहुंची ढिग आयकें मृगनैनी वरबाम। तिनाहिं देखि मुसक्यायकै बोलेसुन्दर श्याम ४॥ श्रीठाकुरजी॥ कहांजात ठाढ़ीरहौ तुम्हैं रूप अभिमान। अब आगे पग जिनधरौ बिना दियेदधिदान ५॥ सखीवचन॥ सुनत बचन नँदलालके हँसीं सकल ब्रजबाल। देखोरीअबसांवरोनई चलतहै चाल ६॥ श्रीठाकुरजी वचन॥ एकसखीकीभुजपकरि हँसि बोलेब्रजराज। प्यारी तू आईनईदहीबेचवे आज ७॥ रागठुमरीलम्माचकी जिल्ह-श्रीठाकुरजी वचन॥ आजतूनवेली दधि बेचवेकूंआईरी। योबनकी उमगिसौं भमतचलत गजमनहूकीगतिसै लजा-

ईरी। नैननकेबान भौंहतानकै कमानकहौ कौनपैयहकरीहै चढ़ाईरी। रूपकी निकाईसुघराई नारायण कहांलगिकरूंमें बड़ाईरी ८ रागकालिंगड़ा--सखीवचन ॥ लालतुम काहेको इतरावो। मोरपंख उरसे पगियामें यापै बड़ेकहावो ॥ जबते प्रगटभये तबहींते घर घर धूममचावो। माखन छाछ चुराय हमारी मिलिगोपन संग पावो ॥ फटी पुरानी कामरि ओढ़े बन बन धेनुचरावो। नारायण तुमकौन भरोसे एते गालबजावो ९ ॥रागबिलावल--श्रीठाकुरजीवचन ॥ यहकमरी कमरीकरजानत। जाकेजितनी बुद्धिहृदयमें सोतितनीअनुमानत ॥ याकमरीकेएकरोमपरवारौंकोटिनअम्बर। सो कमरी तुमनिन्दत गोपी तीनलोक आडम्बर ॥ कमरीकेबल असुर संघारे कमरीते सबभोग। जातपात कम्मर है मेरी सूरं सबहि यह योग १० ॥ रागदादरा--सखीबचन ॥ छांड़ो लगर मेरी बहियांगहोना ॥ मैंतोनारि परायेघरकी मेरेभरोसेगोपालरहोना। जो तुममेरी बहियां गहतुहौ नयना मिलाय मेरे प्राणहरोना ॥ वृन्दाबनकी कुंजगलिनमैं रीति छोड़ि अनरीति चलोना ॥ मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल चितटारयो टरोना ११ ॥ रागदादरा--सखीबचन ॥ प्यारे जिन मेरी बांहगहौ ॥ मारग मैं सब लोग देखतु है दूरी क्यों न रहौ ॥ मनमैं तुम्हरेकौ न बातहै सोई क्यों न कहौ ॥ कहिहौजाय आज यशुमतिसे हमरी गैल रोकतहौ। इतनेपै नहिं मानत आनंद घन लड़काई तुम करतहौ १२ ॥ रागकालिंगड़ा--सखी बचन ॥ अपनी गैल चलेजाउ ब्रजबासी। मारगमें सब लोग देखतहैं देखैंगे लोग कहैंगे मेरी हासी ॥ तुम ब्रजबासी अपनी गरजके नयना मिलाय गले डारतहौ फांसी। पुरुषोत्तम हरिकी छबि निरखत तू मेरा ठाकुरमैं तेरी दासी १३ ॥ रागईमनकल्याण--सखीवचन ॥ मन मोहन मोसो मति अटको। झटकौन चीर मटको न छैल दधि की न गैल मटकी पटको ॥ जैसे कछू तुमहौ सबजानू। तुम्हरेगुण अब कहां बखानू ॥ तनक तनक रसकाज राज तुम भवन

भवन निशिदिन भटको। तुम कबते ब्रजमें भये दानी। रोकत हौ मग नारि बिरानी॥ दधि गोरसकी लूटमचाई तुम्हें न काहू को खटको॥ नारायण अबहूं कहमानों। औरनकी सममेहिंन जानो॥ निकसि जायगी सबलंगराई चलौ हटोघरकोसटको १४ ॥ रागदादराआडाकालिंगड़ा--श्रीठाकुरजीवचन॥ हमारो दान देउ ब्रजनारी। मदमाती गजगामिनि डोलै तू दधि बेचन हारी॥ रूपतोहि बिधनाने दीन्हों ज्यों चन्दा उजियारी। मटकी शिश कटीलेनैना मुतियन मांग संवारी॥ हार हमेल गरेमें राजे अ-लकें घूंघर वारी। या ब्रजमें जेती सुंदरिहैं सब हम देखी भारी॥ नारायण तेरी या छबिपै नंद नंदन बलिहारी १५॥ रागझंझोटी सखीवचन॥ चलपरे हटरे काहेको इतरावै। भूषण बसन दधि माखन चुरैया अबकैसी कैसी बात बनावै॥ जिनके बसाये तुम उनहीं सो झगरत निलज न नेक लजावै। नित प्रति धेनुको चरैया नारायणआज तू भूपकहावै १६॥ सवैया--श्रीठाकुरजीवचन॥ नंदबबाकी सौं मारिहौं सांट उतारिकै तो गहनो सब लैहौं। भौंह कमान तू काहे चढ़ावति नैनन डांटे तेहौंन डरैहौं। देखत हौ छिनएकमें भीषम ग्वालनपै दधिदूध लुटैहौं। गूजरी ग्वालन मारु गँवारिहौं दानलिये बिन जान न पैहौ १७॥ रागकालिंगड़ा-सखीवचन॥ मेरी बात सुनौ यदुराई। याकीदधि अबही मति लूटौ तुमकूं नन्द दुहाई॥ याकी सास भोरही याकोभवन हमा-रेलाई। गोरस बेंचन याहि सिखावो योंकहि संग पठाई॥ नई बधू पुनि निपटही भोरी नाहिं जानत चतुराई। तासोंआज याहि मतिरोकौ अबहीं गौनेआई॥ लाज करत मुख घूंघटओढ़ै तुम्हें देखि सकुचाई। नारायण हठतजौ सांवरे निरखत लोग लुगाई १८॥ रागझंझोटीका जिलह-श्रीठाकुरजी वचन॥ सखीतुम नेकतो रूप दिखावौ। घूंघटपट मुख ओटकरौ क्यों याहितनक सरका-वौ॥ ब्रजमें लाजकरै सो बौरी हँसिहँसिकै बतरावौ। नारायण हमदोऊ बरोबर क्यों इतनी सकुचावौ १९॥ रागदादरा-सखी

बचन ॥ मेरोमत लूटोदही मैंतो नई आईरी । सास मेरी भोरी मेरोदेवर अनोखो दधिबेचनमैंनायँ गईरी ॥ ग्वालबाल सबठाढ़े मगमें घूंघटखोल मोहिं गारीदईरी । पुरुषोत्तम प्रभुकीछबि निरखत यानई रीति अनोखी भईरी २० ॥ रागझंझोटी-श्रीठाकुरजी बचन ॥ सखीतुम मेरी ओर क्यों न हेरौ । बरसानेमें पीहर तेरौ कैकोऊ गाम गमेरौ ॥ तूमोसों इतनी क्यों सकुचत मैंहूं देवर तेरौ । घूंघटखोलि एरी नवनागरि दानदीजिये मेरौ ॥ लाजकरौ गोरस क्योंबेचौ घरघर सांझ सबेरौ । नारायण नित कुंजगलिन में रहैकान्हको डेरौ २१ ॥ रागझंझटी-सखीबचन ॥ याको घूंघट पटन उघारौ । परत्रियदेख अनीतिकरौतुम नईनई रीतिनिकारौ ॥ बड़े महरकी पुत्रबधू है नेकतौ बात बिचारौ । भले बुरेकी लाज न तुमको मनभावत करिपारौ ॥ दधिगोरसपै दान लगावत मानोराज तिहारो । नारायणहै कौन हमारो मगको रोकन वारो २२ ॥ वार्ता-श्रीठाकुरजी बचन ॥ अरी सखी तू इतनो क्यों नाचरही है घूंघट तौ हम वाको उघारें हैं कछु तिहारौतौ नांय उघारैं २३ ॥ सवैया-दूतीकीचाल ॥ तूकितहाथ नचावत न्यारो कौन तिहारो घूंघट खोलै । जो इतनी कुलवन्त बनीतू तौ क्यों भोरही घरघर डोलै ॥ योवनमाहिं फिरै मदमाती आप समान न औरको तोलै । नारायण दधि बेचनवारी मुखनहिंबात सँभारिके बोलै २४ ॥ सवैया-सखीबचन ॥ आपभले गुणवानबनो तुम औरनमें अतिखोट बतावौ । माखनचोर कहावतहौ नित तौउ नहीं मनलाज लजावौ ॥ रतनजड़े वर भूषण पहिरे छाछलिये करको फैलावौ । नारायण सबलोग हँसैंगे प्रथम उतारि इन्हैं धरिआवौ (दोहा-श्रीठाकुरजी बचन) दधियोवन नवरूपको जबलग देउ न दान । तबलग जान न पाउगी कोटिक करौ सयान २५ ॥ रागदादरा-सखीबचन ॥ गैलजिनरोकौ योबनमदमाते । इनबातन शोभा नहिंपावो लाजभरीं गारीगाते ॥ तुम जानत हमते यह डरपत तासों बहुत इतराते । नारायण हम यासों न

बोलैं मानि कै जातिके नाते २६ ॥ रागकालिंगड़ा ॥ मारग दीजै मोहनप्यारे । इनबातन शोभा नहिंपावो तुमहो राजदुलारे ॥ बहुत हँसी जनिकरो सांवरे सुनिहैं कंत हमारे । तुमरो कोऊ कछू न करैगो हमें मूंदेंगे तारे ॥ देखे सुने नहीं हम कबहूं तुम सम झगरनहारे । नारायण क्यों रारि बढ़ावौ रे द्वै बापन वारे २७ ॥ रागसोरठ--श्रीठाकुरजी बचन ॥ ग्वालिन दानदेत इठलावै । नितप्रतिही तू यामारग ह्वै क्यों दधि बेचन जावै ॥ हमेंकहत तू द्वै बापनको अपने क्यों न गिनावै । नारायणदे कोटिकताने करि नहिं छूटन पावै २८ ॥ रागमलार--सखीबचन ॥ छैलगैल मतरोकै तू हमारीरे । चाल कुचाल चलो जिन चंचल चर्चाकरैं सब पुर नर नारीरे ॥ हम सुकुमार ठाढ़ी कांपतिहै शिरपर दधिकी मटुकियाभारीरे । नारायण ब्रजकौनबसै सो ऐसी अनीति जो करनि बिचारीरे २९ ॥ रागमल्लारतीनताल--श्रीठाकुरजी बचन ॥ योवनकीमद माती डोलैरी गुजरिया । अंगअंग योवनकीउठत तरंगनई नयना कजरारेवारे तिरछी नजरिया ॥ हाथनमें चूरी नकबेसर करनफूल मुंदरी ललित छबिदेत अँगुरिया । अबलौं तोसी नहींदेखी नारायण दधिकी बेचनहारी नंदकीनगरिया ३० ॥ रागकालिंगड़ा--सखी बचन ॥ छांड़ो मेरी गैल नतो गारी मैं सुनाऊंगी। औरौंके भूलेसे कहूं मोसों जनि अटकौ अभी यशुमति पैपकरि लैजाऊंगी ॥ पहिलेही सों अपनबिड़ाई कहाकरूं मैं देखियोतो कैसी तुम्हें नाच नचाऊंगी । जो मैं सूधो न बनाऊं नारायण तो मैं निजबापकी न आजसों कहाऊंगी ३१ ॥ रागभैरवी ॥ अटपटी पायसूधे बाबा कैसे रहो कान्ह कौने दानलियो जो दानको कहायोहै । किधौं शनी मंगल किधौंराहुकेतु चौथआये किधौंसंक्रांति किधौं ग्रहणहू लजायो है ॥ अचरा न गहो कहो कैसो दान मांगतहो कहा जग जीवनजू ऊधममचायोहै । देखौ सखी कैसेनैन खंजनसे नाचतहैं जानैंतो यशोदामैया कहाखायजायोहै ३२ ॥ रागबरवेपीलूकाजिलह-श्रीठाकुरजी बचन॥ पहिलेमेरोदान चुकारी पीछेबतराइयो प्यारी ।

तो समान तुहींदेत दिखाई नव योवन नव सुन्दरताई और कहां लौ करौंबड़ाई मोहनको मनमोहनहारी॥ अतिबांके हैं नैनतिहारे सानधरे पैनेअनियारे जिनहमसेघायलकरि डारे इनसमान नहीं बान कटारी। नारायण जिन भीर लगावौ देउँ दान अपनेघर जावौ क्यों मटुकीचौपट करवावौ देखिहँसैंगे पुरनरनारी ३३॥ कवित्त--सखीबचन॥ यमुनाके तीर कोउ पावत नहान चीर चुपही चुराइलेहु रूखनि धरतुहौ। कहै छबि छैल केते जानतहौ बन्द छन्द सन्द कहा कहौं नन्दहूको निदरतहौ॥ हम वे नहोहिं येती बातकी सहनवारी बिनाफल पाये तुम कैसेगुदरतहौ। पाईखोरि भीरी चट छोरि लेहिं बीरी अब इहां कारी पीरी आंखैं कौन पै करतहौ ३४॥ रागकाफी॥ हमतुमको जानत करनीके। नितप्रति माखन चोरत डोलत बोलत बचन अटपटेजीके॥ कह्यो जबहिं नंदरानिजीसों तुमहिं तबै ऊखल बँधवाये। परमानन्द सबहिं ब्रज जानत मातयशोमति ये सुतजाये ३५॥ रागआसावरी--श्रीठाकुरजी.बचन॥ को माता को पिता हमारे। कब जन्मत हमको तुम देख्यौं हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे॥ कब माखन चोरी कर खायो कब बांधे महतारी। दुहत कौन गैयाको चारत बात कही तुम भारी॥ तुम जानत मोहिं नंदढिटोना नंद कहांते आये। मैं.पूरण अवगति अविनाशी मायासबन भुलाये॥ (सखी बचन) यह सुनि ग्वाली सबी मुसक्यानी ऐसेही गुण जानत सूरश्याम जो निदरयो सबही मात पिता नहिंमानत ३६ वार्ता--सखीबचन॥ अरे लाला जो तुमनेमात पिताहूको निदरयो तौ और कौनसी बात अब बाकी रहगई मैं तो आपको पहिलेही ते जानूंहूं कि आपमें ऐसे ऐसेगुणहैं ३७॥ रागसोरठ--श्रीठाकुरजीबचन॥ तुम काजानोरी गूजर दधिकी बेचनहार। कौन पिता को मात हमारे जन्म अजन्मे रूप रंग धारे भुवकेभार उतारन लीन मनुज अवतार॥ मेरी माया जगत भुलानो मेरो कह्यो सत्यकर मानो गावत वेद पुराण भागवत यश गावत श्रुतिचार। जों मेरो

निजदास कहावै रसिक प्रीतम निजभक्ती पावै ब्रह्मादिक सनकादिक नारद शेष न पावत पार ३८॥ वार्ता–सखीवचन॥ अरेलाला तू मग जिन रोकै देख तो नेक सही तैंने कबकी छेड़ रक्खीहै तू या नवलसखी तें क्यों उरझैहै चलपरेकूहो ३९॥ रागजिलहमूल तिताला॥ जिन मगरोकौ नंदकिशोर। तोहिं उरझनकी बानिपरी है सांझ तकत नहिं भोर। देरलगत मोहिं सासु रिसावै तुम्हें छैल नित रार सुहावै इन कुचाल कछू हाथ न आवै गागरिया दई फोर॥ तुम अति चंचल ढीठ बिहारी कैसे कूंखिरहे महतारी यहमोकूं अचरजहै भारी घरघर तेरोशोर। नारायणअब क्यों इतरावो भई सो भई न बात बढ़ावो ताहीको तुम आंखि दिखावो जोहोय तेरीबंदोर ४०॥ वार्ता–सखीवचन॥ अरेलाला जो तोकू माखनही खानोहोय तो हम देवैहैं पर दानके नामतौ एक बूंदहूनायँ देवैंगीवैसे सहजहि जोचाहौसोलेवो ४१॥ रागकान्हरो॥ अजहूं मांगिलेहु दधिदैहै। दूधदही माखन जोचाहौ सहजखाहु सुखपैहै॥ तुमद्रोहीह्वै आये हमपर यह हमको नाहिं भावति। करो तहांलो निबहै जोई जाते सबसुख पावति॥ हमैको जान देहु दधिबेचन पुनि कोऊ नहिंलैहै। गोरसलेत प्रातही सबकोउँ सूरधरेउ पुनिरैहै ४२॥ वार्ता॥ इतनी सुनके तब श्रीठाकुरजीने कही अरी सखियो तुमदान नायँदोगी। नाप्यारे ना दूंगी। तोमैं सबनकी मटुकिया फोरडालूंगो, इतनी कहके एकसखीकी मटुकिया झट पटकिदीन्ही। तबसखी कहैहै ४३॥ रागमलार॥ क्योंरे छैल मटुकिया मेरीपटकी। करिकै ढिठाई मेरी दधि बिथराई सबचूरी मुरकाई सुकुमार बहियाँ झटकी॥ अबहीं यशोदा।ढिग पकरिलैजाऊं तोहिं एकनसुनूंगी तेरी बात्त नटखटकी। बदलो लेऊंगी नडरूंगी नारायण कौनसी गरज मेरीतोसों अबअटकी ४४॥ वार्ता॥ इतनी सुनिकै श्रीठाकुरजी बोले अरीसखीमैं बिनादधि दानलिये कभीनायँ जानदूंगो, मेरो यशोदा मैयाकहाकरैगी जोतूडरपावै है। इतनी कहके फिर नवलसखीते कहनलगे

अरीसखी मैं तेरोमुख देखे व दधि योवनको दान लियेबिना ना रहूंगो ४५ ॥ दोहा--श्रीठाकुरजीबचन॥ अहोनवेली गुणभरी धरी मटुकियाशीस। दधियोबनकोदानहम लेंगेबिस्वेबीस ४६ ॥ दोहा सखीबचन ॥ अरी सुहागिनि सुन्दरी नवदुलहन सुकुमार । हठ नाहिं छाडत सांवरो घूंघट नेक उघार ॥ घूंघट पट कछु खोलिकै मुसिक्याई दृगबाल। देख मनोहर रूपको मगन भये नँदलाल ४७ ॥ रागकालिंगड़ा--सखीबचन ॥ अपनो दानलेउ नंदलाल। रस के भरे बचन अतिअटपट कहनलगीं ब्रजबाल॥ दोऊओर दृगसों दृगलागे हियमें प्रेमबिशाल। नारायण याबिधिसों हँसिहँसिकर चुकवत गोपाल ४८ ॥ वार्ता ॥ जब श्रीठाकुरजीने दानलै दीन्हों तबकही अरीसखियो अब तुमनित प्रतिया मारग दधिबेचबे जाव आजते तुमकूं कोई नरोकैगो ४९ ॥

इतिश्रीमगरोकनवानवलसखीकीदानलीलासम्पूर्णम् ॥

अथ श्यामबिरहनीलीला ॥

दोहा ॥ एकदिवस त्रिय भेषभरि परमकौतुकी श्याम। बिरहिनि बनिडोलत डगर लैलै अपनो नाम १ ॥रागठुमरी--श्यामबिरहनी बचन॥ (हेश्याम ४) कोई दिलवरकी डगर बतायदेरे ॥ लोचन कंज कुटिल भृकुटी बर कानन कथा सुनायदेरे ॥ जाके रंग रँग्यो सबतनमन ताकी झलक दिखायदेरे ॥ ललितकिशोरी मेरी बांकी चित्तकी सांट मिलायदेरे ॥ हेश्याम ४ ॥ २ ॥ रागदेश--ललिताबचन--प्रियाजीसे ॥ चलो तो बताऊं तुम्हें भवनके द्वार। एक नारि बिरहनि भईडोलै तनकी नाहिं सम्हार॥ श्यामश्याम मुख नाम रटत है सांवरी रूपअपार। नारायण ऐसी मोहिं दीखत है बडगोपकुमार ३ ॥ कुंडलिया--समाजीबचन ॥ सुनिसजनी के बचन प्रियामनमें ललचाई। निरखनको वह नारि द्वारपै दौरीआई ॥ दौरीआई द्वार देख वह सखी बिरहनी। पुनिताके ढिग गई आप इकली मृगनैनी ॥ करगहि बूझत कौनतू कहा लगाई श्याम धुनि । नारायण तूं सांचकहहो भाई तोदशासु-

नि ४ ॥ राग आसावरी--श्यामविरहनीवचन ॥ आल सखी भोरहीं में पनियांगईरी ॥ सांवरो सलोनो ढोटा बड़ेबड़ेनैन जाकेयमुनाकेतट मोसों भेट भईरी ॥ देख अति रूपवाको नेह उरहार भयो ताही समयलाजको तिलांजली दईरी ॥ उनबिन कलनपरत नारायण कैसी घरीलागी तासों लगन नईरी ५ ॥ रागकान्हरोबागेश्वरी--श्री प्रियाजीवचन ॥ सखी क्यों बौरीभई है वा छलियाके बियोग। भूलिकै नाम न लीजो श्यामको चरचाकरैंगे लोग ॥ तूसुकुमार कठिन मग नेहको नहिं श्रमतेरेयोग। नारायण विनजाने बूझे तू मतिलगावै तनरोग ६ ॥ रागसोरठ--श्यामबिरहनीवचन ॥ जाहिलगन लागै घनश्यामकी। धरत कहूं पग परतहै कितहूं भूलिजाय सुधि धामकी ॥ छबि निहारनहिं रहत सार कछु घरी पल निशि दिन यामकी। जितमुंहउठै तितही कूंधावै सुरत नाछाया घामकी ॥ कोई करौनिन्दा कोई अस्तुति मैंनेतजी कुलकानकी। नारायण बौरीभई डोलैरहै न काहू कामकी ७ ॥ रागभैरवी ॥ लागगईतब लाज कहारी। जे दृगलगे नंद नंदनसों औरनसों फिर काजक-हारी ॥ भर भर पियेप्रेमरस प्याले होले अमलकोस्वाद कहारी। ब्रजनिधि ब्रजरसचाख्यो चाहै या सुखआगे राजकहारी ८ ॥ राग देशसोरठ--श्रीप्रियाजीवचन ॥ सखी तूमतले वाकोनाम नायँपछितावैगी ॥ मन कपटी मुख मीठा बोलै कली कली रस चाखतडोलै ऐसे सों कर प्रीति कहा फलपावैगी ॥ मेरीकही तू चितनाधरत है याते अब मोहिं जान परतहै तू अपनेसुन्दरतन रोग लगावै-गी। नेहकिये कछु हाथ न आवे लोकलाज कुल धर्म नशावे नारायण तू नाहक जगत हँसावैगी ९ ॥ लावनी--श्यामविरहनीवचन ॥ सखी कैसी करूं मैं हाय न कछुबश मेरो। बिनदेखे सांवरो चन्द दृगनमें अँधेरो ॥ सखी ऐसो सुन्दर नाहिंकहूं मैं सब जग हेरो। वाकी जो लिखै तसवीर सो कौन चितेरो ॥ सखी कठिन छैलको बिरह आन मोहिं घेरो। सगरी निशि तारे गिनतहीहोत सबेरो ॥ सखी जो तू मिलावै आज मोहिं वह रूपउजेरो। जब

लों जीवोंगी गुण न भूलोंगी तेरो ॥ सखी नारायण जो नाहिं मिलै वहमनको लुटेरो। तबनंदद्वारपैंजाय करूंगी मैं डेरो १० ॥ वार्ता ॥ अरी हेसखी वो सांवरो नैननकी कटारी मारके ना जानूं कहां चल्योगयो, मेरेतो हृदयमें अतिपीर उठीहै ११ रागकल्याण ॥ नयनों की मारीरे कटारी मेरे। सुनियोरी मेरी पार परोसिन ढीठ भयो गिरिधारी ॥ यमुनाके तट भेटभई री मोसों ऐसो छैल बिहारी ॥ सास बुरी घर नंद हठीली देवर सुनैदे गारी ॥ मधुर अली घरजात बनैना पीरउठी अतिभारी १२ ॥ वार्ता ॥ इतनी सुनके श्री प्रियाजी ने कही अरी सखी नेक धीरज तौ धर ऐसी क्यों व्याकुल होवै है। तब श्याम बिरहनी सखी बोली हे प्यारी जी धीरज कैसे कै धरूं १३ ॥ रागरामकली-श्यामबिरहनी बचन ॥ एकग्रामको बास धीरज कैसेकैधरों। लोचन मधुप हटक नहिं मानत यद्यपि यत्नकरौं ॥ वे या मारग नित-प्रति आवत हौंदधिलै निकसौं। पुलकत रोमरोम गदगद सुर आनंद उमगभरो ॥ पलअन्तर चलजात कल्पभर बिरहा अनल जरों। सूरसकुच कुलकान कहांलग आरजपंथडरों १४ ॥ दोहा ॥ नन्दभवन जानूं नहीं एरीराजकुमारि। नेकदया करि संगह्वै लै चल वाकेद्वार १५ ॥ रागकालिंगड़ा-श्रीप्रियाजी बचन ॥ उठसजनी चलितोहिं बताऊं सनमुख नन्दको द्वार दिखावै। तूकित धावतिहै पुरबाहिर मोपीछे भटुक्यों नहिंआवै ॥ एकतो हियते यह डरमोकूं जोकबहूं यशुमति लखिपावै। नारायण मनमें जानैगी यहसब व्याधि यहीसँगलावै १६ ॥ दोहा समाजी बचन ॥ नंद द्वार पै गईजब कपट बिरहनी बाम। पुनि पुनि अति अकुलायकै लेत श्यामको नाम १७ ॥ रागकाफी-श्यामबिरहनीसखी बचन ॥ बेदरदी तोहिं दरद न आवै। चितवनमें चितबश करिमेरो अब काहेको आंखचुरावै ॥ कबसों परी तेरे द्वारेपै बिनदेखे जियरा घबरावै। नारायण महबूब सांवरे घायलकरि फिरिगैल बतावै १८ ॥ रागईमनकल्याण ॥ तेढ़ीयाकी चितवन सानूं प्यारी लगदी

सांवला मेढा दिलदार। सोहणी सूरति बड़ी बड़ी अखियां गल बिच गजमुतियनदा हार॥ एक नजर तुसी हंसिकर देखौ वारूं में जियराहजारबार। नारायण अली रूपदिवानी आयपरी अब तेढद्वार १९॥ राग काफी ॥ बिनदेखे मन माने न मेरौ। श्याम बरण चित हरण लाड़िलो रूप सुधानिधि जगत उजेरौ॥ चाल मराल मनोहर बोलन चपल नयन मोतन हँसि हेरौ। नारायण त्रिभुवन को स्वामीहों वृषभान कुमरिको चेरौ २०॥ वार्ता॥ जब बिरहनिने आपे कूं चेरो कह्यो तब श्री प्रियाजी अचरज है कै ललिता सखी सों बूझिबे लगी-अरी बीर यह लुगाई है कै फिर लोग कैसे बनिबे लगी जो आपेकूं चेरो बनावैं चेरी बनैं तो एक बात है, अरी सखी तू देखतो यह कछू छलसों मालूम परै है २१॥ दोहा॥ ललिता लखि नंदलालको बोली सुन सिरमौर। बिन प्रीतम चेरे चतुर चेरी बनैं न और २२॥ सोरठा॥ सुनि ललिता के बैन प्यारी निजमन में हरष। मानो छबि को ऐन पुनि पुनि निरखत लाल मुख २३ वार्ता--श्रीप्रियाजीवचन॥ धन्यहो श्रीलालजी महाराज जो काहूकी बहूबेटीहो ते तोऊ घर बसावते २४॥ रागध्रुपदकान्हड़ादरबारी॥ आज भले बनेलाल अद्भुत नई ब्रजकीबाल दृगनसो है कजरा अतिमीठी मीठी करत बात॥ अंगिया मनमोहन हारी दामन की शोभा न्यारी झीनीनवचूंदरी में झलकत है श्यामगात॥ हाथनमें चूरी माथे मुतियनकीमांग भरी काननमें झुमका पग बिछियन धुनि अति सुहात॥ नारायण बार बार प्रीतमकीछबि निहार अचरा मुखदैकै प्यारी मंद मंद हँसत जात २५॥ वार्ता श्रीठाकुरजीवचन॥ श्रीठाकुरजी बोले हे प्यारीआपने तौ कहीरही कि अब तुम्हारे छलमें कबूनआवेंगी अबकैसे आई। श्रीप्रियाजी ने कही हेलाल तिहारे प्रसन्नकरिबेकूं २६॥ रेखता॥ धीरेचलो चमनमें क्यागुल बहारहै। क्याखूबखरीरंगत बूबेशुमारहै॥ रौशें किनार सबजी क्याबेलदारहै। सुरखी सुहाग सुन्दर शोभाअपार

है ॥ चम्पा तुर्राजुही का क्याखुश बिचार है। प्यारीकी नज़र पड़ती फूलोंकी डारहै ॥ गुंचा गुलाब गुलका क्या बेक़रार है। दिलदार यार बुलबुलके इन्तिज़ार है ॥ देखो निकुंज कैसी सुन्दर सुढारहै। छज्जे व बुर्ज मेंहदीके दर दिवार है ॥ देतामदन मुझतो फूलनकीमालहै। केशवकहें किशोरी कीजै बहारहै २७ ॥

इति श्याम बिरहनीलीला सम्पूर्ण ॥

अथ श्रीछद्मदानलीला ॥

दोहा ॥ दधि मटुकी शिरपै धरीचली बेंचिबे बाल। नारायण ठाढ़ेगली छैल छली नँदलाल १ ॥ वार्ता ॥ जबसखीने देख्यो श्रीठाकुरजीतो गैलरोकके ठाढ़े हैं ये-देखैंगेतो झगरा मचावैंगे, यातेजल्दीचलीजाऊं तो अच्छोहै जबसखी चलीतब श्रीठाकुरजी ने देखके कह्यो अरी सखी तैं कहां दौरीजावै है यहांपहिले मेरो दानतो देजा २ ॥ रागजिलह-श्रीठाकुरजीवचन ॥ ठाढ़ीरहौ ठाढ़ीरहौ रूपकी निधान। बरजोरी कितजावो दौरी बिनादिये दधिदान ॥ काहूभांति उपमा तुवछबिको करि नहिंसकत बखान। घूंघटमें मुख दमकत ऐसे ज्यों बादरमें भान ॥ हमनिजकर मांगतरिसात तुम भलीनहींयहबान। नारायण तुम आजहि आई नई भई पहिचान ३ ॥ रागईमनकल्याण--सखीवचन ॥ मनमोहन मोसों मतिअटकौ। झटकौनचीर मटकौ न छैल दधिकी नगैल मटुकी पटकौ ॥ जैसे कछू. तुमहौ सबजानू तुम्हरे गुण अबकहाबखानू तनक तनक रसकाज राज नित भवन भवन निशिदिन भटकौ। तुम कबके ब्रजमेंभये दानी रोकतहौ मगनारि बिरानी दधिगोरस कीधूममचाई तुम्हें न कहूकोखटकौ ॥ नारायणअबहूं कही मानौ औरनकी सम मोहिं न जानौनिकसि जायगी सबलँगराई चलौ हटो घरकोंसटकौ ४ ॥ दोहा-सखीवचन ॥ झगरझगरबतरात मग निपट अनोखो छैल। मटुकी फोरी लकुटसों बिखर गयो दधि गैल ५ ॥ रागमलार-सखीवचन ॥ क्योंरे छैल मेरी मटुकिया पटकी। करिकें ढिठाई मग दधि बिथराई सब चूरी मुरकाई सुक-

मार बहियां झटकी ॥ अबहीं यशोदा ढिग पकरि लै जाऊं तोहिं एक न सुनूंगी तेरी बात नट खटकी। बदलो लेऊंगी न डरूंगी नारायण कौनसी गरजमेरी तोसों अबअटकी ६॥ दोहा-सखीवचन सखीसे ॥ तू यासों जीतैनहीं लोगसुनै हैभीर । जो कछुभई सो भई अब चालि अपनेघरबीर ७॥ रागकालिंगड़ा-सखीबचन ॥ मैं कैसे घरजाऊं मोसों ननँद लड़ैगी। आगेही चवाव मेरो करतहै निशिदिन मटुकीके बिनदेखे अधिक जरैगी ॥ कुटिल कुचाल वाके मनकी न थाह परै नेकही मैं झूठ मूठ साख भरैगी। याहीसों मैं अति घबराऊं नारायण जानै वो कहा मोपै दूसन धरैगी ८ ॥ वार्ता ॥ जबसखीने आपसमें योंकही कि हेबीर अबमेंबिना मटुकीके कैसे घरजाऊं। यहबात श्री प्रियाजीने भी सुनलीन्ही कि आज मगमें श्रीलालजी सखीनसों झगरै हैं और दधिकी मटुकियाभी एक सखीकी फोर दीन्ही है यह सबहाल एक सखीने आनके श्रीप्रियाजीसों कह्योरह्यो । तब श्री प्रियाजी श्रीदामाको भेष धरकै लालके छलबेकूं तहां आईं ९ ॥ दोहा ॥ श्रीदामाको भेषधर प्यारी परम सुजान । प्रीतमके ढिग आयके यह विधि करत वखान १० ॥ रागकालिंगड़ा-श्रीप्रियाजी वचन ॥ लाल तोहिं मैया बेगिबुलावै। बछरा छूटिगयोहै तेरो पकरनमें नहिंआवै ॥ मोहिंकह्यो तूजा लिवायला जहां तोहि खेलत पावै। नारायण अब चलतू झटपट नातरगाय चुखावै ११ ॥ वार्ता ॥ यह सुनके श्रीठाकुरजीने कही चल सखा तब सखी बोली अबतो सखाकी हिमायततै छूटचले हौ जब अकेले पाऊंगी तब समभूंगी। जब श्रीठाकुरजी कुछक दूरगये तब श्रीप्यारीजीने मारगमें बूझी, हे लालजी तुमने हमकूं पहिचान्यो कि नायँ । तब श्रीठाकुर जी बोले हे श्रीदामा आज तू कछू भांग पीआयोहै जो ऐसे बूझै । तब श्रीप्यारीजी हँसिकै बोली १२ ॥ दोहा ॥ हमहूं छल कैसो कियो लखिनसके गोपाल। निरख ललीकी नईछबि पुनिपुनि हरपत लाल १३॥ वार्ता॥ तब श्रीठाकुरजीने कही हे प्यारी आज

तुमने बडो छलकियो जो मैं न पहिंचान सक्यो तब श्रीप्रिया जीने कहा हे प्यारे आपहूतो छल कियोकरौहो १४ ॥ रेखता ॥ सुन्दर अनूप जोडी अतिमनकी भावती। देखी मैं आज मगमें कुंजनसे आवती ॥ अँगअंग देत शोभा भूषण जडाउ आली। नयननमें सोहै काजर अधरनपै पानलाली ॥ प्रीतमके कांधे कर धरे प्यारी अनन्दसों हंसिहँसिके करत बातें मुख ललित चन्दसों॥ पगधरत हौले हौले गतिदेख हंसलाजें। नूपुर परम मनोहर अति मधुर मधुर बाजें ॥ या भांतिसों मगनह्वै क्रीडा करेंहै दोऊ। नारायण रसिक जनबिन यह रस न जानेंकोऊ १५ ॥

इतिश्रीछद्म दानलीला सम्पूर्ण ॥

अथ नव पनिहारी लीला ॥

दोहा-समाजीवचन॥ ब्रज मंडल के बासकी करत चतुरमुख आस। नारायणते धन्यहैं जिनको नित्य निवास १ पनघट की लीला सुनौ सज्जन जन धरि ध्यान ॥ नारायण बरणन करूं अपनी बुद्धि प्रमान २ ॥ दोहा-श्री ठाकुरजी बचन ॥ एक दिवस उठि भोरही छलिया श्याम सुजान त्रिया भेष धरिकै चले गली भूप वृषभान ३ शिरपै सोहै ईंडुरी रत्न टँके चहुं पास। तापै कंचन कलश धरि चले रूपकी रास ४ भूप द्वारपै जायके टेरत सुर गंभीर एरी कोऊ चलतहै भरिबे यमुना नीर ५ ॥ राग जैजैवंती वा आसावरी ॥ बेग चलौ जलभरिबे नेवली। कब सों टेर रही मैं द्वारे एक न निकसत सखी सहेली। संग साथ में खोजत डोलूं कोऊ मिलै मेरी मन मेली नारायण मग डरलागतहै यमुनाजाय न सकूं अकेली६ ॥ दोहा-समाजीवचन ॥ टेर सुनत नवनागरी गोपलली छबि रास। कंचन घट धरि शीशपै जुरि मिलि आईं पास ॥ अद्भुतशोभा निरखिकै उरसुख भयो अपार। रूपठगौरीमें ठगी इकटक रहीनिहार८ ॥ वार्ता ॥ श्रीप्रियाजी वा सबसखी अपनेअपने घटलेके श्रीठाकुरजीकेपास आके एकटक दखेबलेगीं, तब उनमेंते एक सखीने बूझी हेसखी

तैं या ग्राममें कहां रहैहै मैंतो तोय आजलों कभूं नायँदेखी ९॥ रागदादरा-सखीवचन॥ तुम या ग्राम कहांरहौ आली। हमकबहूं देखी न सुनी है यह शोभा छबि रूप निराली॥ नख शिखलों शृंगार मनोहर अधर रची ।।ननकी लाली। नारायण कहो प्रगट खोलिके बात न राखो बीच बिचाली १०॥ रागदेश सोरठ--श्री ठाकुरजीवचन॥ प्यारी हो तो याही पुर मांहि बसत। पै मैं निशि दिन अपने भवनही रहत निज प्रीतम सों हँसिरस सुख बिलसत॥ पनघट यमना तट अरु जिततितदरशन झांकी बन विहरन हित कहुं बहुतनमें घरसों निकसत। नित डगर बगर इत उत डोलत मोहिं नारायण अति सकुच लगत याही सों में नाहिं कितहूं उकसत ११॥ वार्ता॥ इतनी सुनिकै श्री प्रियाजीने पूछयो हे सखी तेरो नाम कहाहै प्रगटतोकह १२॥ दोहा-श्री प्रियाजीवचन॥ नामकहातेरो सखी हमसों प्रगट बखान १३॥ श्रीठाकुरजीवचन॥ नामहै मेरो गुणवती सुनौ कुमरि वृषभान१४॥ श्रीप्रियाजी वचन॥ अरीगुणवती गुणभरी मृदुल मनोहर गात। क्यों कांपत तेरो बदन सांचकहै तू बात१५॥ रागआसावरी--गुणवतीवचन॥ प्यारी नंदसुवन प्रगट्यो उतपाती। कहा कहूं वाकेगुणतुमसों चोर जारघटवार जगाती॥ जोकबहूं मोहिं डगरबगरमें देखतहै कहुं इतउतजाती। सबकेबीचपुकार कहतहै कहांचली योवन मदमाती॥ वाकी इनकुचालसों सजनी अति भयभीत कंपत दिन राती। नारायण निजलाज काजहित गिरिजापति नितरहूं मनाती १६॥ वार्ता॥ तब गुणवतीने कह्यो हे प्यारीजी याहीसों मेरोबदनकांपै है और जीयऊघबरावैहै १७। रागकाफी--फिरगुणवतीवचन॥ प्यारी याहीसों जिय घबरावै। मैं अबहीं आई या ब्रजमें छल बल नैक न आवै॥ जो कदापि वा नगसों मगमें इकले भेट ह्वैजावै। फिरिजानै वह यशुमतिढोटा कहा कलंक लगावै॥ याही शोच भईहौं मैं दूबरी धीरज कौन बँधावै। नारायण हरि लाजरखै तौ तौ अब रहने पावै १८॥

वार्ता ॥ तब श्रीप्रियाजीने सखीनसों कही हेसखियो याकूं अच्छी तरहसों लेचलो या श्याम के नाम सुनेते डरपैहै १९ ॥ राग दादरा--श्रीप्रियाजी वचन ॥ याहि भली विधिसों लैचलोरी। नंदनँ-दनके नामसोंडरपै अतिभोरी यहगोपकिशोरी॥ यद्यपिहमहूं सब जानतिहैं बिन फागुन वाकी नितहोरी। नारायण अब साथ हमारेलंगर करिनसकै बरजोरी २०॥ रागसोरठ--श्रीप्रियाजीवचन॥ तू चलिरी हमारे संग संग। अब जिन डरपै वा रसियाको सुनि सुनि के नये रंग ढंग॥ तोहिं देखि ऐसोको जाको हिये न लगत अनंगरंग। नारायण सुकुमारसांवरी तूसुन्दर सबअंगअंग २१॥ रागजंगलाझझोटी--समाजी वचन॥ जलकोभरन चली ब्रजबाला। शरदइन्दु सम कान्ति बदनकी लोचन रतिपति भाला॥ तिनके मध्य बेष बनिताको अति छबिदेत गुपाला। नारायण कोऊ ना लखै यह कौतुकी नंदको लाला २२॥ वार्ता॥ जब सबसखी वा प्रियाजी चलीं तब गुणवतीनेकह्यो, हेबीर या मारगते नायँचलो या मारगमें वो छैल ठाढ़ोहोयगो २३॥ रागदादरा--गुणवतीवचन,॥ या मारग न चलौरी सयानी। या मारग वह ठाढ़ोह्वैहै मैं निज मन अनुमानसों जानी॥ हौंतुमको एक गैलबताऊं जाहि कोऊ नहिं जानत प्रानी। नारायण स्नान ध्यानकरि निर्भय भरलावैं गी पानी २४॥ दोहा-श्रीप्रियाजीवचन॥ अरी सखी मिठ बोलनी लैचल वाही गैल। जामारग हम सबनको लखिनसकै वह छैल २५॥ गुणवतीवचन॥ ठुमकिधरत तुम चरणको नूपुरबजतरसाल। सुनिपावैगो सांवरोआवैगो ततकाल २६॥ रागदादरा॥ धीरेचलौ तुम गोप ललीरी। नूपुरधुनि जो सुनिपावैगो घेरैगो फिरि आय गलीरी॥ उरझौझार कठिन सों सुरझत हम अबला वह पुरुष बलीरी। नारायण मग दांव घातमें लग्यो रहै नित छैल छलीरी २७॥ दोहा-समाजीवचन॥ बातकहत खेलत हँसत बिधुबदनी बर बाम। जब पहुंची यमुना निकट बोले छलिया श्याम २८॥ गुणवतीवचन॥ इकदिन याही ठौरपै मोहिं रोकियो लाल।

सो तुमसों मैं कहा कहूं जा बिधि करी कुचाल २९ ॥ श्रीभियाजी वचन ॥ पुनि तोसों उन कहा कही सो सुनिबे को चाव । प्रगट कहै तू खोलिकै अब जिन राख दुराव ३० ॥ रागखम्माचवाकल्याण-गुणवतीवचन ॥ लंगर की बात सुनौ सगरी । एक दिना मैं जलकूं आवत शीश धरे कंचन गगरी ॥ याही ठौर मो भेट भई उन बहुत करी झगरा झगरी । नारायण कर झटक पटक घट घेरलई पनघट डगरी ३१ ॥ रागईमनकल्याण-पेजन ॥ तुमसुनो छैलकी बात । बेर बेर मोतन हँसि हेरै चंचल नैन चलात । मैं सकुचिकोऊ लखिलैगो मगमें आवतजात । नारायणपुनि चरचा होगी भवन भवनमें प्रात ३२ ॥ दोहा ॥ योंमेरी बैयां गही यों रूखेपन हेर । यों शिरसों गागरि पटक यों ठाढ़ो मग घेर ३३ ॥ वार्ता ॥ या भांति सों सखीनसों बतरावतही बतरावतमें अपनो निजस्वरूप प्रगटकरिकै आगेलकुटलियेठाढ़ेह्वैगये, और यों कहन लगे ३४ ॥ रागमल्हार--श्रीठाकुरजीवचन ॥ ठाढ़ीरहो नवगोपकुमारी । बिन हमसों बूझे कितजावो तुमहीं नईआई पनिहारी ॥ इनघाटन मेरो करलागत जानतहैं सिगरेनरनारी । नारायणसो बेग चुकावो गजगामिनि कटिकेहरिवारी ३५ ॥ दोहा--सखीवचन ॥ अरी सखी यह छलभयौ हमसबभोरीबाम। भेदनहींजान्यो कछू यहछलिया घनश्याम ३६ ॥ रागदादरामल्हार ॥ कैसेभरैं अबजल की गगरिया । ललित त्रिभंग आगे है ठाढ़ो रोकिरह्यो नँदलाल डगरिया ॥ हमयाकूं जानतिरहीं अबला यहतो निकस्यो श्याम झगरिया ॥ नरसों नारि नारिसों नरपुनियह कौतुकहोय याही नगरिया ॥ तासोंकहाबश्यापै जानैबांधीनिलजताईकी पगरिया । नारायण अंगुरी दांतन दै भई अचरज ब्रजनारिसगरिया ३७ ॥ दोहा-सखीवचन ॥ रोकनहारेकौनतुम हमैं गैल नहिंदेत ३८ ॥ श्रीठाकुरजीवचन ॥ हमयहांके राजासखी निजकर तुमसोंलेत ३९ रागझझोटी--सखीवचन ॥ चलपरे हटरे काहेको इतरावे । भूषण बसन दधिमाखन चुरैया अबकैसी कैसी बातबनावे ॥ जिनके

बसाये तुम उनहींसों झगरत निलज न नेकलजावे। नितप्रति धेनिको चरैया नारायण आज तू भूपकहावे ४० ॥ रागदेशसोरठ श्रीठाकुरजीबिचन॥ योवनकीमाती इठलातीडोलै ग्वालिनि हमकूं लगावत दोष। निजकरमांगे बिनमें तोसों और कहालियोखोस॥ लखिनपरत तेरेमनकी गतिछिनमें हँसत, छिनरोस। नारायण-तोसी अबलाके धन्य जोबसत परोस ४१ ॥ रागदेश-सखीबचन॥ छांडो मेरी डगर झगरजिन सांवरेमोहि अतिदेरभई। कबकी में आईजलभरिबेकोतैंबिचघेरलई॥ सासननदियादेखत साथमोहिं नामधरैंगी कई। यमुनाको मिसकरि गगरिया शिरधरजानै कहां तूगई॥ लाजको रहिबो कठिनहि दीखै कैसीकरूं हेदई। अबतो में जानचुकी नारायण होवैगी चरचा नई ४२ ॥ रागखम्माच-श्रीठाकुरजीबचन॥ जोइतनी तू लाजलजावै। घरही बैठिके जलन भरावत क्यों यमुनातट दौरीआवै॥ तो समान या ब्रजमंडल में कोऊ नहीं कुलवन्त दिखावै। निजमन कपट बसत नारायण सासननदको दोषलगावै ४३ ॥ रागखम्माच-सखीबचन॥ एरीसखी याकूं हमजानें। यह अपनौ हठनाहिं तजैगौ कंससों रोकिरखी हमयानें॥ हौं अबलाकी कौन चलाई बिधिनाहूकी कहीनहिं-मानें। नारायण योवनगरबीलौ मटकि मटकिके कुटिल भोंताने ४४ ॥ रागखम्माचकाजिल्ह-श्रीठाकुरजीबचन॥ तुमही कुलवन्त में देखी आज मणिगागरि नागरि शीशधरी। दृगमीनसे चंचलचलत इतउत मुसिक्यान अधरछल छंदभरी॥ फरकै सब अंगअनंग रंगे भृकुटी अति कुटिल कमान खरी। तनरोम रोमसों नारायण चंचलताई की बरषै झरी ४५ ॥ वार्ता॥ यहसुनिकै तब सखी आपसमें कहिबेलगी कि अरीबीर याकूंबिना कछु दिये छूटबे नपावोगी ताते यासों बूझोके कहाकर मांगै है तब एक सखी ने बूझी है श्रीठाकुर जी महाराज आपकूं कर में कहा चाहिये, तब श्री लालजी बोले कि सुन सखी ४६ ॥ राग कालिंगड़ा-श्रीठाकुरजीबचन॥ सो तुम सुनो सकल सुकुमारी

मैं नित जल चढ़ाऊं शिवजीपै या बन सघन मँझारी ॥ आज गयो मैं गऊ बिवायबे एरी रूप उजारी । ता कारणसों बिना न्हाये मैं नहिं पूजे त्रिपुरारी ॥ तुम निज निज घट जलसों भरि कै अपनी अपनी पारी । नारायण चल शंभु नहावो मो बदलै ब्रजनारी ४७ ॥ दोहा-सखी बचन ॥ हम कबहूं देखी नहीं कौन ओर वह ठौर । जहां बिराजत उमापति देवनकेशिरमौर ४८ ॥ दोहा-श्रीठाकुरजीबचन ॥ जो तुममें मुखिया सखी चलै हमारे साथ । ठौर बतावैं हम तुम्है जहां भवानी नाथ ४९ ॥ रागकालिंगड़ा-सखी बचन श्रीप्रियाजीसे ॥ तब सखियनने कही सुनिप्यारी । पहिलेही तुम यमुना जल भर जाय पूजि आवौ त्रिपुरारी ॥ यह प्रिय बचन सुनत सजनीके निजहीये हरषी मन प्यारी । नारायण ऊपरके मनसों मैं न जाउं कह भानु दुलारी ५० ॥ राग कालिंगड़ा-श्रीप्रियाजीबचन ॥ मैं इनके संग इकली न जाऊं । बीर तिहारे नित तानेसों फिरि कैसे मैं पीछो छुड़ाऊं ॥ जैसी कछु तुमहो सब जानूं प्रगट कहे तें कहा फल पाऊं । नारायण मैं जान बूझिकै क्यों अपने पट झार लगाऊं ५१ ॥ राग परज-सखी बचन श्रीप्रियाजीसे ॥ सांचेही तुम मनकी अति भोरी । तुम को सदा हमारी ओर सों बन्यो रहत है बहम किशोरी ॥ हमहूं तो इकली सब इनके संग जावैगी गोरी । नारायण फिरि तुम क्यों डरपौ जावौ वेगि भईदेर न थोरी ५२ ॥ वार्ता ॥ श्री प्रिया जीने कही अरी सखी जलतो मैं चढ़ाय आऊंगी पै तुम कहूं चली न जैयो । हम्बै प्यारीजी न जायँगी पै नेकजल्दी अइयो । आप अच्छोबीर । फिर श्रीप्रियाजीने श्रीयमुनामें कंचनकी झारी भरि के प्रीतमके संग चली जब थोरीदूर निकलगई तब मारग में श्री ठाकुरजीने कही हे प्यारी यहसब रचना आपहीके मिलि बे कारग रचीहै । तब श्रीजीने मुसिक्यायके कही सो तो हम जानै हैं, फिर श्री लालजी अपनी प्यारी कूं बनकी शोभा दिखा यबे लगे ५३ ॥ कवित्त श्री ठाकुरजीबचन ॥ देखो प्यारी बिपिन में

कैसी छबि छाय रही झुकि रहि लता अति लगत सुहावनी। फूले फूल रंग रंग भंवर गुंजार करैं ठौर ठौर कोकिला बोलत मन भावनी ॥ मृगीनके सहित मृग डोलतहै इत उत चलत पवन तन तपन नसावनी। कहै नारायण प्यारीआपको आगमन भयो तासों बनराजने करीहै पधरावनी ५४ ॥ राग खमाच श्री ठाकुरजी वचन ॥ आज बन कैसी छबिन छईहै। देख प्रिया अति सुन्दर यहद्रुम झोकन झुकन झईहै ॥ बोलत मोर चकोर हंस प्यारी सुनतहि मोद भई है। परमानंद प्रभु ऐसे भाषत प्रिय गलबांह दईहै ५५ ॥ रागधनाश्री–श्री प्रियाजी बचन ॥ सुन्दर मनोहर अति बिपिन यहहै प्रगट ब्रजमें सही। मैं नित तिहारे मिलनको अब आऊंगी यह ठौरही ॥ अब चलो प्यारे बेर भई सब सखीजन भ्रममानही। आनंद परमानंदमनमें प्रियायोंमुख भाषही ५६ ॥ राग टोड़ी–सखी वचन सखी से ॥ देरभई क्यों न आई प्यारी। कैकंहुंडगरभूलिगई प्यारीकै मगचलतभयो श्रमभारी ॥ कै पूजनमें बिलमलगीहै कैबनमें निरखतफुलवारी। कैबिरमाय रखी रसिय्यां ने कैअबलो ढूंढ़तत्रिपुरारी ॥ कै मगमें कहुं कांटो लाग्योकै इकली निज भवन पधारी। कै छिपिरही खिजावनके हित नारायण शोचत ब्रजनारी ५७ ॥ दोहा–समाजी बचन ॥ घट उठाय उतही चलीं जहां दोऊ बन माहिं। जाय निहारे द्रुमतरे ठाढ़े दै गल बाहिं ५८ सघन लताकी ओटते छबि निरखत ब्रज बाल। भागसराहत आपनो पुनि पुनि होत निहाल ५९ ॥ राग सारंग–सखी वचन सखीसे ॥ दोऊ गलबाहियांधरेहै। रति रतिपति मति मोह दलित कर ललित कदंब तरेहै ॥ घन दामिनि यामिनि करकी दुति तन मुख मंजु भरे है। कमल मीन मद मोजन खंजन छबि चखचोर भरेहै ॥ नील पीत पटमीत अलौकिक सकल सिंगार करेहै। मंद मंद मुसकात परसपर प्रेमके फंद परेहै ॥ परमानन्द मगन मनमें अति बतियां करत खरेहै ६० ॥ राग बिलावल–फिर सखी बचन ॥ आज इन दोउनपै वालि

जैये। रोम रोम सों छबि बरषत है निरखत नैन सिरैये ॥ रूप रास मृदु हास ललित मुख उपमा देत लजैये ॥ नारायण या गौर श्यामको हिये निकुंज बसैये ६१ ॥ वार्ता ॥ जब सखीजन निकट पहुँचीं तब प्रगट होयकै बोलीं बलिहार श्री ठाकुरजी महाराज आप भली पूजा करवायबे आये। तब श्री ठाकुरजी बोले अरी सखियो एक इनकेही जल चढ़ायवे सों भोलानाथ प्रसन्न ह्वै गये अब तुम भलेही जल भरौ। तब सखीजन बोलीं दंडवत् महाराज आपकूं धन्यहै जोऐसो छलबलकियोकरौहौ६२॥

इति श्री नवपनिहारीलीला सम्पूर्णम् ॥

अब पनघट वा उरहनोलीला ॥

दोहा-समाजीबचन ॥ पनघट की लीला नई कहूं प्रेमसों गाय। नारायण जे रसिक जन श्रवण करैं चितलाय १ निज निज घट लै ब्रजबधू गईं लाड़िली पास यमुनाजल भरिबे चलौ लली रूपकी रास २ ॥ वार्ता ॥ सबसखी जन अपने अपने घटलैकै श्री प्रियाजी के पास गईं और कह्यो हे प्यारीजी यमुनाजल भरिबे कूं चलो। तब श्री जीने कही हे सखी हमने अभी काहूके मुखते सुनीहै कि वहांतौ श्री लालजी महाराज ठाढ़े हैं और काऊको जल नायँभरन देवेहैं। सुनसखी औरभी कहूंहूंतोते ३ ॥ रागदेशसोरठ-श्रीप्रियाजीबचन ॥ कैसे जाऊंरी बीर घट भरिबे नीर ठाढ़ो यमुना तीर वो सांवरो अहीर मारे दृगोंके तीर हरै सुधि शरीर। नित यही चितमें चिंता समाज ब्रजराजसों कैसे बचैगी लाज जिया कांपै आज नाहिं धरत धीर। वाको रूपहै कै कोऊ जादू यंत्रकैधों नारायण बशीकरण मंत्रकैधों तंत्रकै पलही में करै फकीर ४ ॥ रागसिंधु-फिरश्रीप्रियाजीबचन ॥ रोकै छैल गैल वा मैं कैसे जाउँ पानियां। शीश मुकुट कंचन को झलकै भृकुटि मनोहर कुंडल झलकैं माथे खौरि चंदनकी राजै उर बैजंती माल बिराजै पीताम्बर कटि कस्योरी चौतनियां ॥ अधर सुधारस बेन बजावें ग्वालबाल लिये संगही आवें कहो न माने नंदमहरको

माखन खात फिरत घरघरको ऐसोनिडर झकझोरतहै बहियां। कर किंकिणि युग नूपुर बाजै रुनक झुनक बहु मुनिमन राजै रूप मनोहर सुन्दर साजै दरशदेख दूरहि दुख भाजै अति चंचल अलबेली वाकी चितवनियां॥ गागर फोर देत मुख हँसिकै करगहि निज उरसों वो लचिकै सूरश्याम प्रभुनागर नट के कहँलग गुण मैं बखानियां ५॥ वार्ता॥ यह सुनिकै सखीजन बोलीं हे प्यारी आपतो पहिलेही सों इतनी डरपोहौ पधारो तो सही वोनटनागर चितचोर हमारोका करैगो। तब प्रियाजीने कही चलो सखी ६॥ रागनट-समाजीवचन॥ प्रातसमै ब्रजनारि सकल मिलि घट यमुनाजल भरन चली। ओर पास नारायण सजनी बीच चन्दमुख भानु लली॥ पगनूपुर कटि किंकिणि बाजै पूरिरही धुनि कुंजगली। इतउत तकत चलत नारायण आयनजावै कहुंश्यामछली ७॥ रागभैरोकल्याण-श्रीप्रियाजीवचन॥ देखसखी नँदलाल सनमुखही आवै। संगसखा भीरलिये बांसुरी बजावै॥ आज याहिसमझौ मिलि भले लाजजावै नारायण नित प्रति को झगड़ो नहिं भावै ८॥ वार्ता॥ श्रीठाकुरजी हाथ में लकुट लिये सखीन के पास आके कहिबे लगे अरी सखियो कहां जावो हौ ठाढ़ी रहो ९॥ रागमल्हार-श्रीठाकुरजीवचन॥ ठाढ़ीरहो ब्रजनारिसुन्दरबर। रूपकी घटा छटा नई छबिकी जाहि देखि मोहैं नारीनर॥ अति चंचल दृगमीन लजत लखि काननमें सोहै मुतियन लर। नारायण हमसों बिन बूझे कहां चली गागरिया शशिधर १०॥ रागआसावरीदादरा-सखीनवचन॥ गैल जिन रोको यौबन मदमाते। इनबातन शोभा नहिं पावो लाजकी गारी गाते॥ यहां हमैं गुरुजन को डरहै देखत आवत जाते। नारायण कहूं अन्तजो होते तो याको फलपाते ११॥ रागकान्हड़ावागेश्वरी-श्रीठाकुरजीवचन॥ गोरी देखबे में भोरी अल छलमें प्रवीन। रति छवि निंदित बदन अति सकुचन भूषण बसन तन बयनवीन॥ कुंदकली दशन बिद्रुमते अधर लाल

दृगनकी शोभा लखि लाजै मृगमीन। नेक हँसि हेर मुख फेर नारायण हमसों चतुर कियो आपने अधीन १२॥ राग ईमनधीमा ताल–सखीन बचन॥ मेरो डगर न रोको नंदलाल। तुम अपने योवनके मदमें करत फिरत नितप्रति कुचाल॥ महाढीठ बरजो नहिं मानत नये नये तोहिं उपजै ख्याल। नारायण तुम निपट अनीती प्रगट भये ब्रज आज काल १३॥ मांडकीसूरत– श्री ठाकुर जी बचन॥ क्यों जलभरिबे आई इनघाटन पनिहारी। भोरोभोरो बदन मदन मनमोहे बातैं करत प्यारी प्यारी॥ अंग अंग मणि भूषण सोहै रूपकी खिली फुलवारी। मधुर मधुर अधरन मुसक्यावत मन हरिबेकी बिचारी॥ जित चितवत तितकरत है घायल तो समकौन शिकारी नारायण जिन देर लगाओ देवो जगात हमारी॥ १४॥ दोहा-समाजबिचन॥ झटकलाल ब्रजबालकर तोर मोतियन हार। बोले सुनि चंचल चपल कहा बढ़ावतरार १५॥ रागभूपाली-सखीनबचन॥ नंदलाल कुचाल न कर इतनी। देखतहैं मगनारि नगरकी और सखी सँगकी जितनी॥ जासों कोउ बुरो नहीं मानै बातकहौ मुखसों तितनी। नारायण जापै इतरावो सो ठकुराई है कितनी १६॥ वार्ता॥ फिरि सखी आपसमें कहिबे लगी कि चलोरी बीर याकी मैयासों चलिकै कहौ यहतो नहींमानैगो १७॥ रागभैरो-सखीनबचन॥ चलौ सखी यशुमतिपै कहि आवै। तेरोसुत अतिही ढीटयो भयो जलनहिं भरिबेपावै॥ छेड़छाड़ नितकरत रहतहै झगरो नितहि मचावै। परमानन्द कहो सब चलके ऐसहि ब्रजहि बसावै १८॥ वार्ता॥ यह सुनिकै तब श्रीठाकुरजी बोले तुम भलेही जायकै मैयापै कहौ मेरोमैया कहाकरैगी। ऐसे सखीनसों कहिकै चलेआये अरुसखी भेष धारिकै मारगमें ठाढ़े हैरहे, जब थोरीदेर पीछे सखीबी आय पहुंची अरु नईरूप मनोहर सखीको निरखिकै बूझिबे लगी अरी सांवरी सुकुमारी तू यहां कैसे ठाढ़ी है। तब आप बोले कि अरीबीर आजमें भोरही यमुनाजल भरिबे गईहुती तहां नन्दके

ढोटाने मोसों कैसी कैसी कुचाल करी है । सखीने कही कैसी बीर कहतो सही । तब आपबोले सुनसखी १९ ॥ रागभूपाली--सांवरीसखी बचन ॥ लंगरमेरी गागरि फोरिगयो सखीजानै कहांसों अचानक आय । नई चुंदरियां चीरचीर करि निपट निडर पुनि आंखि दिखावै देखिबीर अति कोमल बैयां दोउकर पकरि मरोर गयो ॥ मोसोंकहै सुनियेरी सुन्दरि तो समान ब्रज सुघर न कोई नख शिखलों छबि परख निरखि मुख सघनकुंजकी ओरगयो । कहांलग कहौं कुचाल ढीठकी नामलेत मेरो जियकाँपै नारायण मैं घनौ बरजिरही मुतियनकी लर तोरगयो (वार्ता) अरी बीर ओर सुन-कहवीर २० ॥ रागकालिंगड़ा ॥ आजश्याम मेरी गागरि फोरी । गागरिफोरी भलासोतौ फोरी ताहूपै लंगरमेरी बहियां मरोरी ॥ लोकलाज कुलरीति मर्यादा एकसंग उन तृणसम तोरी । आपसमान सखासब नटखट कैरोकत मगकै करैंचोरी ॥ मैंवाकी कछु मोललईहूं मनचाहै सोकरै बरजोरी । नारायण सब बदलौ लेउंगी औरनकी समजाने न भोरी २१ ॥ राग ईमन कल्याण-सखीन बचन ॥ यमुनातट क्योंतू अकेली गई । रीतिभांति नहिंजानै यहांकी तू ब्रजनारिनई ॥ जोतेरी उनबैयां मरोरी गागर फोरदई । याहीमें भाग समझ नारायण और न अधिकभई २२ ॥ वार्ता ॥ अरीमैं कहाकरूं वा ढीठतो मानैही नायँ २३ ॥ रागठुमरी झँझोटीका जिलह ॥ एरीमोहिं बांसुरीमें नामलैलै टेरैरी। ऐसोरी निलज्जभयो योबनके मदकर सबनके आगेहँसि हेरैरी॥ निपट निडर मेरो अचरा पकरि करि शिरसों गगरियां गेरैरी । नगरनारि निरखत नारायण डगर बगर नित घेरैरी २४ ॥ राग कल्याण ॥ नटनागर चितचोर गेंदतकिमारी सामलिया । भयो निंशक अंकभरलीन्हों भृकुटीनैन मरोर ॥ कहाकरूं कछु बश नहिंमेरो ऐसो जालिम जोर । रसिक हठीलो जियतरसावै मानत नहीं निहोर (वार्ता) अरीबीर मैं वाकी कौन कौनसी कुचाल कहूं कछू कहिबेहीमें नायँआवै २५ ॥ रागईमन ॥ कलको छोहरा

ढीठलँगर मोहिं गारियां दैदैजात। संगकी सखी सुनत सब ठाढ़ी नेक नहीं सकुचात॥ ज्योंज्यों बरजतहूं मैं वाको त्योंत्यों अति इतरात। नारायण ब्रजमें रहूंकैसे जहां नितप्रति उतपात २६॥ वार्ता॥ हेसखी अब ब्रजमें कैसेरहूं सखीने कही अरी डरैक्यों चल यशोदापै कहिआवैं फिर वा ढीठसों निपट लेंगी, अच्छोबीर चलौ २७॥ दोहा-समानीबचन॥ नारायण योगी जिसे धरत ध्यान दिनरैन। ताहि ब्रजबधू संगले चलीं उरहनो दैन २८ जबपहुंचीं नंद द्वारपै कहनलगीं ब्रजनार। अरी यशोदा आयके सुनगुण कान्हकुमार २९॥ वार्ता॥ जब सब सखी वा श्रीठाकुरजी नन्दद्वारपै पहुंचीं तब, सखीने टेरलगाई। अरी यशोदारानी २ (यशोदा वचन) अरी यह कौनहै मेरे पिछवारे पहरुवासी देरही है। हम्वै वीर तेरे पिछवारे तौ नायँहूं हौं तौ तेरे अगवारे। कहुबीर कहा कहेहै। अरी यशोदा तूंही या ब्रजमें बसैगी कै और काहूं रहनदेरी। क्योंवीर। अरी तेरो ढोटा नितधूम मचावै काहूको माखन चोरै काहूकी मटुकी फोरै काहूको यमुना पै जल भरबेतें रोकै अरीबीर ऐसी ऐसी कुचालकरै,। कैसीबीर। सुन यशोदा ३०॥ रेखता-सांवरीसखी बचन॥ सुनिले यशोदा रानी तू लालकी बड़ाई। सबलोकलाजयाने यमुनामें धोबहाई॥ भोरेहीमैं गईजो जलभरिबे काज भयना। पीछेसों आय अचानक उनमूंदे मेरे नयना॥ डरपीमैं हाय कोहै तबबोले टेढे बयना। हौंतौरही अकेली वासंग ग्वाल सयना॥ तब सबन हो हो करके तारीमेरी बजाई। सुनिले० १॥ हँसिहँसिकै छैल मोसों करिबेलगो ठठोली। यहछबि तिहारे मुखकी अब कासों जावै तोली॥ निरखैकबूं बदनको कबहूं वहछूवै चोली। मैंतो सकुच की मारी वासोंकछू न बोली॥ पुनिबहियां मेरी झटकी गागरि धरनि गिराई। सुनिले० २॥ अँगियाके बन्दतोरे चूंदरि झड़ाक फारी। दुलरीके निरखिबेको गलबहियां मेरेडारी॥ यह सब कुचालदेखैं मगठाढ़े पुरुष नारी। ताहूपै नाममेरो लेकर सुनावै

गारी॥ गुरुजनमें मेरी वाने जाविधिकरी हँसाई। सुनिले० ३॥ ज्योंज्यों कहूंमैं हटरे त्योंत्यों वा दूनोअटकै। मुसक्यावै दृगमिलावै भृकुटी चलावै मटकै॥ करकरकै सेनाबेनी तनपरसे चीर झटकै। अबकहा कहूंमैं यशोदा गलहार ह्वैकै लटकै॥ एक साथवाने ऐसी पकरी निलज्जताई। सुनिले० ४॥ कबहूं कहै बतारी तूक्यों अकेलीआई। कैघरमें तेरे पतिकी तोसोंभई लराई॥ तूचल भवन हमारे करमोसों मित्रताई। बिधनाने तेरी मेरी जोड़ी भलबिनाई॥ नारायण वाकीबातें सुनिकैमैं अतिलजाई। सुनिले यशोदारानी तू लालकी बड़ाई ३१॥ वार्ता॥ अरी यशोदा ऐसे गुणहैं तेरे लालमें, अरीवीर और सुन३२॥ रेखता-सांवरीसखी बचन॥ सुनिये यशोदारानी छोड़ें यहब्रज तिहारो। कहीं जायके बसैंगी अतिहीकरैं किनारो॥ नितकहां तलक सहिये नुकसान तेरे सुतको। घरजायके हमारे माखन चुरावै सारो॥ तेरेतोपास बालक वह बनके आयबैठे। जबजाय घर सखिनके सुन्दर तरुण निहारो॥ छींकेपैहो कमोरी लठियाते फोरडारै। दधिकी मथनियां फोरके माखन सभी बिगारो॥ नितकरै हानि हमरी रंगीन याहिबरजो। ऐसो चपल यहढीठ है यशुदाजी सुततिहारो ३३॥ रागठुमरी॥ तेरोरी कन्हैया बलको भैयारी यशोदा मैया आज मेरेघरआयोरी। दधिमेरो खायो मटकिमेरी फोरी रह्योसो सबढरकायोरी॥ जोपकरूं तो हाथनआवे ढूंढफिरी नहिं पायोरी। जानकी दास याहिबरजो क्यों ना पूतअनोखो जायोरी ३४॥ रागलावनी॥ सुनरी यशोदारानी तेरे गिरिधारीने नाहक लूटी। मैं देत दुहाई नंदबाबाकी बड़ीमुशकिल छूटी॥ मैं दधिबेचन जात वृंदाबन शिरधर गोरसकी मटकी। आनअचानक तेरे कान्हाने मेरी बहियांझटकी॥ जबझटकी हिरदे बिचखटकी लटकीशिरमेंआअटकी। मैंव्याकुलह्वैगई रहीनासुरति मोहिंघूंघट पटकी॥ ऐसीभई सुधहरणगिरीमैंधरण मेरीमटुकीफूटी। मैं देतदुहाईनंदबाबाकी बड़ीमुशकिल छूटी॥ एकसखी कहचुकी दूसरींकहै

सुनो यशुदारानी। आज या ब्रज में तेरेकान्हाने ऐसी ऊधम ठानी॥ घाट बाटपै रोकत डोलै नहीं भरनदेवै पानी। पानी भरतमें दानजुमांगै ऐसो दधिको दानी॥ करकी चूरीगई करक मेरी मोहनमाला न्यारी टूटी। मैं देत दुहाई नंदबाबाकी बडी मुशकिल छूटी ३५॥ वार्ता॥ यहबातैं सखीनकी सुनिकै यशोदा रानी बोली अरी सखियो क्यों झूंठो दोषलगावो हौ मेरोलाला तो अबहिं दशहि बर्षको है तुम्हींसब इतराती फिरौ हौ ३६॥ रागसूहो-यशोदावचन॥ मैं तिहारे मनकी सब जानी। आपु सबै इतराति फिरतिहौ दोष देतिहौ श्यामहि आनी॥ मेरोहरि कहा दशहि बर्षको तुमहौ योबनकी उमदानी। लाज नहींआवत इन लँगरिन कैसे धौं कहिआवति बानी॥ आपुहिहारि तोरि चोली बँद उर नख घात बनाय निशानी। कहां कान्हाकी तनिक अँगुरियां यह कहि बार बार पछितानी॥ देखहु जाय और काहूको हरिपर रहति सबैइतरानी। सूरदासप्रभु मेरोनान्हों तुम तरुणी डोलति अठिलानी ३७॥ रागदेवगंधार-सखीवचन॥ यशोदाकहा कहौंहो बात। तिहारे सुतके करतब मोपै कहत कहेनहिं जात॥ भाजन फोरि ढूंढि सब गोरस लेमाखन दधि खात। जो बरजौं तौ आंख दिखावैं रंचहु नाहिं डरात॥ और अटपटी कहां लौं बरणौं छुवत पाणिसोंगात। चतुर्भुज प्रभुगिरिधरके गुणहौं कहति कहति सकुचात ३८॥ रागदेश-सखीबचन॥ सुनरीगुण कान्ह कुंवर के। तेरोरी सुत चपल कहावै॥ यमुनाके तट बंशीबटके निकट नट झटक मटक दधि गटकि पियो। बदनकी छबि कान्हा मुकुटको शिरधर कदमके तरु तेरोकुंवर दुरयो॥ बांसुरी बजाई मेरी सुधि बिसराई कान्हा देखिसुहाई मेरो करपकरयो। अतिचंचल बिहारी नहिंमानति हमारी अब कीजिये कहारी सो तौ बात कहौ॥ ऐसो निपट अनारीपरमानन्द तिहारी सौंह या ब्रजमें अब तुमहिं बसौ ३९॥ रागईमन-सखीबचन॥ रानीजू लीजिये यह गाम दीजिये हमकों बिदा राम रामहि जो हमारी।

बसिहै अनताहिजाय बातलखिलईहै तिहारी ॥ आपन तौ नाहीं करतरी सुतको देत पठाय । तीस दिनाकी बातहै यह कापैसही जो जाय ॥ रानीजू लीजिये यह गाम (यशोदाबचन) ग्वालिन गाम मत छोड़ै ॥ मेरे शिरपै बसौ गामकाहे को छोरो । श्याम आपनो जान मानलेयो मेरो निहोरो ॥ जोकछु तुमते सुतकही मोहिंकहौ समुझाय । मैंतो यह जानौं नहीं तुमलीजो सौंह खवाय ॥ ग्वालिन गाम मतछोड़ै (सखीबचन) काल्ह तीसरे पहर श्यामगये भवनन माहीं । वाने कियो जो जियान आवत मुखते कहि नाहीं ॥ बछरा छोड़े खरिकते बांधनको नाजाय । सखा भीरलै द्वारे पैठे दूध दही ढरकाय ॥ रानीजू लीजिये यह गाम (यशोदाबचन) जेतो खायो दही दूधकर लेउमोतेलेखो । दुगनो चौगुनो नौगुनो सौगुनो लेव बिशेखो ॥ माटभरे दही दूध के सखीघरमें चाखतनांय । मोहिं यही अचरजबड़ो सखी पावत तुमघर जाय ॥ ग्वालिन गाममत छोड़ै (सखीबचन) काहे को घरको छुए जौलौं कहूं मिलतपरायो । अपनो सुन्दरमाल काहूपै न जात लुटायो ॥ आप खायतौहूँ सहै मर्कटदेतखवाय । जो वे भी चाखत नहीं तब देत भूमि ढरकाय ॥ रानीजू लीजिये यह गाम (यशोदाबचन) ऊंचे छींके धरो क्यों नहिं दूध दही को बीच अँधेरे सुघर ग्वालिनी मनकरिनीको ॥ रखवारीहूं कीजिये हो अपने घर ब्रजनारि । बरजौं क्योंनहिं श्यामको तुम कहा कहति पुकारि ॥ ग्वालिन गाममत छोड़ै (सखीबचन) अरी ऊखल पीढ़ाधरै चढ़ै छेदै मटकीको । दूध दही नवनीत खवावत खाततहीको ॥ मणिमय भूषण पहिरके करत अँधेरो छीन । कहां धरैं हम बालकन वा पकरत हम दीन ॥ रानीजू लीजिये यह गाम (यशोदाबचन) अब लेऔ कर पकरि करूंगी यतन जुवा-को । अपने घरही जाय सदा रखियो तुम ताको ॥ आज जान देहुँ ग्वालिनी मोसोंहों जुचिताय । अब नहिं चोरी करैगो तुम रहो जुधीरज लाय ॥ ग्वालिन गाममत छोड़ै ४० ॥ रागमल्हार-

सखीबचन ॥ यहांलौ नेक चलो नंदरानीजू। अपनेसुतके कौतुक देखौ कियो दूधमें पानीजू ॥ मेरे शिरते उतार चूनरी लै गोरस में सानीजू। हमरोरी तुमरो बैरकहाहै फोरी दूधकी मथानीजू॥ याव्रजको बसिबोहमछांड़ें यहनिश्चयकरजानीजू। परमानंददास को ठाकुर गोकुल कियो रजधानीजू ४१॥ रागदेवगंधार–सखीवचन ॥ जो तुम सुनो यशोदा गोरी। नंदनंदन मेरे मंदिरमें आज करन गयो चोरी॥ हौं भई आन अचानक ठाढ़ी कह्यो भवनमें कोरी। रहे छिपाय सकुच रंचक ह्वै मनो भई मति भोरी॥ मोहिं भयो माखन पछितावो रीती देखिकमोरी। जब गहि बांह कुलाहल कीन्हों तब गहि चरण निहोरी॥ लागे लैन नयनजल भर भर मैं हरि कान नातोरी। सूरदासप्रभु देत निशा दिन ऐसे अल्प सलोरी ४२॥ रागकाफी–सखीबचन ॥ बर्जेरी महरि मोहनकी चंचलचोर चतुरसुततेरो॥ आंगनआवै गोरसखावै दधि मटुकी भूपर पटकावै बाल रुआवै धूम मचावै ऐसो नित उठि करत बखेरो। पलनापर ऊखलहि टिकावै तापर चढ़िकर माखन लावै कपि बालनको टेर बुलावै देखत दुखित भयो मन मेरो॥ छिपकर भीतर जाय निकासे अंधकारमें मणी प्रकाशे नापावै तो गारीदेवै आगलगै उजरो घर तेरो। सांझहि धेनु बत्स लये आवै यशुदा जू दुख सह्यो न जावै राख गाम अपनो हम जावे केशव जन मन प्रेम घनेरो ४३॥ रागबिलावल–सखी वचन ॥ महरि तुम मान्हु मेरी बात। ढूंढ़ि ढंढोरि गोरस सब घरको हरयो तिहारो तात॥ (यशोदा वचन) कैसे कहतिलयो छींकेते ग्वाल कांध दै लात। घर नहिं पिवत दूध धौरी को कैसे तेरे खात॥ असम्भवित बोलतिहै आई ढीठ ग्वालिनी प्रात। ऐसो नहीं अचगरो मेरो कहा बनावति बात॥ (सखी बचन) काह कहौं सकुचतिहौं तुमसों कहा दिखाऊं गात। हैं गुण बड़े सूरके प्रभुके ह्यां लरिका ह्वै जात ४४॥ राग धनाश्री–सखी वचन॥ भाजि गयो मेरो भाजन फोरी।लरिका

सहस एक सँग लीन्हे नाचत फिरत सांकरी खोरी ॥ मारगतो कहुं चलन न पावैं धावत गोरसलेत अजोरी। सकुच न करत फागुसी खेलत तारी देत हँसत मुखमोरी ॥ बात कहूं तेरे ढोटा की सब ब्रजको बांध्यो प्रेमकी डोरी। टोनासों पढ़ि नावत शिर पर जो भावै सो लेत है छोरी ॥ आप खायँ तो सब हम मानैं औरनि देत सिकहरे टोरी। सूर सुतहि बरजो नँदरानी अब तोरत चोली बँद डोरी ४५ ॥ राग देव गंधार-यशोदा वचन ॥ नित उठि देन उरहनो आवै। यह ग्वालिनि योबन मदमाती झूठेहि दोष लगावै ॥ कहां धों माखन धरे पराये कहँ मेरो मोहन पावै। लड़का अतिसुकुमार गहे करहलधर संगखिलावै ॥ कबहुंक कहाति कंचुकीफारी कबहुंक और बतावै। कबहुंकरई मथानी लेके आंगन शोर मचावै ॥ मन तेरो लग्यो कमल नयनसों ऊपर बात बनावै। चतुर्भुज प्रभु गिरिधर मुख यह मिस क्षण क्षण देखे आवै ४६ ॥ रेखता-सांवरी सखी बचन ॥ सुनिये यशोदा कान दै अरजी यही हमारी। हम छोड़िजायँ ब्रजको मरजी यही तिहारी ॥ नित घाट बाट नट खट जेहरि झड़ा कपटके। बहियां मरोरै चटपट छातीसों हार झटके ॥ पुन कूदकर कन्हाई घूंघट सँभार खोलै। ठोढ़ीसों करलगाकै रसकीसी बात बोलै ॥ निज दृष्टिबाण करके भौंहैं कमान तानै। चोली सिवाय रसके अरु वो कछू न जानै ॥ कोई सखी अकेली घरमें बगरमें पावै। कसकै शरीर मसकैचोटैं दया न आवै। चोरी करै सो चोरीघरमें डगरमें पावै ॥ भाजनको देत फोरी माखन दही लुटावै। हम बार बार तुमपै करतीं पुकार हारी ॥ तुमने दया हमारी कबहूं नहीं विचारी। कीजै कृपा सिताबी हम गोपकी कुमारी ॥ दीजै निकास देखूं कैसो है रसिकबिहारी ४७ ॥ वार्ता ॥ तब नंदरानी जीने कही अरी सखियो मेरो लाल तो जानै कौनसे बनमें गऊ चरावत होयगो तू क्यों वाको वृथा दोषलगावै है। तब सांवरी बोली अरी तू कहा जाने यशोदा तेरो ढोटा यहीही गलियन में

कहूं ऊधम करत होयगो लै जो तू न मानै तो हम पकरिकै दिखायभी देंगी ॥ जाव सखियो पकर लाउ। तब सांवरी ने कही चलौ बीर याके ढोटाको पकर लावैं ॥ तब सखीननने कही चल बीर। तब सब ढूंढबेको चलीं ४८ ॥ राग भूलना-समाजी बचन ॥ लिये फिरत संग संग सखिनको जाने मोहनी डारीहै। ढूंढत डोलत आप आपको ऐसोखेल खिलारीहै ॥ आप अमृत घट आपही पीवै आपही प्यावन हारी है। आपही दृष्ट अदृष्ट आपही आपही गोपकुमारी है ॥ बंशी बजन दिशा अवलोकन घूंघट ओट निहारीहै। सब सखियनमें चतुर राधिका श्री वृष-भान दुलारीहै ॥ सुनो सखी जाके सँग डोलों सोई त्रियावपु धारीहै। लीजै पकरि निकस कहूं जायना यही रसिक बनवारी है ४९ ॥ वार्ता ॥ तब श्री प्रियाजीने कही अरी सखी यही श्री ठाकुरजी है पकरले तब ललिताने चीन्हके पकर लियो और कह्यो क्यों ठाकुरजी महाराज आपने ऐसो छल कियो कि अपनी मैयाहूंते नायँ चूके तब श्री ठाकुरजीने कही अरी सखी कहूं चतुरहूं चूकै है ५० ॥ रेखता ॥ हे श्यामा चलौ विपिनमें अद्भुत बहारहै। छाई घटाये गगन बिच शोभा अपार है ॥ इन्दरके धनुष दामिनि क्या बेशुमारहै। प्रफुलित कदम खड़ेहैं भौंरा गुंजार है ॥ रंग रंगके बोलैं पक्षी दादुर चिकारहै। क्रीड़ करत किलोलैं यों यमुनाकी धारहै ॥ गेंदा गुलाब तुर्रा क्या खुशबूदारहै। झोकन चलैं समीरैं द्रुम लचतीं डारहै ॥ फैलींहै बेल इतउत सबजीबजार है। नाचतहैं मोर मदसेमृगनी बिहारहै ॥ चंचल जो कोयलडोलै पीउपी पुकारहै। श्यामूके श्याम प्रिया संग चलना विचारहै ५१ ॥

इति पनिघट वा उरहनो लीला सम्पूर्णम् ॥

अथराधिकामान-श्यामबिरहलीला ॥

वार्ता ॥ एकसमय श्रीठाकुरजी वा श्रीप्रियाजी कुंजकी लतानमें बिराजमान थे वाहीसमय श्रीजीने कही हे प्यारे हमारे

बदन वा मुखारबिंदकी उपमा बर्णन करो, तब श्रीठाकुरजी ने कही अच्छो प्यारीजी १ ॥ रागठुमरी-श्रीठाकुरजीबचन॥ चंदासों बदनजामें चन्दन को बिन्दादिये चन्दातन चितवत चन्दा छबि छाई प्यारी। चन्दन की सारीसोहे चन्दनको हारहिय चन्दनको लहिंगा सोहे चन्दा मुखभाई प्यारी॥ चन्दनकी कंचुकी चन्दन की बन्दनी चन्दनकी बंगली चन्दातन धाई प्यारी। कहा कहूं कछु कहत न आवै तिहारो मुख देख चन्दागयोहै लजाई प्यारी २॥ रागबिलावल-ऐजन॥ तेरो मुख मानों किशोरी शरद शशि। दशनज्योति जुन्हाई बचन शीतलताई अमृतहास सुहाई बोलतनयन मशि॥ कस्तूरी तिलक भाल ऋतु कलङ्क छबि नक्षत्र माल मणि मङ्गलशि। गोविंद प्रभु नन्द सुवन चकोर बर पान करत वरपाम मनमथ ताप नाशि ३॥ रागकाफी-ऐजन॥ मेरो चित्तचकोर भरमायो। धरनिपर चन्दकहांते आयो॥ कैकहुं रूसरोहिणी दुबकी ताकारण अकुलायो। पी प्यारीके डंडन के हित दुर्बल वेप बनायो॥ कै बिरहिन को तापदेखकर दयाचित्तमें लायो। जिन्हें जरायो काम निरदई तिनको आनजिवायो॥ गगनहुमें शशि देतदिखाई धरणिहु माहिं सुहायो। कैंकहुं चन्द्र दूसरो प्रगटो कै मम गर्वघटायो॥ इतहूँ शशि उतहूं शशि दरशत भेद परत नहिंपायो। इतउत तकत थकति भई अँखियां सब दुख सुख बिसरायो॥ यह चितवन पर रूप रसीली आजमेरे मन भायो। दोऊ ओर चन्द्रसे दरशै मोहिं महाभ्रमछायो ४॥ दोहा-समाजीबचन॥ शशि बदनी प्रियसों कह्यो प्रीतम अति हरषाय। यह सुनि प्यारी रिसभई भृकुटी लई चढ़ाय ५॥ दोहा-श्रीप्रियाजीबचन॥ मोते चन्दा क्यों कही सुन पिय नवलकिशोर। घटत बढ़त दिन दिन रहत है कलंक बरजोर ६ तरक बचनसों करत तुममोमुख अस्तुति लाल। ज्यों भुजंग सूधेहु मग चलत व्यंगहीचाल ७॥ मोमुख समकिमहोय शशि सुनसांवरे यहबात। घटत बढ़त सकलंकबिप बन्धु प्रकट जड़तात ८॥ प्रीतम कछु

बौरे भये मोहिं देतहौ सीख । मुख मीठे मनमें कपट जा बिधि गांठे ईख ९ ॥ वार्ता ॥ इतनी कहके श्री प्रियाजी आपने महल को चलीगई तब श्री ठाकुरजीने देख्यो कि श्रीजीतो मानकर के चलीगई तब आप बड़े बिकल ह्वैगये ताही समय ललिता बिशाखादि सखियां तहां आई तब श्रीठाकुरजीने उनते यों कही १० ॥ राग बिहाग- श्री ठाकुरजी वचन ॥ यह कहके त्रिय धाम गई री । चौंक परे हरि जब यह जानी अब यह कहा भईरी ॥ दोष न होय कछू सखी मेरो उपमा चन्द दईरी । रिसन भरी नख-शिखलों प्यारी जोबन गर्ब मईरी ॥ लावो बेगि मनाय सखीरी यामिनिजात बहीरी । पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत लावो बेग सहीरी ११ ॥ वार्ता -- ललितासखीबचन ॥ अजी प्यारे आवैहै श्री प्रियाजी १२ ॥ राग बिलावल--ऐजन ॥ मेरी तो जीवन राधा बिन देखे नाय़ैं चैन । मोते तो कछू चूक परी ना कैसे रूठीरी सुख दैन ॥ पैयां परूं मैं तेरे ललिता तेरे बिशाखा तेरे नेक जावरी प्यारीय लैन । धीरज प्यारीजीके देखे श्री राधाजी के देखे तब शीतल होंगे नैन १३ ॥ राग गौड़ मल्हीर--ऐजन ॥ वृषभानु कुंवरि जब देखों। तब जन्म सुफल कर लेखों॥ मैं राधा हीते नींको । राधा बिन लागत फीको ॥ मैं राधा राधा गाऊं । राधाहित बेन बजाऊं ॥ मैं राधा रमण कहाऊं। काहे दूजा नाम धराऊं ॥ जहां राधे चरचाकीजे । तहां जान प्रथम मोहिंलीजे ॥ जहां राधा राधा गावै । तहां सुनिबेको हम आवै ॥ श्रीराधा मेरी सम्पति । श्रीराधा मेरीदम्पति ॥ श्रीराधा मेरीशोभा। श्रीराधे सों चित लोभा॥ राधासोवत राधाजागत। राधाहीसों मनलागत॥ राधा राधहि मुखजपनो। राधाबिनुतनकोतपनो॥ जो राधानाम कहायो। सो मोहिं महामन भायो॥ यह सत्या अचल हमारी। क्योंहूं यह टरत न टारी ॥ नारायण सब गुण रासी। नहिं तीन लोकमें जासी १४ ॥ वार्ता ॥ सखीननें कही अजी प्यारे आवैहै श्री प्यारीजी आप ऐसेव्याकुल न हूजिये--वही समयके ऊपर

श्री ठाकुरजीने उम्मर देख्यो तब चन्द्रमाते यों कहन लगे १५॥
दोहा --टेक ॥ खबर मेरी लेजारे चन्दा संदेशो मेरो लेजारे
चन्दा--खबर मेरी लेजारे चन्दा १६ प्यारीढिग तू जायके कहियो
ऐसे बैन। तुम बिन तलफत श्यामहै रह्यो परत नहिं चैन १७
अति आतुर तू जायके कहियो ताह सुनाय। नाम तिहारो रटत
है गिरिधर मन चित लाय १८ मैं अति व्याकुल प्रिया बिन
रह्यो परत नहिं धीर। ता कारण तोते करत समुझतहै तैं पीर
१९ कहां जावँ कैसी करूं तलफतहै मन मीन। कौन चूक मेरी
समझ प्यारी यह दुख दीन २० प्यारीकी छबि दृगनमें बसत
हमारे नित्त। नेकटरत मो पासते बिकल होतहै चित्त २१ जै-
सो मम तुम हाल लखि ऐसोहि कहियो जाय। जाते उनहिं
प्रतीतहो मिलै धायमोआय २२ ॥ राग पीलू-ऐजन ॥ मेरी सुधि
आन लेव प्यारी राधा। तनहु लड़ैती राधे मनहु लडैती हरत
सकलदुखबाधा॥ कुंजमहलमें सदाही बसतहौं सुखसम्पति लिये
साधा। बिट्ठल बिपुन विनोद बिहारन सरबस प्राण अगाधा २३
रागबिहारो-ऐजन ॥ राधे तुवबिरह किमसहौं। रावरी प्रिय मंजुमूर-
ति लखन क्षणक्षणचहौं॥ जो रह्यो इनदृगनपलकनि निरदई
तोहिं कहौं। दास परमानंद कहत तुव कमल मुख अति महौं
२४॥ रागसूहो-ऐजन ॥ तुमबिन यह दशा अब भई। अबल गुणि
निशि नाथ मोउर बिरह बेलहिबई॥ मल्लिकालतिका तमाल-
हि लपटि मोहिं दुखदई। कहत हरि परमानन्द राधे हाय तुम
कितगई २५॥ रागनट-ऐजन ॥ प्यारीतुवबिन।नाहिंचैन। तुवसहित
सुहिं अयन बनहै तुवबिना बन अयन॥ जानिकैउपबन अकेलो
शरन मारत मैन। क्योंनआय सहायकीजतु सुघरिहनि दृगसै-
न २६॥ रागटोड़ी-ऐजन॥ यद्यपिनिकुंज यहसुखसनी। परिपरागहुं
पुहुमिमें पुहुमी कठिनताहनी॥ झरेकोमलकुसुम थलथल सेज
ईसी बनी। तदपि तुमबिन मोहिं सुन्दरि ताप दायहिघनी २७॥
रागदेवगंधार-ऐजन ॥ नागरि विपिन विहरन योग। लाभ है इत

लहौगी सुख मम दहौगी शोग॥ जो न ऐहौ अवशि अबतौ हँसैंगी सखि लोग। कहत परमानन्द प्यारी हरहु बेगि वियोग २८॥ रागखेमटा-ऐजन॥ देखीकहूं गलीनमें मो प्राण जीवनी। एहोसुजान प्यारी मम चूक का बिचारी क्यों दुरगई लतनमें री क्यों दुरगई लतनमें देउदर्श आनंदनी॥ जबचलतचाल छबिसों तबहलतहार उरसों ठुम ठुम चरण धरणपैरी ठुम ठुम चरणधरणपैतूहै गति गयंदनी। तेरी छटा चरण की निंदित रबिकिरणकी हाहा कुँवर किशोरी री हाहा कुँवर किशोरी तूहै सुख समूहनी॥ यह सुनत बचन मेरो पाषाण द्रवत हेरो हितरूपलाल चेरोरी हितरूपलाल चेरो एहो दुख निकंदनी २९॥ रागसोरठ-ऐजन॥ श्री राधाप्यारी देखीहै चितकीचोर। लागीकाहूठौर मैंने देखीहै चितकीचोर॥ चंद बदन मृगलोचनी राधे जैसे चन्दचकोर। नईरी प्रीतसों सब रस बाढ्यो जुवना करतही जोर॥ पांयन में नूपुर धुनि बाजे गजगति चलती तोर। या छबि निरखि मगनभये सुरमुनि गावत दास किशोर॥ प्यारीके गुण गावत दास किशोर ३०॥ रागदेश-ऐजन॥ बाधादे राधा कितगई। वृन्दाविपिन अछत प्यारी बिन सब बिपरीत भई॥ मेरे मंद भागसों काहू पोचप्रकृति सिखई। व्यास स्वामिनी बेगि मिलैतो बाढ़ै प्रीत नई ३१॥ राग विहाग-ऐजन॥ कहो कहूं देखीरे इतजात रूप गरवीली प्यारी राधा। चंपक बरणगात मन रंजन खंजन चख कुरंग मद गंजन अमल कमल मुख ज्योति बिलोकत होत शरद शशि आधा॥ अहो कुरंग मृगशावक नैनी कहूं देखी प्यारी पिकबैनी सुखमा सिंधु अगाधा॥ अहो मराल मानसर बासिक अहो अलिंद मकरंद उपासिक देहु बताय मोहिं दयाकर होत अपत अप्राधा। (दोहा) अहो श्रीफल सदाफल सबफलकेदातार। गजगामीनि कामिनिकोई आई बिपिन मँझार॥ अहो कदम्ब अहो अम्बनिम्ब बट सोहत सुखदछाय यमुनातट हरत तापकी बाधा। संतत देत गोप गोधन सुख तबहूं नहिं सकत मेरो दुख उपकारी

वपुवेद बखानत अबहिं मौन क्यों साधा ॥ आरतिबचन पुकारत लालन मनजो फँस्यो बिरहके हालन मदन जालसों बांधा। अतिशय बिकल देख बनवारी प्रगट भई वृषभान दुलारी सूरदास प्रभुको लगाय उर पुरवत रसका साधा ३२ ॥ रागकाफी ॥ श्रीप्रियाजीबचन ॥ कर बिचार वृषभान दुलारी । ग्वालरूप धर छलन कृष्णको नंदग्रामकी ओर सिधारी ॥ जहां हरि अपनी गायचरावै तहां आप चलआई। देखरूप मोहे मुरलीधर भूलगये चतुराई (श्रीठाकुरजीबचन) अरे मित्रका नामतिहारो बास कहांहै तेरो। मैंतो तोहिं कभूँ नहिं देख्यों करत सदा ब्रजफेरो ॥ (श्रीप्रियाजीबचन) गोरेग्वाल भानपुरके हम गोधन वृन्दचरावें। गोबिंदप्रभु यक गाय हमारी भाजगई कहँपावें ३३ ॥ वार्ता ॥ तब श्री ठाकुरजीने कही हेसखा तुम हमारी प्यारीहूं को जानैहौ तब सखा बोले हेप्यारे आपकी प्यारी कौनहै तब बोले सुनसखा बताऊँहूं ३४ ॥ रागनट-ऐजन ॥ सखातुम मम प्यारी जानो। हैवृषभान कुमारिनांम श्रीराधा अनुमानो ॥ अतिसुन्दर सुकुमारबदन तन चंपासो मानो। बोलत मीठे बैन सुनत ता हिरदो लुभयानो ॥ वाबिन मैं अति बिकल धीर नहिं मनमें मैं आनो। परमानन्द प्रभु ऐसे बोलत वाके प्रीति बिकानो ३५ वार्ता ॥ तब सखाबोले हे प्यारे उनको तो हम अच्छी तरहते जानैं हैं वेका आजकी प्यारीहै। हांसखा अरे। प्यारे विनकी तोचाल अच्छीनायँ है उनमें तौ बडेबडेखोटहैं । कैसेसखा। सुनोप्यारे उनकेगुणमैं तुमते कहूं हूं ३६ ॥ रागदेशगोरेग्वालबचन ॥ गुणसुन वृषभान कुंवरिके। तुमरहतलाल जाकेअधीन गुणसुन वृषभानकुँवरिके ॥ वहतो गृहते सटक बनरहत अटक नहीं मानत हटक इतउतही फिरे। ऐसी फिरि इतरात नहिं काहूकोसुहात मनमानैं जितजात नहिं नेकडरे ॥ बेटी बडेकीकहावै दधिबेचिबेकोजावै ताहिलाजहू न आवै सब नामधरे। एक मेरी सुनिलीजे ऐसी नारिन पतीजे ब्याह कहूँ जासों कीजे तिहारो चित्तहरे ॥ जाकीमुख उजियारी

लखिरीझोगे बिहारी पिवो बारबार पानी जब प्रीतिकरे। बात मानके हमारी लीजै चित्तमें बिचारी नंददास बलिहारी ऐसे औगुण भरे ३७॥ वार्ता॥ तब श्री ठाकुरजीने कही हेसखा जैसे गुणतुम हमारी प्यारी में बतावोहै वैसे नहीं हैं उनके समान तो या त्रिभुवनमें कोईहैई नायँ। सखा तुम बात बिचारके नाँय बोलो ३८॥ रागप्रभाती-श्रीठाकुरजीवचन॥ सखा तुम बोलो न बातबिचारी। कहोकौनसीबालजगतमेंजैसीहै भानदुलारी॥ कहो कौनसंग व्याह करावन रचीकवन विधिनारी। करतबास मेरे हिरदैमें कीरति कुँवरि दुलारी॥ भान नगरके बसनहार तुम प्यारीकी अनुहारी। रविशशि कोटि मदनहूंकी छबिदीजे तुम परवारी॥ प्रेमविवश कछु सुरति रहीना तनकी दशा बिसारी। लिये लगाय झपट उरप्यारी तबहँसि रसिक बिहारी ३९॥ वार्ता॥ जब श्रीप्रियाजीने श्रीठाकुरजीको हँसिके गलेलगालियो तब श्रीठाकुरजीने कही हे प्यारी आपनेतो बड़ोछल कियो तब श्रीजीने कही हे प्यारे आपहू तो छल कियोकरौ हौ-इसके बाद श्रीजीने कही हेप्यारे नन्दको लालाहो है तब श्रीठाकुरजीने कही प्यारी मैंहूं तब श्रीजीने कही नहीं मैंहूं इसप्रकार आपसमें दोनों झगरनलगे तब श्रीप्रियाजीने कही कि काऊं सखीते पूछो तब श्रीठाकुरजीने कही अच्छो प्यारी। तब ललितासखी को बुलाकै पूंछी हेसखी हममें नन्दकोलाला कौनहै तब सखीनेकही हे प्यारे हमैंतो दोऊ एकसेही मालूमपरौहौ मैं कौनकोकहूं ४० रागदेश-श्रीठाकुरजी बचन॥ हम मैं कौन नन्दको छैया। कौन धरावत मोरमुकुटशिर को बंशीको बजैया॥ काके कटिपट पीत बिराजै को गोपिनको नचैया। कृष्णदास दधिदूध चुरायो सखी को गायनको चरैया ४१॥ रागदेश-श्रीप्रियाजी बचन॥ सखीरी मैं हूं नन्द किशोर। मैं दधिदान लेत वृन्दाबन रोकतिहों बरजोर॥ यहजो माननी मानकरि बैठत बिनतीकरूं करजोर। पुरुषोत्तम प्रभु मैंहूं रसिकवर यह मेरी चितचोर ४२॥ लावनी-श्रीठाकुरजी

बचन ॥ धरधरके अवतार भूमिको भार हरैया मैंहींतो हूं । प्यारो नन्दको लाला मात यशुदाको कन्हैया मैंहींतोहूं ॥ मथुरामें लियोजन्म ब्रजमंडलको बसैया मैंहींतोहूं । दुष्टदलन कर भक्तहित प्रणको रखैया मैंहींतोहूं ॥ प्रथम पूतना तृणावर्त सकटाको हनैया मैंहींतोहूं । कागासुरके चोंचकोफार फरैया मैंहींतोहूं ॥ ब्रज बासिनको प्रेमदेख माखनको खवैया मैंहींतोहूं । प्यारो नन्दको लाला मातयशुदाको कन्हैया मैंहींतोहूं १ यमलार्ज्जुन हेत ऊखलसों हाथ बँधैया मैंहींतोहूं । मोहे गोपी ग्वालबाल गौवन को चरैया मैंहींतोहूं ॥ बत्सासुरको पटक अघाके प्राण कढैया मैंहींतोहूं । नौलख धेनु खिरक मेरेमें तिनको दुहैया मैंहींतोहूं॥ दावानलको कियो पान कालीको नथैया मैंहींतोहूं । प्यारो नंदको लालामात यशुदाको कन्हैया मैंहींतोहूं २ चीरचोर चढ़िगयो कदमयुवतिनको रिझैया मैंहींतोहूं । गोबर्द्धन नख धरयो इन्द्रको गर्ब हरैया मैंहींतोहूं॥ बंशीबटके तट अधरधर बंशीको बजैया मैंहींतोहूं । श्यामाके संग रासमें नीकोतो नचैया मैंहींतोहूं ॥ पकरूं कंसके केशदेख ऐसोतो लड़ैया मैंहींतोहूं । प्यारो नंदको लालामात यशुदाको कन्हैया मैंहींतोहूं ३ उग्रसेनको राज मथुराको दिवैया मैंहींतोहूं । सबखेलन को खेलखेल खेलनको खिलैया मैंहींतोहूं ॥ भक्तन हितकारी रसिक बिहारी बलदेवको भैया मैंहींतोहूं । मँझधारके बीच टेरगजकी सुनवैयामैंहीं तोहूं ॥ कुंदन बिप्रयोंकहत नाम राधाको रटैया मैंहींतो हूं । प्यारो नंद कोलाला मात यशुदाको कन्हैया मैंहींतोहूं ४ ३ ॥ रागबिलावल श्रीठाकुरजीवचन॥ देखि मोहिं अनेक नारिन माहिंगई जुरिसाय । लेखिअति अपराध अपनोडरि नसक्यो मनाय॥ रोषठानि अपमान मानिमनजात भई दुखपाय। कहा करिहै कहाकरिहै चिर बियोगहि पाय॥ कहाजनधन गेहसुख मोहिंवाबिनान सुहाय। रोषयुत तुवकुटिल भृकुटी बदन ध्यावत चाय ॥ अरुण अम्बुज परमनौ अलिअवलिरही लुभाय । सो निरन्तर मोमनन्तर

बसत निशिदिनआय ॥ हौं वृथाबनढूंढ़ि बिलपति तपन बिपत हिपाय। मैं लखौ हियरोषतै परिपूरि तेरी आज ॥ हौं नजानत कितगई अबभयो बडोअकाज ॥ दीठि आगे रहति निशिदिन त्योंहिं आवाति जाति। क्योंनभेंटत अंकभरि जैसे प्रथमलपिटाति ॥ फेरअबनहिं करौ ऐसी क्षमाकरि यहबार । बेगिदर्शन देहु सुन्दरि मारडारत मार ॥ भक्तिहरिकी रंगभरी बरणी सरस रस बिख्यात । किन्दु बिल्व समुद्रते जयदेव शशिउदयात १३॥वार्ता॥ इसके बाद श्रीठाकुरजीने सखीको एकहाथ पकड़लिन्हो वा एक हाथ श्रीप्रियाजीने पकडलीन्हों वा अपने अपने तरफकोखींचने लगे बीचमें सखीकी आफत आई इसके बाद जिसने सखीको खींचलियोवहीजीतगयो और फिर दोनों आपसमें भेंटे ॥रेखता ॥ कीजे गमन भवनमें वृषभानकीदुलारी। देखोंबहारकैसी बड़ेगोपकी कुमारी। फूलेगुलाब चंपाकेशर की फूली क्यारी । सुंदर खिली चमेली गेंदाखिलेहजारी॥ चहुंवोर मोरबोलेंकोयलकी कूकप्यारी । पहिरो सँभारभूषण ओढ़ो सुरंगसारी ॥ जल्दीचलो किशोरी अरजी यही हमारी ॥ माखनको चोरठाढ़ो करैबीनती तिहारी ४४ ॥

इतिश्रीराधिकामानश्यामाविरहलालीसम्पूर्णम् ॥

अथ बेनीगूंथन लीला ॥

दोहा- समाजीबचन ॥ राजत नवलनिकुंजमें दोऊ श्यामा श्याम। शोभा सुर नर मुनि निरखि पावत अति विश्राम १ ॥ वार्ता ॥ श्रीठाकुरजीने कही हे प्यारी मैं बेनी अच्छी गूंथ जानूहूं तब श्रीजीने कही हे प्यारे गूंथिये तो मैं देखूं आप कैसी बेनी गूंथैहैं २॥ रागकल्याण--श्रीठाकुरजी बचन॥ बेनीगूंथ कहाकोइ जाने ॥ तेरीसों मेरी श्रीराधे बिच बिच फूल श्वेत विचराते को करिसकै मेरीसी राधे ॥ बैठे रसिक सवाँरन बारन कोमलकर ककईसों साधे । हरिदासके स्वामी श्यामा नख शिखलौं बनाई देकाजर नखहीसौं आधे ३ ॥ रागदादरा--सखीबचन ॥ प्यारीको शृंगार करत नँद-

लाला। बार बार में मोती पोए कनबिच झलकै बाला॥ कली दार जरीको लहँगा ऊपर सुर्ख दुशाला। पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि छबि निरखत ब्रजबाला ४॥ वार्ता॥ हेप्यारे आपने तो बेनी बहुतही अच्छी गुहीहै। तो हे प्यारी या दर्पणमें तो देखौ कौनको मुख नीकोहै ५॥ रागगौरी--श्रीठाकुरजीवचन॥ तेरो मुख नीको कै मेरो राधाप्यारी। दर्पण हाथलिये नँदनंदन सांची कहो वृषभान दुलारी (श्रीप्रियाजी बचन) हम कहाकहै तुमहीं क्यों न देखौ हम गोरी तुम श्याम गिरिधारी। हमरो बदन जैसे चन्दाकी उजारी तुमरो बदन जैसे रैन अँधियारी॥ तुमने तो गोबर्द्धन धारयो मैं उरधार रही गिरिधारी। तुमरे शीशपै मुकुट बिराजै हमरे शीशपै तुम गिरिधारी। सूरश्याम प्रभु रसिक शिरोमणि दोनोंओर प्रीति बढ़ी भारी ६॥ वार्ता॥ हेप्यारे बेसर कौन की नीकीहै। हेप्यारे बेसर तो हमारीही नीकीहै। नां प्यारे मेरी नीकीहै, जो तुम नांयमानो तो काहू सखीते पूछदेखौ। अच्छो प्यारीजी पूछौ ७॥ रागबिहाग--श्रीप्रियाजीबचन॥ बेसर कौन की अति नीकी। होड़परी लाड़िली अरु लालन चोप बढ़ी अतिजी की (सखीबचन) न्यायपरो ललिताजूके आगे कौन ललितको फीकी। दामोदर अति बिलग न मानौ झुकन झुकी प्यारीजी की ८॥ रागललित--सखीबचन॥ गुहीहै तेरी बेनी सुन्दरि श्याम गुहीहै तेरी बेनी। पचरंगचीर शीश श्यामाके चम्पक और जुही॥ श्री गिरिधरन बिट्ठलेश कहतहै सुखकी राशितुही ९॥ रागबिलावल--सखीबचन॥ धन्यकान्ह धनि राधागोरी। धनियहभाग सुहाग धन्य यह धन्य नवल नवलानव जोरी॥ धनि यह मिलन धन्य यह बैठनि धनि अनुराग नहीं रुचिथोरी। धनि यह अरस परस छबि लटकनि महाचतुर मुखमोरे भोरी॥ प्यारी अंग अंग अवलोकितिप्रियअवलोकतलगतठगोरी। सूरदासप्रभुरीझिथकितभये नागरि परडारततृणतोरी १०॥ वार्ता॥ तब प्यारीनेकही हे प्यारे मेरो शृंगार बर्णनकरौ तब आपबोले। अच्छोप्यारीजी ११॥ राग

देवगंधार--श्रीठाकुरजी बचन ॥ व्रजनव तरुणि कदम्ब मुकुटमणि श्यामा आज बनी। नख शिखलौं अंग अंग माधुरी मोहे श्याम धनी॥ यों राजत कबरी गूंथित कचि कनक कंज बदनी। चिकुर चन्द्रकन बीच अधर विधुमानों ग्रसित फनी। सौभग रस शिर स्रवत पनारी पीयासी मतठनी॥ भृकुटी कामको दंड नयनशर कज्जलरेख अनी।तरल तिलक ताटंग गंडपर नासा जल जमनी। दशन कुन्द सरसाधर पल्लव प्रीतम मन समनी॥ चिबुक मध्य अति चारु सहज सखी श्यामल बिन्दुकनी। प्रीतम प्राण रत्न संपुट कुच कंचुकी कसब तनी॥ भुजमृनाल बलिहरत बलैयुत-प्रस सरस स्रवनी। श्याम शीश तरुमनो मिंडवारी रचीरुचिर रमनी॥ नाभिगंभीर मीन मोहन मनखेलन को ह्रदनी। कृश कटि पृथु नितंब किंकिणि भृत कदलीखंभ जंघनी॥ पद अंबुज जावकयुत भूषण प्रीतम उर अवनी। नवनव भाव विलोकिभाय इव बिहरत वर करनी॥ हित हरिबंश प्रशंसत श्यामा कीरत बिशदघनी। गावत श्रवननसुनतसुखाकर बिश्वदुरितदमनी १२॥ रागखेमटा--श्रीठाकुरजी बचन ॥ तुवमुख चन्द्र चकोरी मेरे नैना। अति आरति अनुरागी लम्पट भूलगई गति पलहुलगैना। अरब-रातमिलबेकोनिशिदिन मिलेई रहत मानोंकबहुमिलेना॥भगवत रसिक रसिक की बातें रसिकबिना कोउसमझि सकैना १३॥ रागखेमटा--श्रीप्यारीकोवचन ॥ प्रीतमतुम मोद्दगबसतुहो। कहाभोरे से ह्वै पूछतिहौ कै चतुराईकर जो हँसतहो॥ लीजेपरख स्वरूप आपनो पुतरिनमें तुमहीं जो लसतुहो। वृन्दाबनहित रूपरसिक तुम कुंज लडावतही यहुलसतुहो १४॥ रागखेमटा--श्रीठाकुरजी बचन॥ तुवमुखकमलप्यारी नैनअलिमेरे। पलक न लगतपलक बिनु देखे अरबरात अति फिरत न फेरे। पानकरत मकरन्द रूप रसि भूलि नहीं फिरि इत उत हेरे॥ भगवत रसिक भये मतवारे घूमत रहत छके मदतेरे १५॥ रागदेश--सखीबचन॥ युगल छबि आज अनूपबनी। गोरे श्याम सांवरी राधा नख शिख द्युति-

का कनी खंजन नयन मैनमदखंजन अंजनरेख अनी॥ ललित किशोरी लाल रसिकवर मृदुमुसक्यानिघनी १६॥ रागबिलावल॥ आज इनदोउनपै बलिजैये। रोम रोम सों छबि बरषतहै निरखत नैनसिरैये॥ रूपरास मृदुहास ललित मुख उपमादेत लजैये। नारायण या गौरश्यामको हिये निकुंज बसैये १७॥ दोहा॥ युगल किशोर स्वरूपवर वृन्दाबन रसखान। नव दुलहिन दूलहिसदा राधा श्याम सुजान १८॥ सोरठा॥ दूलह दुलहिन चार माड़व वृन्दा बिपिनको। गावत नित्य बिहार शेशमहेश गणेशबिधि १९॥

इतिवेनी गूंथनलीला सम्पूर्णम्

इतिश्रीराधाकृष्णरासलीलापरमानन्दसंग्रहीतप्रथमखंडपूर्वार्द्धभागसम्पूर्णम्

मुंशीनवल किशोर (सी, आई) के छापेखाने लखनऊमें छपी
जनवरी सन् १८९३ ई०